अलेक्सेई तोलस्तोय

निकीता का बचपन



अलेक्सेई तोलस्तोय

निकीता का बचपन

प्रगति प्रकाशन
मास्को

АЛЕКСЕЙ ТОЛСТОЙ
ДЕТСТВО НИКИТЫ
На языке хинди

अनुवादक : मदन लाल 'मधु'

चित्रकार : व० कानाशेविच

अनुक्रम

पृष्ठ

बेटे निकीता अलेक्सेयेविच
तोलस्तोय को
सस्नेह समर्पित।

लेखक

धूप नहाई सुबह

निकीता ने जागते हुए गहरी सांस ली और पलकें खोलीं। पाले ने खिड़कियों के शीशों पर तरह-तरह के बेल-बूटे, रुपहले सितारे और पंजों से मिलते-जुलते अजीब-से पत्ते बना दिये थे। इनके बीच से सूर्य की किरणें छन रही थीं। कमरे में फैला हुआ प्रकाश रुपहला था, बर्फ़ जैसा। हाथ-मुंह धोने की चिलमची से धूप का एक धव्वा-सा दीवार पर प्रतिबिम्बित हो रहा था, थरथराता और कांपता हुआ।

आंख खुलते ही निकीता को बढ़ई पख़ोम के वे शब्द याद हो आये जो उसने पिछली शाम को कहे थे। उसने कहा था –

"मैं इसे ख़ूब अच्छी तरह से चिकना बना दूंगा। तुम सुबह उठकर इस पर सवार होना और चल देना।"

पख़ोम काना और चेचकरू देहाती था। पिछली शाम उसने निकीता के विशेष अनुरोध पर उसके लिये स्लेज (बर्फ़ पर फिसलनेवाली बिना पहियों की गाड़ी) तैयार की थी। उसे इस तरह बनाया गया था –

पख़ोम ने बग्घीख़ाने में लकड़ी की मुड़ी-मुड़ाई गन्धयुक्त छीलन के बीच बढ़ई के ठीहे पर काम करते हुए दो तख़्तों और चार पायों को रन्दा फेरकर मुलायम किया। नीचेवाले तख़्ते का सिरा टेढ़ा काट दिया ताकि वह बर्फ़ में न धंसे। पायों को सिरों पर गोल कर दिया। ऊपरवाले तख़्ते को दायें-बायें थोड़ा-सा टेढ़ा काट दिया ताकि टांगें लटकाकर बैठने में सुभीता रहे। नीचेवाले तख़्ते पर गोबर का लेप किया और फिर स्लेज को पाले में रखकर उसे तीन बार पानी से तर-ब-तर किया। इस तरह नीचेवाला तख़्ता शीशे के समान हो गया। स्लेज को घसीटने के लिये ऊपरवाले तख़्ते पर रस्सी बांध दी। पहाड़ी से नीचे फिसलते समय इसी रस्सी से स्लेज को नियन्त्रित किया जा सकता था।

अब बिल्कुल तैयार स्लेज दरवाज़े के पास रखी हुई होगी। पख़ोम बात का धनी था। उसका कहना था, "मेरे वचन को क़ानून समझो। अगर कुछ कह दिया तो वह अवश्य पूरा होगा।"

निकीता पलंग के सिरे पर बैठा हुआ आहट ले रहा था। घर में एकदम सन्नाटा था। इसका मतलब था कि अभी और कोई नहीं जागा था। अगर मैं मुंह-हाथ न धोऊं, दांत साफ़ न करूं और झटपट कपड़े पहन लूं, तो फ़ौरन पिछले दरवाज़े से आंगन में जा सकता हूं। आंगन से नदी पर जा पहुंचूंगा। वहां ढालू तटों पर बर्फ़ ही बर्फ़ है – वहां स्लेज पर बैठकर यह जा, वह जा...

निकीता पलंग से उठा और धूप से गर्माये हुए फ़र्श के चौकों पर दबे पांव चलने लगा...

इसी समय दरवाज़ा थोड़ा-सा खुला। लाल बालोंवाले एक व्यक्ति ने अन्दर झांका। यह व्यक्ति चश्मा लगाये था, उसकी लाल भौंहें हिल-डुल रही थीं और उसकी चमकती हुई लाल दाढ़ी थी। इस व्यक्ति ने आंख मारी और कहा –

"जाग गये, शैतान?"

अर्कादी इवानोविच

लाल दाढ़ीवाला यह व्यक्ति था अर्कादी इवानोविच, निकीता का शिक्षक। अर्कादी इवानोविच को पिछली शाम ही निकीता के मंसूबे की गन्ध मिल गई थी और इसलिये वे जान-बूझकर ही जल्दी जाग गये थे। बहुत ही फुर्तीले और होशियार थे ये अर्कादी इवानोविच। वे मुस्कराते हुए निकीता के कमरे में आये, खिड़की के पास रुके, उन्होंने शीशे पर सांस छोड़ी और जब शीशा साफ़ हो गया तो अपना चश्मा ठीक किया और आंगन में नज़र दौड़ाई।

"बाहर बड़ी शानदार स्लेज खड़ी है," उन्होंने कहा।

निकीता ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने केवल नाक-भौंह सिकोड़ी। अब उसे ढंग से कपड़े पहनने, दांत साफ़ करने पड़े और न केवल मुंह ही, बल्कि कान और गर्दन भी धोनी पड़ी। इसके बाद अर्कादी इवानोविच ने निकीता के कंधे पर हाथ रखा और उसे खाने के कमरे में ले गये। खाने की मेज़ पर समोवार के क़रीब उसकी मां सलेटी रंग का गर्म फ़्राक पहने बैठी थी। उसने निकीता का चेहरा अपने हाथों में साधा, अपनी निर्मल-उजली आंखों से निकीता की आंखों में झांका और उसका मुंह चूमा –

"निकीता, तुम्हें नींद तो ख़ूब अच्छी तरह आयी न?"

इसके बाद उसने अर्कादी इवानोविच की ओर हाथ बढ़ाया और स्नेहपूर्वक पूछा –

"आपको कैसी नींद आई, अर्कादी इवानोविच?"

"नींद तो ख़ैर मुझे अच्छी ही आई," अपनी लाल मूंछों के बीच अनबूझ-सी मुस्कान लाते हुए उन्होंने कहा। वे मेज़ के गिर्द बैठ गये, उन्होंने चाय में क्रीम डाली, मुंह में शकर

का टुकड़ा रखा, उसे सफ़ेद दांतों से दबाया और ऐनक के बीच से निकीता को आंख मारी।

अर्कादी इवानोविच कुछ इस ढंग के आदमी थे कि बर्दाश्त से बाहर – हमेशा हंसी-मज़ाक़ करते रहते, आंख मारते, कभी कोई बात सीधे-सीधे न कहते, पहेलियां बुझवाते रहते। मिसाल के तौर पर निकीता की मां ने तो सीधा-सा सवाल पूछा था – "आपको कैसी नींद आई?" मगर उन्होंने जवाब दिया – "नींद तो ख़ैर अच्छी ही आई," जिसका मतलब यह था कि – "निकीता नाश्ता और पढ़ाई छोड़कर नदी पर भाग जाना चाहता था, कि पिछली शाम उसने जर्मन भाषा का अनुवाद करने के बजाय दो घंटे पख़ोम के ठीहे के पास बैठे रहकर बिताये थे।"

यह सच है कि अर्कादी इवानोविच शिकायत कभी नहीं करते थे, मगर दूसरी ओर निकीता को हमेशा चौकन्ने रहना पड़ता था।

नाश्ता करते हुए मां ने कहा कि रात को बहुत ज़ोर का पाला पड़ा है और ड्योढ़ी में रखे पीपे का पानी जम गया है। इसलिये जब वे बाहर घूमने जायें तो निकीता कज़्ज़ाकी हुड पहन ले।

"मां, सच कहता हूं कि बेहद गर्मी है," निकीता ने कहा।

"मैं तुम्हारी मिन्नत करती हूं, तुम जरूर हुड पहन लेना।"

"वह मेरे गालों पर चुभता है। उसे पहन कर मेरा दम घुटने लगता है। उसे पहनने पर मुझे और भी ज्यादा बुरी तरह ठंड लग जायेगी।"

मां ने चुपचाप अर्कादी इवानोविच और फिर निकीता की ओर देखा। उसने कांपती हुई आवाज़ में कहा –

"न जाने तुम कैसे हो गये हो! क्या मजाल कि कोई बात मानो!"

"चलो, चलकर पढ़ाई करो," अर्कादी इवानोविच ने कहा। वे झटके के साथ खड़े हुए और उन्होंने ऐसे झटपट अपने हाथ साफ़ किये मानो दुनिया में हिसाब के सवाल हल करने और उन मुहावरों तथा कहावतों को लिखवाने से बढ़कर कोई ख़ुशी ही न हो जिनसे नींद आने लगे।

वे दोनों एक बड़े-से सफ़ेद ख़ाली कमरे में गये जहां दीवार पर पृथ्वी के दो गोलार्द्धों का नक़्शा लटका हुआ था। निकीता उस मेज़ के गिर्द बैठ गया जहां जगह-जगह स्याही के धब्बे लगे हुए थे और उसने टेढ़े-मेढ़े चेहरे बना दिये थे। अर्कादी इवानोविच ने हिसाब की किताब खोली।

"हां, तो," उन्होंने रंग में आते हुए कहा। "कहां रुके थे हम?" इतना कहकर उन्होंने बढ़िया नोकवाली पेंसिल से सवाल पर निशान लगाया।

"किसी बज़ाज़ ने ३ रूबल ६४ कोपेक फ़ी गज़ के हिसाब से कुछ गज नीला और कुछ काला कपड़ा बेचा..." निकीता ने सवाल पढ़ा। हमेशा की भांति हिसाब की किताब में से निकलकर यह बज़ाज़ उसके सामने आ खड़ा हुआ। वह धूल-मिट्टी से लथपथ लम्बा-सा फ़ाककोट पहने था। उसका चेहरा ज़र्द और उदास था। वह ऊब पैदा करनेवाला दुबला-पतला और मुर-

झाया-सा व्यक्ति था। उसकी दूकान गुफा की तरह अंधकारपूर्ण थी। धूल से अटे हुए तख़्ते पर कपड़े के दो टुकड़े पड़े थे। बज़ाज़ ने उनकी ओर अपने हडीले हाथ बढ़ाये, तख़्ते से कपड़े के टुकड़े उठाये और उदास तथा बुझी-बुझी आंखों से निकीता की ओर देखा।

"हां, तो तुम्हारा क्या ख़्याल है, निकीता?" अर्कादी इवानोविच ने पूछा। "बज़ाज़ ने कुल अठारह गज़ कपड़ा बेचा। कितना नीला और कितना काला कपड़ा बेचा गया?"

निकीता ने त्योरी चढ़ाई, बज़ाज़ एकदम सिकुड़ गया, कपड़े के दोनों टुकड़े दीवार पर पहुंचे और धूल में लिपट गये...

"छि, छि, छि!" अर्कादी इवानोविच ने कहा और सवाल समझाने लगे। उन्होंने कुछ आंकड़े लिखे और उन्हें गुना तथा विभाजित करते हुए दोहराया –

"हासिल आया एक, हासिल आये दो।" निकीता को ऐसे प्रतीत हुआ मानो गुना करते समय "हासिल आया एक" और "हासिल आये दो", झटपट काग़ज़ से उछलकर उसके दिमाग़ में जा पहुंचे और वहां गुदगुदी करने लगे ताकि वह उन्हें भूल न जाये। उसे यह चीज़ बहुत अखरी। और पढ़ाई के कमरे की पाले से जमी हुई दोनों खिड़कियों पर चमकता हुआ सूरज मानो उसे लगातार कह रहा था – "चलो नदी पर चलें।"

आख़िर गणित का पाठ ख़त्म हुआ और इमला शुरू हुई। अर्कादी इवानोविच दीवार के पास टहलते हुए एक विशेष, अलसाये-से अन्दाज़ में, जिसका लोग बातचीत में कभी इस्तेमाल नहीं करते, इमला लिखवाने लगे।

"...पृथ्वी पर सांस लेनेवाले सभी जानवर निरन्तर श्रम करते हैं, हमेशा काम में जुटे रहते हैं। छात्र आज्ञाकारी था और मेहनती भी..."

जीभ का सिरा बाहर निकालकर निकीता इमला लिख रहा था, उसकी क़लम चीं-चर्र कर रही थी, छींटे डाल रही थी।

अचानक धम से घर का दरवाज़ा खुला और बरामदे में पाले से ठिठुरे हुए नमदे के जूतों की आहट सुनाई दी। अर्कादी इवानोविच ने किताब नीची की और उस तरफ़ कान लगा दिये। नज़दीक से ही मां की ख़ुशी-भरी आवाज़ सुनाई दी –

"क्या डाक लाये हैं?"

निकीता ने अपना सिर कापी में बिल्कुल गड़ा ही दिया ताकि अपनी हंसी को छिपा सके।

"आज्ञाकारी और मेहनती," उसने मानो गाते हुए ये शब्द दोहराये। "'मेहनती', मैंने लिख लिया है।"

अर्कादी इवानोविच ने अपना चश्मा ठीक किया।

"हां तो, पृथ्वी पर सांस लेनेवाले सभी जानवर, आज्ञाकारी और मेहनती हैं... तुम्हें हंसी क्यों आ रही है?... धब्बा डाल दिया? .. ख़ैर, अब हम थोड़ी देर के लिये विराम करेंगे।"

अर्कादी इवानोविच ने होंठ दबाये और पेंसिल जैसी अपनी लम्बी उंगली दिखाते हुए निकीता को धमकाया और झटपट पढ़ाई के कमरे से बाहर चले गये। बरामदे में उन्होंने मां से पूछा –

"अलेक्सान्द्रा लेग्रोन्त्येव्ना, मेरे नाम भी कोई ख़त है क्या?"

निकीता ने अनुमान लगा लिया कि अर्कादी इवानोविच को किसके ख़त का इन्तज़ार है। मगर अब देर करना ठीक नहीं था। निकीता ने भेड़ की खाल की जाकेट पहनी, नमदे के जूते चढ़ाये, फ़र की टोपी ओढ़ी, कज़्ज़ाकी हुड को अलमारी के नीचे घुसेड़ा ताकि वह किसी के हाथ न लग सके और बाहर ओसारे में भाग गया।

बर्फ़ के ढेर

चौड़े अहाते में चमकती हुई सफ़ेद और नर्म-नर्म बर्फ़ की चादर बिछी हुई थी। इन्सानों के पैरों और अधिकतर कुत्तों के पंजों के नीले और गहरे चिह्न दिखाई दे रहे थे। हवा पाले से ठिठुरी-ठिठुरायी और हल्की-हल्की थी, नाक में खुजली करती और गालों पर सुइयां-सी चुभोती हुई। बर्फ़ की सफ़ेद टोपी ओढ़े बग्घीख़ाना, छानियां और बाड़े ज़मीन से बिल्कुल सटे हुए थे। ऐसे लगता था मानो बर्फ़ में से पैदा हुए हों। घर से लेकर पूरे अहाते तक स्लेजों के निशान शीशे की भांति चमक रहे थे।

निकीता ओसारे की बर्फ़ से ढकी और कचकचाती पैड़ियों पर से भागता हुआ नीचे उतरा। नीचे देवदार की लकड़ी की बनी हुई नई स्लेज खड़ी थी जिसके साथ बटी हुई रस्सी बंधी थी। निकीता ने उसकी जांच की – हां, मज़बूत है! उसने उस पर बैठकर आज़माइश की, बढ़िया फिसलती है। उसने स्लेज को कंधे पर लादा, फावड़ा भी ले लिया कि कहीं ज़रूरत पड़ जाये और बाग़ के पासवाले संकरे रास्ते से बांध की ओर भाग चला। वहां आकाश को छूते हुए बड़े-बड़े और चौड़े-चौड़े विल्लो वृक्ष खड़े थे, पाले से ढके हुए। उनकी हर शाखा मानो बर्फ़ की बनी हुई थी।

निकीता नदी की ओर दायें को मुड़ गया। उसने दूसरों के पद-चिह्नों पर चलने की कोशिश की। जहां बर्फ़ अछूती और साफ़ थी, वहां निकीता पीछे की ओर चलता ताकि अर्कादी इवानोविच की आंखों में धूल झोंक सके।

पिछले कुछ दिनों में चागरा नदी के खड़े तटों पर फूली-फूली बर्फ़ के बड़े-बड़े ढेर जमा हो गये थे। कहीं-कहीं तो बर्फ़ के ढेर जीभ-सी निकाले हुए नदी के ऊपर लटके हुए थे। मगर इस जीभ पर पैर पड़ते ही वह बर्फ़ कड़कड़ाकर टूट जायेगी, नीचे को धसकेगी और बर्फ़ का टीला सफ़ेद बर्फ़ीली धूल का बादल उड़ाता हुआ नीचे बैठ जायेगा।

नदी दायीं ओर को सफ़ेद और वीरान मैदानों के बीच नीली छाया-सी बनाती हुई मुड़ती थी। बायीं ओर को ऊंचे तट की ढाल पर सोस्नोव्का गांव की काली-काली झोंपड़ियां थीं और कुओं की बल्लियां हिल-डुल रही थीं। छतों के बहुत ऊपर धुएं के नीले-नीले बादल लहराते और हवा में घुलमिल जाते। बर्फ़ से ढके खड़े तट पर राख के पीले धब्बे और धारियां बनी हुई थीं। यह राख उसी सुबह गृहिणियों ने चूल्हों से निकाल कर बाहर फेंकी थी। वहां छोटी-छोटी

आकृतियां हिलती-डुलती नज़र आ रही थीं। ये गांव के 'हमारी ओर' रहनेवाले लड़के थे। आगे, जहां नदी में ख़म पड़ता था, मुश्किल से ही दिखाई देते हुए लड़कों की "कोंचान" टोली जा रही थी। बहुत ही ख़तरनाक टोली थी यह।

निकीता ने फावड़ा फेंका, स्लेज को बर्फ़ पर टिकाया, उसपर बैठा, रस्सी को कसकर हाथ पर लपेटा और पैरों से एक-दो बार स्लेज को आगे की ओर धकेला। तब स्लेज ख़ुद-ब-ख़ुद ही फिसलने लगी। निकीता के कानों में हवा की सीटियां बजने लगीं और दोनों ओर से बर्फ़ीली धूल उड़ने लगी। वह तीर की तरह नीचे, और अधिक नीचे, चला जा रहा था। अचानक उस जगह, जहां नदी पर पहुंचकर बर्फ़ का अन्त हो गया था, स्लेज हवा में उड़ती-सी नदी की जमी हुई सतह पर जा पहुंची। वह धीमी, और अधिक धीमी हुई और फिर रुक गई।

निकीता हंस दिया, स्लेज से नीचे उतरा और घुटने-घुटने तक बर्फ़ में चलता हुआ स्लेज को पहाड़ी के ऊपर खींच ले चला। जब वह तट पर पहुंचा तो उसे अपने क़रीब ही बर्फ़ से ढके मैदान में अर्कादी इवानोविच की काली-सी आकृति दिखाई दी। उसे यह आकृति इन्सान के क़द से बड़ी प्रतीत हुई। निकीता ने फावड़ा उठाया, झटपट स्लेज पर बैठा और तेज़ी से नीचे की ओर लुढ़क गया। फिर वह जमी हुई सतह पर भागता हुआ उस जगह जा पहुंचा जहां बर्फ़ के ढेर जीभ की भांति नदी के ऊपर लटके हुए थे।

बर्फ़ की जीभ के नीचे पहुंचकर निकीता ने गुफा बनानी शुरू की। यह तो उसके लिये बायें हाथ का खेल था, फावड़े से बर्फ़ काटने में देर ही कौन-सी लगती है! गुफा बनाकर निकीता उसमें घुस गया, उसने स्लेज भी अन्दर घसीट ली और भीतर से गुफा के मुंह पर बर्फ़ के टुकड़े रखने लगा। जब दीवार बन गई तो गुफा में हल्की-हल्की नीली रोशनी रह गई। वहां बड़ा आराम और ख़ूब मजा था।

निकीता बैठा हुआ सोच रहा था कि किसी भी लड़के के पास ऐसी अद्भुत स्लेज नहीं है। उसने जेब से क़लमतराश चाक़ू निकाला और ऊपरवाले तख़्ते पर "वेवित" नाम खोद दिया।

"निकीता! तुम कहां जा मरे?" उसे अर्कादी इवानोविच की आवाज़ सुनाई दी। निकीता ने चाक़ू जेब में डाला और बर्फ़ के टुकड़ों के बीच वाली सेंध में से झांका। अर्कादी इवानोविच नीचे बर्फ़ पर खड़े इधर-उधर देख रहे थे।

"कहां हो रे तुम शैतान?"

अर्कादी इवानोविच ने चश्मा ठीक किया और गुफा की ओर बढ़े, मगर उसी क्षण कमर तक बर्फ़ में धसक गये।

"अपने आप ही निकल आओ, वरना मैं तुम्हें वहां से निकाल तो लूंगा ही।"

निकीता चुप रहा। अर्कादी इवानोविच ने ऊपर उठने की कोशिश की, मगर फिर बर्फ़ में धसक गये। उन्होंने जेब में हाथ डाले और कहा –

"नहीं निकलना चाहते, तो न सही। रहो यहीं पर। मगर बात यह है कि तुम्हारी मां के पास समारा से ख़त आया है... ख़ैर, मैं तो जा रहा हूं..."

"कैसा ख़त ग्राया है?" निकीता ने पूछा।

"ग्राह! तो तुम यहां ही हो।"

"बताइये तो, किसका ख़त ग्राया है?"

"उन लोगों का जो त्योहार के मौक़े पर यहां ग्रा रहे हैं।"

इसी समय बर्फ़ के टुकड़े इधर-उधर बिखरने लगे। निकीता ने गुफा में से सिर बाहर निकाला। ग्रर्कादी इवानोविच खिलखिलाकर हंस पड़े।

रहस्यमय पत्र

दोपहार के खाने के समय मां ने ग्राख़िर यह पत्र पढ़कर सुनाया। ख़त निकीता के पिता का था।

"प्यारी साशा, मैंने वह चीज़ ख़रीद ली है जो हमने एक लड़के को उपहारस्वरूप देने का निर्णय किया था। वैसे वह लड़का इस लायक़ तो नहीं है कि उसे यह शानदार तोहफ़ा दिया जाये," इन शब्दों को सुनकर ग्रर्कादी इवानोविच बुरी तरह ग्रांख झपकाने लगे। "चीज़ वह ख़ासी बड़ी है ग्रौर इसे घर तक ले जाने के लिये एक ग्रौर स्लेज ले ग्राना। हां, एक ग्रौर भी ख़बर है – त्योहार के मौक़े पर ग्रान्ना ग्रपोल्लोसोव्ना बाबकिना ग्रपने बच्चों के साथ हमारे यहां ग्रा रही है..."

"ग्रागे ग्रौर कुछ दिलचस्प नहीं है," मां ने कहा ग्रौर निकीता के ग्रन्य सभी प्रश्नों के जवाब में ग्रांखें मूंदे ग्रौर सिर हिलाते हुए सिर्फ़ इतना ही कहा – "मैं कुछ नहीं जानती।"

ग्रर्कादी इवानोविच भी चुप रहे, हाथ झटकते हुए यही कहते रहे – "मुझे कुछ मालूम नहीं।" वैसे भी ग्रर्कादी इवानोविच उस दिन हर समय ही बहुत ख़ुश रहे, बेध्यान से ग़लत-मलत जवाब देते रहे, बार-बार जेब से कोई ख़त निकालते, उसकी कुछ पंक्तियां पढ़ते ग्रौर होंठ सिकोड़ते। ज़ाहिर था कि उनका भी कोई ग्रपना राज़ था।

झुटपुटा होने पर निकीता ग्रहाता लांघकर नौकरों के क्वार्टरों की ग्रोर गया। वहां पाले से जमी हुई दो खिड़कियों से बर्फ़ पर नीली-नीली सी रोशनी पड़ रही थी। नौकर खाना खा रहे थे। निकीता ने तीन बार सीटी बजाई। घड़ी भर बाद उसका सब से पक्का दोस्त मीश्का कोर्याशोनोक बाहर ग्राया, नमदे के बड़े-बड़े जूते पहने, नंगे सिर ग्रौर कन्धों पर फ़र की जाकेट डाले। यहीं, नौकरों के क्वार्टरों की बग़ल में खड़े रहकर निकीता ने फुसफुसाते हुए ग्रपने दोस्त से ख़त की चर्चा की ग्रौर पूछा कि ऐसी कौन-सी चीज़ नगर से लाई जा रही है।

ठण्ड से मीश्का कोर्याशोनोक के दांत बज रहे थे। उसने कहा –

"ज़रूर कोई बहुत ही बड़ी चीज़ होगी। ग्रगर ऐसा न हो तो मेरी ग्रांखें फोड़ डालना। मैं भाग चला, ठंड लग रही है। सुनो तो, कल हम कोंचान टोली के लड़कों की पिटाई करने गांव जा रहे हैं। तुम चलोगे न?"

"हां, चलूंगा।"

निकीता घर लौटा और 'सिरकटा घुड़सवार' किताब लेकर पढ़ने बैठ गया।

बड़े लैम्प के नीचे गोल मेज़ के गिर्द मां और अर्कादी इवानोविच अपनी-अपनी किताब लिये बैठे पढ़ रहे थे। अलावघर के पीछे झींगुर झीं-झीं कर रहा था। साथवाले अंधेरे कमरे में फ़र्श के तख़्ते चटक रहे थे।

सिरकटा घुड़सवार लम्बे-चौड़े मैदान में से सरपट घोड़ा दौड़ाता और ऊंची ऊंची घास को लांघता हुआ चला आ रहा था। झील के ऊपर पूनम का बड़ा-सा गोल लाल चांद चमक रहा था। निकीता ने महसूस किया कि उसकी गुद्दी के बाल हिल रहे हैं। उसने धीरे से गर्दन घुमाई – काली काली खिड़कियों के पीछे उसे धुंधली-सी छाया की झलक मिली। क़सम ख़ुदा की, उसे सिरकटे घुड़सवार की झलक मिली थी। मां ने किताब से सिर उठाते हुए कहा –

"हवा तेज़ हो गई है, लगता है कि बर्फ़ का तूफ़ान आयेगा।"

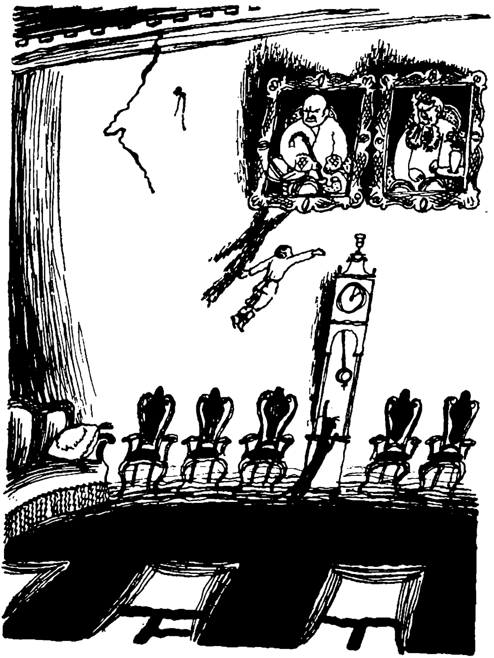
सपना

निकीता ने सपना देखा। वह कई बार यह सपना देख चुका था, हर बार एक ही जैसा।

बैठक का दरवाज़ा धीरे से खुला, किसी भी तरह की चूं-चर्र किये बिना। फ़र्श पर खिड़कियों की नीली-सी छाया पड़ रही थी। स्याह खिड़कियों के पार चांद लटक-सा रहा था – बड़े-से चमकते हुए गोले के समान। निकीता खिड़कियों के बीच रखी हुई ताश खेलने की मेज़ पर चढ़ गया। वहां से उसे यह दृश्य दिखाई दिया –

खड़िया की तरह सफ़ेद सामनेवाली दीवार पर बड़े-से केस में लटकी हुई दीवालघड़ी का इधर-उधर हिलता हुआ पेण्डुलम चांदनी में चमक रहा है। घड़ी के ऊपर एक रोबीले बुज़ुर्ग का फ़्रेम किया हुआ छविचित्र लटक रहा है। बुज़ुर्ग के मुंह में पाइप दबी हुई है। उसकी बग़ल में टोपी और शॉल ओढ़े एक वृद्धा है जो अपने होंठों को दबाये हुए सामने की ओर देख रही है। दीवार के साथ साथ, घड़ी से बैठक के कोने तक धारीदार चार आरामकुर्सियां हत्थे फैलाये हुए अपनी चार-चार टांगों पर टिकी हुई हैं। कोने में नीची और टेढ़ी-टेढ़ी टांगोंवाला सोफ़ा रखा हुआ है। इन कुर्सियों की न तो आंखें हैं और न ही मुंह। फिर भी वे बिना हिले-डुले चांद पर नजरें टिकाये हुए हैं।

सोफ़े की झालर के नीचे से एक बिल्ला बाहर निकलता है। वह अपनी कमर झुकाकर फैलाता है, उछलकर सोफ़े पर चढ़ता है और बढ़ता चला जाता है, काला और लंबा-सा। वह दुम झुकाये चला जा रहा है। सोफ़े से वह कुर्सी पर कूदता है, दीवार के साथ रखी कुर्सियों पर से चलता और झुककर हत्थों के नीचे से निकलता हुआ बढ़ता जाता है। आख़िर तक जाकर वह फ़र्श पर कूदता है और घड़ी के सामने तथा खिड़कियों की ओर पीठ करके बैठ जाता है। पेण्डुलम हिल-डुल रहा है, बूढ़ा-बुढ़िया ग़ुस्से से बिल्ले को ताक रहे हैं। अब बिल्ला पिछली टांगों



पर खड़ा होता है, वह एक पंजा घड़ी के केस पर टिकाता है और दूसरे से पेण्डुलम को हिलने-डुलने से रोकने की कोशिश करने लगता है। केस में शीशा तो है ही नहीं...बस पेण्डुलम उसके पंजे में आया कि आया।

काश, वह चीख़ सकता! मगर निकीता तो उंगली तक नहीं हिला पा रहा, हिल-डुल भी नहीं सकता, डर ने उसे जकड़ लिया है। भयानक, बहुत भयानक दृश्य है और जल्द ही अधिक भयानक हो जायेगा...

चांदनी लम्बे-लम्बे चतुर्भुजों के रूप में फ़र्श पर लेटी हुई है। बैठक में एकदम सन्नाटा छा गया है, हर चीज़ ने दम साध लिया है। बिल्ला फैलता जा रहा है, उसने अपना सिर झुकाकर आगे की ओर बढ़ाया है, उसके कान तन गये हैं और वह पंजे से पेण्डुलम को पकड़ने की कोशिश करने लगा है। निकीता जानता है – अगर बिल्ले ने पेण्डुलम को छू लिया तो वह रुक जायेगा और उसी क्षण सभी कुछ लड़खड़ाकर, टुकड़े टुकड़े होकर भड़भड़ाना हुआ नीचे जा गिरेगा और धूल की तरह ग़ायब हो जायेगा। तब न तो दीवारें ही रहेंगी, न बैठक और न चांदनी ही।

डर के मारे निकीता के सिर में शीशों के तेज़-से टुकड़े छनछनाने लगने हैं, उसके सारे बदन पर चींटियां-सी चलने लगती हैं... निकीता अपना सारा कस-बल बटोरता है, हताशा से चीख़ता है और फ़र्श पर ढह पड़ता है। फ़र्श अचानक नीचे को धसक जाता है। निकीता उठकर बैठता है। वह अपने इर्दगिर्द नज़र दौड़ाता है। उसे पाले से जमी हुई कमरे की दो खिड़कियां दिखाई देती हैं और उनके शीशों के बीच से नज़र आता है, साधारण से बहुत बड़ा और अजीब-सा चांद। फ़र्श पर एक गमला रखा है और उसके घुटनों तक के जूते पड़े हुए हैं।

"हे भगवान, हे भगवान!" निकीता ने झटपट अपने ऊपर सलीब बनाई और तकिये के नीचे सिर घुसेड़ दिया। तकिया गर्म-गर्म और नर्म-नर्म था, सपनों से ठसाठस भरा हुआ।

फिर जैसे ही उसकी आंख लगी कि उसने अपने को उसी बैठक में, उसी मेज़ पर खड़े देखा। पेण्डुलम चांदनी में हिल-डुल रहा था, बूढ़ा और बुढ़िया ग़ुस्से से उसे घूर रहे थे। फिर सोफ़े के नीचे से बिल्ले का सिर बाहर आ रहा था। मगर इस बार निकीता ने अपनी बाहें फैला लीं, वह मेज़ से तनिक-सा टकरा कर नीचे कूद गया तथा अपनी टांगों को जल्दी-जल्दी हिलाता हुआ फ़र्श के ऊपर या तो उड़ने या तैरने-सा लगा। बड़ा अनूठा, बहुत ही असाधारण आनन्द मिल रहा था उसे कमरे में उड़ते हुए। जब उसके पैर फ़र्श को छूने लगते तो वह अपने हाथों को हिलाना शुरू कर देता, धीरे-धीरे छत की ओर ऊपर को उठता और टेढ़े-मेढ़े ढंग से दीवार के साथ-साथ उड़ने लगता। उसकी नाक के बिल्कुल निकट ही प्लास्टर की कार्निस थी और उसपर भूरी-भूरी और प्यारी-प्यारी धूल की तह जमी हुई थी। बहुत ही सोंधी-सोंधी गंध थी उसकी। इसके बाद उसे दीवार पर जानी-पहचानी दरार नज़र आयी, नक़्शे पर बनी हुई वोल्गा नदी जैसी। फिर उसकी आंखों के सामने उभरी एक बहुत ही पुरानी और बड़ी अजीब-सी कील जिसके साथ रस्सी का एक टुकड़ा बंधा हुआ था और उसके साथ ढेरों मरी हुई मक्खियां चिपकी हुई थीं।

निकीता ने दीवार पर पैर से ठोकर लगायी ग्रौर कमरे में से धीरे-धीरे उड़ता हुग्रा घड़ी की तरफ़ बढ़ गया। घड़ी के केस के ऊपर कांसे का छोटा-सा फूलदान रखा था। फूलदान में, उसके तल में कोई चीज़ पड़ी हुई थी जो निकीता को नज़र नहीं ग्रा रही थी। ग्रचानक किसी ने निकीता के कान में फुसफुसाकर कहा –

"जो कुछ उसमें पड़ा है, ले लो।"

निकीता घड़ी की ग्रोर उड़ा ग्रौर उसने फूलदान में हाथ घुसेड़ा। मगर इसी क्षण दीवार पर लटकी हुई तसवीर में से जीती-जागती बुढ़िया बाहर निकली ग्रौर उसने ग्रपने हड़ीले हाथों से निकीता का सिर पकड़ लिया। निकीता ने सिर छुड़ा लिया, मगर इसी समय दूसरी तसवीर से बूढ़ा बाहर निकला। उसने ग्रपनी लम्बी-सी पाइप हिलायी ग्रौर ऐसे ज़ोर से निकीता की पीठ पर धौल जमायी कि वह फ़र्श पर जा गिरा। निकीता ने गहरी सांस ली ग्रौर उसकी ग्रांख खुल गयी।

पाले द्वारा बनाये गये बेल-बूटों के बीच से सूरज की किरणें छन रही थीं, चमक रही थीं। ग्रर्कादी इवानोविच पलंग के पास खड़े ग्रौर निकीता का कंधा हिलाते हुए कह रहे थे –

"उठो, उठो, नौ बज गये।"

निकीता जब ग्रांखें मलने के बाद उठकर पलंग पर बैठ गया तो ग्रर्कादी इवानोविच ने कई बार ग्रांख झपकाई ग्रौर ख़ुशी से हाथ मलते हुए कहा –

"मेरे दोस्त, ग्राज पढ़ाई नहीं होगी।"

"क्यों?"

"क्योंकि, 'क्यों' के ग्रन्त में ग्राता है 'यों'। ग्रब तुम दो हफ़्तों तक जीभ निकाले भागते फिर सकते हो। चलो, उठो।"

निकीता उछलकर पलंग से नीचे उतरा ग्रौर सुहाने फ़र्श पर नाचता हुग्रा चिल्ला उठा –

"क्रिसमस की छुट्टियां!"

निकीता यह बिल्कुल ही भूल गया था कि ग्राज से हंसी-ख़ुशी के दो लम्बे सप्ताह शुरू हो रहे हैं। ग्रर्कादी इवानोविच के सामने नाचते हुए वह एक चीज़ ग्रौर भी भूल गया – ग्रपना सपना, घड़ी के ऊपर रखा हुग्रा फूलदान ग्रौर कान में ग्राकर फुसफुसानेवाली वह ग्रावाज़ – "जो कुछ उसमें पड़ा है, ले लो।"

पुराना घर

चौदह दिन ग्रब निकीता के पूरी तरह ग्रपने थे। जो मनमाने, वही करे। इससे कुछ हद तक तो उसे ऊब भी महसूस होने लगी।

सुबह का नाश्ता करते हुए उसने चाय, दूध, डबलरोटी ग्रौर मुरब्बे को मिलाकर हलवा-सा बना लिया ग्रौर इतना पेट भर कर खाया कि कुछ देर तक उसे चुपचाप बैठे रहना पड़ा।

2–1765

समोवार में झलकती हुई अपनी परछाईं देख वह देर तक यह सोचकर हैरान होता रहा कि मेरा इतना लम्बा चेहरा है, एकदम समोवार के बराबर और बहुत ही बदसूरत। फिर वह यह सोचने लगा कि अगर मैं चमची लेकर उसके दो टुकड़े कर दूं तो एक टुकड़े की नाव बन सकती है और दूसरी की कुरेदनी—कुछ न कुछ कुरेदने के लिए।

आख़िर मां ने कहा—"जाओ, अब बाहर जाकर घूमो।"

निकीता ने इत्मीनान से कपड़े पहने और प्लास्टर की हुई दीवार को उंगली से छूता हुआ लम्बे बरामदे में चल दिया जहां अलावघरों की प्यारी-प्यारी और राहत देनेवाली गंध आ रही थी। इस बरामदे के बायीं ओर, घर के दक्षिण में, जाड़े के कमरे थे, गर्माये हुए और रिहायशी। बरामदे के दायीं ओर, और घर के उत्तर में गर्मियों के आधे ख़ाली पड़े हुए पांच कमरे थे और इनके मध्य में बैठक थी। यहां टाइलों के बड़े-बड़े अलावघर थे जो सप्ताह में एकबार ही गर्माये जाते थे, मलमल से ढके झाड़-फ़ानूस लटके हुए थे और फ़र्श पर ढेर सारे सेब पड़े थे—कुछ कुछ सड़े हुए। घर के गर्मीवाले अर्ध-भाग में उनकी मीठी-मीठी गन्ध फैली हुई थी।

निकीता ने बड़ा ज़ोर लगाकर बलूत की लकड़ी के दोहरे दरवाज़े खोले और दबे पांव ख़ाली कमरों में गया। अर्ध गोलाकार खिड़कियों में से बर्फ़ से ढका हुआ बाग़ नज़र आ रहा था। वृक्ष एकदम शान्त खड़े थे, उनकी बर्फ़ से ढकी हुई शाखाएं झुकी हुई थीं। छज्जे के दोनों ओर ऊंची उगी हुई बकाइन की झाड़ियां बर्फ़ के बोझ से दबी हुई थीं। मैदान में ख़रगोश के पैरों के निशान साफ़ नज़र आ रहे थे। खिड़की के बिल्कुल निकट बड़े-से सिरवाला काला कौआ बैठा था, शैतान-सा लगता हुआ। निकीता ने उंगली से शीशे पर ठक-ठक की। कौआ एक ओर को उछला और शाखाओं पर जमी बर्फ़ को पंखों से नीचे गिराता हुआ उड़ गया।

निकीता कोनेवाले आख़िरी कमरे में पहुंचा। यहां दीवार के साथ धूल से अटी हुई अलमारियां रखी थीं जिनके शीशों में से जिल्दबंधी पुरानी किताबें दिखाई दे रही थीं। टाइलों के अलावघर के ऊपर एक बहुत ही सुन्दर महिला का चित्र लटका हुआ था। वह घुड़सवारी की मख़मली पोशाक और हाथों में दस्ताने पहने थी और एक हाथ में चाबुक ताने थी। निकीता को वह चलती-सी प्रतीत हुई, मानो मुड़ी और अपनी बड़ी-बड़ी और पैनी नज़र वाली आंखों में शरारत भरी चमक लाकर उसने निकीता की ओर देखा।

निकीता सोफ़े पर बैठ गया और हथेली पर ठोड़ी टिकाकर महिला को ताकने लगा। वह ऐसे ही बहुत देर तक बैठा रहकर उसे देखता रह सकता था। अपनी मां के मुंह से उसने अनेक बार यह बात सुनी थी कि इसी महिला के कारण निकीता के परदादा को बड़ी मुसीबतों का मुंह देखना पड़ा था। अभागे परदादा का चित्र भी किताबोंवाली अलमारी के ऊपर लटका हुआ था। हड्डियों का ढांचा सा, तीखी नाक और धंसी हुई आंखें—ऐसा था वह। वह अपने एक हाथ से छाती पर गाउन थामे था और उसकी उंगलियों में जड़ी हुई अंगूठियां चमक रही थीं। उसकी

बग़ल में अध-लिपटा भोजपत्र पड़ा था और पंख की क़लम रखी थी। उसके चेहरे पर अंकित भाव इस बात की गवाही दे रहे थे कि वह बहुत ही अभागा आदमी था।

मां ने निकीता को बताया था कि उसके परदादा आम तौर पर दिन में सोते और रात को पढ़ते-लिखते। झुटपुटा होने पर ही घूमने-फिरने जाते। रात को घर के गिर्द चौकीदार पहरा देते हुए अपनी सोटी बजाते रहते ताकि रात के परिन्दे खिड़कियों के क़रीब उड़ते हुए अपने पंखों की फड़फड़ाहट से परदादा को डरा न दें। कहते हैं कि उन दिनों बाग़ में ऊंची ऊंची और घनी घास उग आई थी। इस कमरे के अलावा सारा घर बन्द पड़ा था, कहीं कोई नहीं रहता था। नौकर-चाकर भाग गये थे। परदादा की हालत ऐसी बुरी थी कि बयान से बाहर।

एक बार हुआ यह कि वे न तो अपने कमरे में मिले, न घर में और न बाग़ में। हफ़्ता भर उनकी लगातार खोज की गई, मगर बेसूद। पांच वर्ष बाद उनके उत्तराधिकारी को साइबेरिया से भेजा हुआ यह अजीब-सा ख़त मिला – "मैंने बुद्धिमत्ता में चैन की खोज की और प्रकृति में विस्मृति पाई।"

इन सभी अजीब घटनाओं का कारण थी घुड़सवारी की पोशाकवाली महिला। निकीता उत्तेजित मन और जिज्ञासा से उसे देख रहा था।

खिड़की के बाहर फिर से कौआ दिखाई दिया। वह शाखा पर बैठा तो कुछ बर्फ़ नीचे गिर गई। उसने अपना सिर झटका, चोंच खोली और कांय-कांय करने लगा। निकीता को डर महसूस हुआ। वह ख़ाली कमरों से निकल भागा और अहाते में पहुंच गया।

कुएं पर

अहाते के बीचोंबीच कुआं था। उसके इर्दगिर्द की बर्फ़ पैरों तले आ आकर जम गई थी, पीली पड़ गई थी। इसी कुएं के पास निकीता ने मीश्का कोर्याशोनोक को बैठे पाया। मीश्का हाथ में पहने हुए चमड़े के दस्ताने के सिरे को पानी में भिगो रहा था।

निकीता ने पूछा – "इसे पानी में क्यों भिगो रहे हो?" मीश्का ने जवाब दिया – "कोंचान टोली के सभी लड़के ऐसा ही करते हैं। इसलिए अब हम भी दस्तानों को पानी में भिगोया करेंगे। ऐसा करने से दस्ताने सख़्त हो जाते हैं और मार-पीट में बढ़िया काम देते हैं। गांव तो चलोगे न?"

"किस वक़्त?"

"बस, खाना खाने के फ़ौरन बाद। मां को कुछ नहीं बताना।"

"मां ने जाने की इजाज़त तो दे दी है, मगर लड़ने-भिड़ने से मना किया है।"

"लड़ने-भिड़ने से मना किया है, इसका क्या मतलब? अगर कोई तुम पर पिल पड़ा, तब? जानते हो, कौन तुम पर झपटेगा? स्त्योप्का कार्नाऊश्किन। वह तुम पर एक धौल जमायेगा और तुम – ज़मीन चाटने लगोगे।"

"स्त्योप्का की बात तो तुम छोड़ो। उससे मैं निपट लूंगा। उसे तो इस कनिष्ठा से नीचे गिरा दूंगा।" इतना कहकर उसने मीश्का को अपनी कनिष्ठा दिखाई।

मीश्का ने उसकी कनिष्ठा की ओर देखा, थूका और खरखरी-सी आवाज़ में कहा—

"स्त्योप्का अपने घूंसे पर जादू-टोना करवा आया है। पिछले हफ़्ते वह नमक और मछली लाने के लिए अपने बाप के साथ ऊतेव्का गांव गया था। वहां उसने अपने घूंसे पर टोना करवा लिया था। अगर मैं झूठ बोलूं, तो मेरी आंखें फूट जायें।"

निकीता सोच में पड़ गया। अच्छा तो यही है कि गांव जाऊं ही नहीं, मगर तब मीश्का मुझे बुज़दिल कहेगा।

"तो यह टोना होता कैसे है?" निकीता ने पूछा।

मीश्का ने फिर थूका—

"अरे, यह तो बड़ी मामूली-सी बात है। सबसे पहले तो कालिख लो, उसे हाथों पर मलो और फिर तीन बार बोलो—'ताल-बैताल, आयी बला को टाल।' बस, इतना ही..."

निकीता ने बड़े आदर से मीश्का की ओर देखा। इसी समय अहाते का फाटक चरमरा कर खुला और वहां से ढेर सारी भूरी-मटमैली भेड़ें भागती हुई बाहर निकलीं। उनके खुर हड्डियों की तरह बज रहे थे, उनकी दुमें हिल रही थीं और मेंगनियां गिर रही थीं। कुएं के सब ओर उनका जमघट हो गया। वे ममियाती और रेलपेल करती हुई कुएं के क़रीब सट आईं, अपनी थूथनियों से बर्फ़ की पतली परतों को तोड़ने, पानी पीने और खांसने लगीं। लम्बे-लम्बे बालोंवाला और धूल-मिट्टी से सना हुआ एक मेढ़ा अपनी सफ़ेद, धब्बोंवाली आंखों से मीश्का को घूरने और पांव पटकने लगा। मीश्का ने उसकी ओर देखते हुए कहा—"हरामख़ोर!" मेढ़ा उसपर झपटा, मगर मीश्का कुएं को फांदकर दूसरी ओर जा पहुंचा।

निकीता और मीश्का हंसते और मेढ़े को चिढ़ाते हुए अहाते में दौड़ने लगे। मेढ़ा भी उनका पीछा करता रहा, मगर फिर कुछ सोचकर ऐसे मिमियाने लगा मानो कह रहा हो—

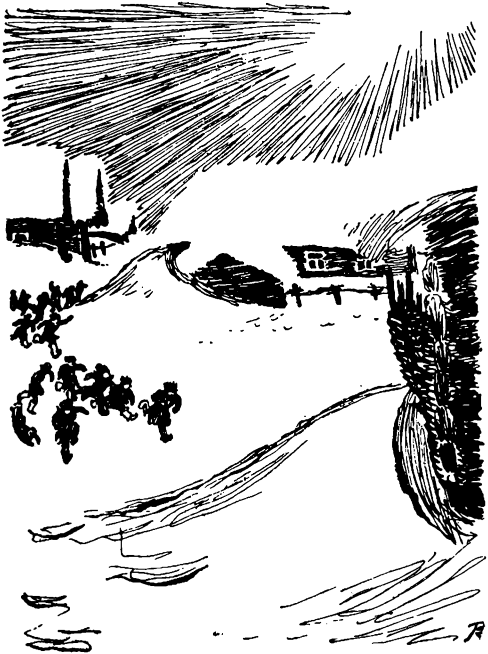
"तुम ख़ुद हरा-आम-ख़ो-ओर हो-ओ!"

जब निकीता को पिछवाड़े के ओसारे से खाना खाने के लिए पुकारा जाने लगा तो मीश्का ने उससे कहा—

"देखो, धोखा नहीं देना। गांव ज़रूर चलना है।"

मुठभेड़

निकीता और मीश्का बाग़ और तालाब को लांघते हुए छोटे रास्ते से गांव की ओर चल दिये। हवा ने जमे हुए तालाब पर से फूली-फूली बर्फ़ उड़ा दी थी। मीश्का वहां घड़ी भर को रुका। उसने अपनी जेब से क़लमतराश चाक़ू और दियासलाई की डिबिया निकाली, नीचे बैठा, जहां-तहां नाक से कुछ सूंघा-सांघी की और नीली बर्फ़ को उस जगह से खोदने लगा जहां उसके



अन्दर सफ़ेद बुलबुले थे। इन बुलबुलों को "बिल्लियां" कहा जाता था। तालाब के तल से दलदली गैस ऊपर उठती थी तथा बर्फ़ में बुलबुलों के रूप में जम जाती थी। मीश्का ने बर्फ़ को काटा, फिर दियासलाई जलाई और उसे सूराख़ के क़रीब किया। "बिल्ली" भड़क उठी और बर्फ़ के ऊपर पीली-सी शान्त लपटें जलने लगीं।

"देखो, तुम किसी से भी इसकी चर्चा न करना," मीश्का ने कहा। "अगले हफ़्ते हम निचले तालाब पर बिल्लियां जलाने चलेंगे। वहां मुझे एक बहुत बड़ी बिल्ली का पता है। पूरे दिन जलती रहेगी।"

लड़के तालाब पर से भागते और गिरे हुए पीले सरकंडों को रौंदते दूसरे किनारे पर आये और गांव में पहुंचे।

इस जाड़े में बहुत बर्फ़ पड़ी थी। जहां अहातों के बीच हवा के तेज़ झोंके आते थे, वहां बर्फ़ बिल्कुल थोड़ी थी, मगर झोंपड़ों के अगल-बग़ल जहां हवा नहीं थी, छतों से भी ऊंचे बर्फ़ के टीले खड़े हो गये थे।

भूमिहीन, एकाकी और सिरफिरे सावोस्का की झोंपड़ी पूरी तरह बर्फ़ में दब गई थी। सिर्फ़ चिमनी ही बाहर नज़र आ रही थी। मीश्का ने बताया कि तीन दिन पहले सारा गांव सावोस्का को बर्फ़ में से खोद कर निकालने के लिए जमा हो गया था। मगर उसी रात को जब बर्फ़ के तूफ़ान ने उसकी झोंपड़ी को पूरी तरह ढक दिया था, उस उल्लू ने अलावघर जलाया, मांस के बिना सब्ज़ियों का कुछ शोरबा बनाया-खाया और फिर अलावघर पर चढ़कर सो रहा। वह वहां अलावघर पर ही सोया हुआ मिला, उसे जगाया गया और ऐसी बेवक़ूफ़ी करने के लिए उसके कान ऐंठे गये।

गांव सूना था, बिल्कुल सन्नाटा था। कहीं-कहीं, किसी चिमनी से हल्का-हल्का धुआं निकल रहा था। बर्फ़ से ढके सफ़ेद मैदान, बर्फ़ ढकी भूसे की टाल और छतों के ऊपर धुंधला-सा सूरज लटका हुआ था। निकीता और मीश्का, अर्तामोन त्यूरिन के झोंपड़े के क़रीब पहुंचे। बड़ा ही भयानक था यह देहाती! बहुत ही जानदार, बहुत ही ग़ुस्सैल। सारा गांव डरता था उससे। निकीता ने खिड़की में से झांका तो उसे अर्तामोन की लाल लाल दाढ़ी दिखाई दी, झाड़ू की तरह सख़्त। वह मेज़ पर बैठा हुआ लकड़ी के प्याले में से कुछ खा रहा था। दूसरी खिड़की के शीशे के साथ नाक सटाये हुए अर्तामोन के तीन बेटे – स्योम्का, ल्योन्का और छोटा अर्तामोश्का – खड़े थे। इन तीनों के चेहरे झांइयों से भरे हुए थे।

झोंपड़े के बिल्कुल पास जाकर मीश्का ने सीटी बजाई। अपना बड़ा-सा मुंह हिलाते हुए अर्तामोन ने मुड़कर देखा और चमचा दिखाकर मीश्का को धमकाया। तीनों लड़के खिड़की के पास से ग़ायब हो गये और भेड़ की खाल के कोटों की पेटियां बांधते हुए ओसारे में दिखाई दिये।

"अरे कुछ शर्म करो," अपनी टोपी को एक कान पर खींचते हुए मीश्का ने कहा। "तुम तो लड़के नहीं, लड़कियां हो!.. घर में घुसे बैठे हो – डर गये न!"

"हम किसी से डरे-वरे नहीं," झांइयों से भरे चेहरेवालों में से एक यानी स्योम्का ने उत्तर दिया।

"बापू बिगड़ते हैं कि हम योंही बाहर घूम-घूम कर जूते तोड़ डालते हैं," ल्योन्का ने कहा।

"मैं तो एक बार कोंचान टोली के लड़कों की ग्रोर जा भी ग्राया हूं। मैंने तो उन्हें ललकारा ग्रौर भड़काया भी, मगर वे भड़कते ही नहीं," छोटे ग्रर्तामोश्का ने कहा।

मीश्का ने टोपी को दूसरे कान पर नीचे खींच लिया, चटखारा भरा ग्रौर फ़ैसलाकुन ग्रन्दाज़ में कहा –

"चलो, उन्हें चलकर भड़कायें। फिर हम उन्हें मज़ा चखायेंगे।"

ग्रर्तामोन के तीनों लड़कों ने कहा – "चलो।" वे सभी सड़क के बीच खड़े हुए बर्फ़ के एक बड़े-से टीले पर एक साथ चढ़ गये। यहीं, ग्रर्तामोन के झोंपड़े के ग्रागे से गांव का दूसरा छोर शुरू होता था।

निकीता का ख़्याल था कि बर्फ़ के टीले के कोंचानवाले छोर पर लड़कों की भारी भीड़ होगी। मगर वहां तो एक भी लड़का नहीं था, ख़ामोशी छाई हुई थी। शॉल लपेटे हुए सिर्फ़ दो लड़कियां थीं जो स्लेजों को खींचकर टीले के ऊपर ले जातीं, उनपर बैठ कर नमदे के जूतों से ढके हुए ग्रपने पैरों को सामने फैला लेतीं, रस्सी को थामतीं, स्लेजों को धकेलतीं ग्रौर शोर मचाती हुई सड़क तथा फिर खत्ती के पास से गुज़रतीं ग्रौर खड़े तट पर से होती हुई नदी के जमे हुए पानी की सतह पर पहुंच जातीं।

मीश्का ग्रौर उसके पीछे-पीछे झांइयोंवाले लड़के ग्रौर निकीता बर्फ़ के टीले से चिल्लाने लगे –

"ग्ररे, सामने तो ग्राग्रो कोंचानियो!"

"हम तुम्हारी ख़ूब ख़बर लेंगे!"

"डर कर छिप गये हो न!"

"निकलो तो, ज़रा तुम्हारी मरम्मत करें!"

"ज़रा सामने तो ग्राग्रो कोंचानियो, तुम्हारे दो-दो ग्रौर हमारा एक ही हाथ होगा!" मीश्का दस्ताना बजाते हुए चिल्लाया।

बर्फ़ के टीले के उस ग्रोर कोंचान टोली के चार लड़के सामने ग्राये। ग्रपने दस्तानों को बजाते, उन्हें ग्रगल-बग़ल रगड़ते ग्रौर टोपियों को ठीक करते हुए वे भी चिल्लाने लगे –

"ग्रोह, बड़ा डर लगता है हमें तुम से!"

"ग्ररे, हम तो थर-थर कांप रहे हैं!"

"मेंढक करते टर्र-टर्र!"

एक ग्रन्य ग्रोर से मीश्का के साथी – ग्रल्योश्का, नील, काले कानोंवाला वान्का, सावोस्का का भतीजा पेत्रूश्का ग्रौर बड़े-से पेटवाला एक छोटा-सा लड़का – सामने ग्राये। यह लड़का ग्रपनी

मां की शॉल सिर पर लपेटे ग्रौर सलीब की शक्ल में उसे छाती पर बांधे था। दूसरी तरफ़ से भी पांच-छः लड़के निकल ग्राये। वे चिल्लाये –

"ग्ररे, ग्रो झांइयोंवालो, ग्राग्रो, तुम्हारी झांइयां साफ़ कर दें!"

"देखो तो इन पहलवानों को जो चूहे मारा करते हैं!" इस ग्रोर से मीश्का कोर्याशोनोक चिल्लाया।

"मेंढक, मेंढक, टर्र-टर्र!"

दोनों ग्रोर से लगभग चालीस लड़के इकट्ठे हो गये। मगर लड़ाई कोई भी शुरू नहीं करना चाहता था, सब डरे हुए थे। उन्होंने बर्फ़ के गोले फेंके, मुंह बना बनाकर एक-दूसरे को चिढ़ाया। एक ग्रोर के लड़के चिल्ला रहे थे – "मेंढक, मेंढक, टर्र-टर्र!" ग्रौर दूसरी ग्रोर के "चूहेमार पहलवान!"। दोनों ग्रोर के शब्द दिल में तीर की तरह चुभते थे। ग्रचानक कोंचान टोली में से एक नाटा, चौड़े कंधों ग्रौर उठी हुई नाकवाला लड़का ग्रागे बढ़ा। ग्रपने साथियों को दायें-बायें हटाता हुग्रा वह तेज़ी से बर्फ़ के टीले से नीचे उतरा, कमर पर हाथ रखकर खड़ा हो गया ग्रौर चिल्लाकर बोला –

"ए मेंढको, ग्राये तुम में से कौन माई का लाल सामने ग्राता है। हो जायें मेरे साथ दो-दो हाथ!"

यही था मशहूर स्त्योप्का कार्नाऊश्किन जिसके घूंसे पर टोने का वरदान था।

कोंचान टोली के लड़कों ने हवा में टोपियां उछालीं ग्रौर ख़ूब ज़ोर से सीटियां बजाईं। मीश्का की ग्रोर के लड़के चुप हो गये। निकीता ने ग्रपने सभी साथियों पर नज़र डाली। झांइयों-वाले लड़के नाक-भौं सिकोड़े खड़े थे। ग्रल्योश्का ग्रौर काले कानोंवाला वान्का पीछे हट गये। मां की शॉल में लिपटा हुग्रा छोटा-सा लड़का स्त्योप्का की ग्रोर गोल-गोल ग्रांखों से देख रहा था। ऐसा लगता था कि वह रोया, कि ग्रभी रोया। घर की बनी हुई पेटी को पेट से नीचे करते हुए मीश्का बुदबुदाया –

"बहुत देखे हैं इसके जैसे! ऐसे बहुतों की मरम्मत की है! लड़ने को मन नहीं हो रहा – ग्रगर गुस्सा ग्रा गया तो कसकर ऐसी धौल जमाऊंगा कि टोपी मील भर दूर जा गिरेगी।"

स्त्योप्का ने देखा कि कोई भी उससे दो-दो हाथ करने को तैयार नहीं है। उसने ग्रपना दस्ताना हिलाते हुए कहा –

"चलो लड़को, इन पर पिल पड़ो!"

कोंचान टोली के लड़के शोर मचाते ग्रौर सीटियां बजाते बर्फ़ के टीले से नीचे भाग चले।

झांइयोंवाले लड़कों का दम ख़ुश्क हो गया, वे भाग चले ग्रौर उनके पीछे-पीछे ही भाग चला मीश्का, काले कानों वाला वान्का ग्रौर बाक़ी सभी लड़के भी। निकीता भी भागा। शॉलवाला छोटा-सा लड़का बर्फ़ पर बैठकर रोने लगा।

हमारी ओर के लड़कों ने भागते हुए अर्तामोन और चेर्नोऊखोव के अहातों को पार किया और बर्फ़ के दूसरे टीले पर जा चढ़े। निकीता ने मुड़कर देखा। उसने अपने पीछे अल्योश्का, नील और अपनी ओर के अन्य पांच लड़कों को बर्फ़ पर पड़े पाया। उनमें से कोई तो गिर गया था और कोई डर के मारे खुद ही लेट गया था। लेटे हुओं को पीटना मना था।

शर्म और गुस्से से निकीता का मन रोने को हो रहा था। वे डरकर भाग खड़े हुए थे, उन्होंने डटकर मुक़ाबला नहीं किया था। वह रुक गया और उसने अपना घूंसा तान लिया। उसी समय उसने उठी हुई नाक और बड़े-से मुंहवाले स्त्योप्का को भागते हुए अपनी ओर आते देखा। भेड़ की खाल की टोपी में से उसके बाल बाहर निकले हुए थे।

निकीता ने उससे भिड़ने के लिए आगे बढ़ते हुए सांड़ की तरह अपना सिर तान लिया और अपनी पूरी ताक़त से स्त्योप्का की छाती पर घूंसा जमाया। स्त्योप्का के सिर को ज़ोर का झटका लगा, उसकी टोपी दूर जा गिरी और वह बर्फ़ पर ढह पड़ा।

"ओह, कम्बख़्त!" स्त्योप्का ने कहा। "अब और नहीं मारना..."

कोंचान टोली के लड़के जहां के तहां रुक गये। निकीता उनकी ओर गया तो उन्होंने रास्ता छोड़ दिया। "हमारी जीत हो रही है!" ऐसे चिल्लाते हुए हमारी ओर के सभी लड़के निकीता से आगे निकल गये और एक दीवार की तरह कोंचान टोली के लड़कों पर टूट पड़े। अब कोंचान टोली के लड़के भाग चले। हमारे लड़कों ने पांच-छः अहातों के पास से उनका पीछा किया। आख़िर वे सभी ज़मीन पर लेट गये यानी उन्होंने अपनी हार मान ली।

निकीता गांव के अपने छोर पर लौटा, उत्तेजित, गुस्से से उबलता और यह देखता हुआ कि अब किससे उलझे, किससे भिड़े। किसी ने उसे आवाज़ दी। खत्ती के पीछे स्त्योप्का खड़ा हुआ था। निकीता उसके क़रीब गया। स्त्योप्का ने नाक-भौं सिकोड़कर उसकी ओर देखते हुए कहा –

"ख़ूब कसकर घूंसा जमाया तुमने। अब दोस्ती करना चाहते हो?"

"बेशक चाहता हूं," निकीता ने झटपट जवाब दिया।

लड़कों ने मुस्कराते हुए एक-दूसरे की ओर देखा। स्त्योप्का ने कहा –

"आओ, चीज़ें बदल कर पक्के दोस्त बन जायें।"

"मैं तैयार हूं।"

निकीता घड़ी भर सोचता रहा कि वह स्त्योप्का को कौन-सी सबसे अच्छी चीज दे सकता है। आख़िर उसने उसे चार फलोंवाला क़लमतराश चाक़ू दिया। स्त्योप्का ने इसे जेब में रखा और सीसे से भरी हुई हड्डी* निकाल कर निकीता की ओर बढ़ाते हुए कहा –

"यह लो! इसे गुम नहीं करना, बड़ी क़ीमती चीज़ है यह।"

---

*पुराने ज़माने में रूसी बालक सीसे से भरी हुई हड्डियों से कौड़ियों की भांति खेलते थे। – अनु०

उसी शाम को निकीता 'नीवा' पत्रिका में चित्र देख रहा था और उनके नीचे लिखे हुए स्पष्टीकरण पढ़ रहा था। पत्रिका में बहुत ही कम दिलचस्प सामग्री थी।

एक चित्र यह था—एक नारी ओसारे में खड़ी है कोहनियों तक उसकी बाहें नंगी हैं और बालों में फूल लगे हुए हैं। उसके कंधों पर और पैरों के निकट कबूतर बैठे हैं। बाड़ के पास कंधे पर बन्दूक़ टिकाये कोई व्यक्ति खड़ा हुआ दांत निपोर रहा है।

इस चित्र को देखकर सबसे ज्यादा परेशानी तो यह सोच कर होती थी कि उसे किस लिए बनाया गया है। यह समझ पाना किसी तरह मुमकिन नहीं था। उसके नीचे यह लिखा था—

"मनुष्य के इन सच्चे मित्रों, इन पालतू कबूतरों को किस ने नहीं देखा? (इसके आगे कबूतरों के बारे में लिखी हुई बातों को निकीता ने नहीं पढ़ा।) सुबह के समय इन पक्षियों को दाना-दुनका चुगाना किसे पसन्द नहीं? प्रतिभाशाली जर्मन चित्रकार हैन्स वूर्स्ट ने ऐसे ही एक दृश्य को चित्रपट पर उतारा है। प्रोटेस्टेन्ट मत के पादरी की जवान बेटी एल्ज़ा ओसारे में आती है। कबूतर अपनी प्रियतमा को देखते हैं और खुश होते हुए उड़कर उसके पैरों के पास जा बैठते हैं। देखिये तो एक उसके कंधे पर जा बैठा है और दूसरे उसके हाथ से दाना चुग रहे हैं। जवान शिकारी, जो उसका पड़ोसी है, छिपे-छिपे इस दृश्य की सराहना कर रहा है।"

निकीता ने कल्पना की कि यह एल्ज़ा बस कबूतरों को दाना ही चुगाया करती है और इसके अलावा कुछ भी नहीं करती-धरती—बड़ी ऊब महसूस करती होगी वह। उसका बाप पादरी भी कहीं कमरे में बैठा होगा—कुर्सी पर बैठा जम्हाइयां लेता हुआ ऊब रहा होगा। जवान पड़ोसी ऐसे दांत निपोर रहा है मानो उसके पेट में दर्द हो रहा हो। वह इसी तरह दांत निपोरता हुआ सड़क पर चलता जायेगा और जहां तक उसकी बन्दूक़ का सवाल है वह केवल दिखावटी है, उससे गोली-वोली कुछ नहीं चलती होगी। चित्र में दिखाया गया आकाश भी धुंधला था और सूरज भी।

निकीता ने थूक लगाकर अपनी पेंसिल का सिरा गीला किया और पादरी की बेटी की मूंछें बना दीं।

दूसरा चित्र था बुज़ुलूक नगर का—संगमील, सड़क किनारे पड़ा हुआ टूटा पहिया। दूरी पर तख़्तों के झोंपड़े, छोटा-सा गिरजाघर और घटाटोप बादलों से बरसती हुई टेढ़ी जल-धाराएं।

निकीता ने जम्हाई ली, 'नीवा' पत्रिका बन्द कर दी और मेज़ पर झुककर आहट लेने लगा।

अटारी से छोटी-छोटी और फिर लम्बी सीटी सुनाई दी। फिर वह भारी आवाज़ की "ऊ-ऊ-ऊ" में बदल गई। यह "ऊ-ऊ-ऊ" की आवाज़ लम्बी थी, खीझ भरी थी और होंठों को गोल करके पैदा की जा रही थी। इसके बाद यह सीटी बारीक हो गई, दर्दभरी और नकियाती-सी आवाज़ में बदली और फिर सूत के बारीक धागे जैसी कराह बन गई। फिर से उसने भारी और होंठों को गोल कर पैदा की गई आवाज़ का रूप ले लिया।



गोल मेज़ के ऊपर एक लैम्प जल रहा था, चीनी के सफ़ेद शेड के नीचे। दीवार के पीछे बरामदे में किसी के भारी-भरकम पैरों की ग्राहट सुनाई दी। शायद ग्रंगीठी में लकड़ियां झोंकनेवाला झोंकिया ग्राया था। लैम्प के नीचे लटकी हुई शीशे की छोटी-छोटी सजावटी चीजें धीरे से टनटना उठीं।

मां किताब पर सिर झुकाये थी। उसके वाल हल्के सुनहरे ग्रौर मुलायम थे। उसकी कनपटी पर, जहां वाजरे के दाने के समान जन्म-चिह्न था, केश-कुण्डल लटके हुए थे। मां जब-तब बुनने की सिलाई से किताब का जुड़ा हुग्रा पृष्ठ काटती। किताव पर गेरुग्रा ग्रावरण था। पिता के कमरे में पूरी की पूरी ग्रलमारी ऐसी पुस्तकों से भरी पड़ी थी। उन सब का एक ही नाम था– 'यूरोप समाचार'। बड़ी ग्रजीव वात है कि सभी वयस्कों को ऐसी ऊब भरी किताबें पढ़ना पसन्द है। ऐसी किताव पढ़ना तो ईंट घिसने का ऊव भरा काम करने के समान है।

मां की गोद में पालतू साही – ग्रख़ील्का – सो रही थी ग्रपनी सूग्रर जैसी ग्रौर गीली नाक को पंजों पर टिकाये हुए। साही दिन भर सोयी रहकर ग्रपनी नींद पूरी कर लेती ग्रौर जव लोग सोते तो वह रातभर कमरे में ग्राती-जाती, ग्रपने पंजे रगड़ती, घों-घों की ग्रावाज निकालती, सभी कोनों में सूंघा-सांघी करती ग्रौर चूहों के विलों में झांकती।

दीवार के पीछे झोंकिये ने लोहे के दरवाज़े को टनटनाया ग्रौर भट्ठी में लकड़ियों के हिलाये-डुलाये जाने की ग्रावाज़ सुनाई दी। कमरे में गर्म हुए प्लास्टर ग्रौर धुले हुए फ़र्श की गन्ध ग्रा रही थी। वातावरण ऊव भरा, मगर ग्रारामदेह था। ऊपर ग्रटारी में कोई ग्रपना पूरा ज़ोर लगाकर "हू-ऊ-ऊ-ऊ" कर रहा था।

"मां, यह सीटी कौन वजा रहा है?" निकीता ने पूछा।

मां ने किताव पर से नज़र हटाये विना ही भौंहें चढ़ाईं। ग्रर्कादी इवानोविच निकीता की कापी में लकीरें खींच रहे थे। वे तो मानो ऐसे ही प्रश्न की प्रतीक्षा में थे। झटपट बोले–

"जव हम किसी बेजान चीज़ की चर्चा करें, तो हमें 'क्या' सर्वनाम का उपयोग करना चाहिए।"

"हू-ऊ-ऊ-ऊ-ऊ," ग्रटारी में से ग्रावाज़ ग्रा रही थी। मां ने सिर ऊपर उठाया, ग्राहट ली, कंधों को हिलाया-डुलाया ग्रौर उन्हें रोयेंदार शॉल से ढक लिया। साही जाग उठी ग्रौर उसने खीझ कर नाक से गहरी सांस ली।

ग्रव निकीता के मस्तिष्क में एक कल्पना-चित्र उभरा। उसने चित्र में देखा कि ठंडी ग्रौर ग्रंधेरी ग्रटारी के झरोखे में से वर्फ़ ग्रन्दर ग्रा रही है। छत की वड़ी-वड़ी कड़ियों के बीच, जहां कवूतर बैठा करते थे, पुरानी, टूटी-फूटी कुर्सियां ग्रौर ग्रारामकुर्सियां तथा सोफ़ों के टूटे हुए हिस्से पड़े हैं। इन सभी के स्प्रिंग निकले हुए हैं। चिमनी के निकट रखी हुई ऐसी ही एक ग्रारामकुर्सी पर "हवा" बैठी है, झवरीली-सी, धूल-मिट्टी ग्रौर मकड़ी के जालों से लथपथ। वह हाथों पर ग्रपने गाल टिकाये ग्राराम से वैठी है ग्रौर "ऊ-ऊ-ऊ-ऊव" का राग ग्रलाप रही है। रात लम्बी है, ग्रटारी ठंडी है ग्रौर वह एकाकी, एकदम ग्रकेली बैठी हुई "ऊ-ऊ" कर रही है।

निकीता अपनी कुर्सी से उठा और मां के पास जा बैठा। मां प्यार से मुस्कराई, निकीता को उसने अपने निकट किया और माथा चूमा।

"तुम्हारा सोने का वक़्त हो गया है न बेटे?"

"नहीं मां, आधा घंटा और ठहर जाइये।"

निकीता ने मां के कंधे पर अपना सिर टिका दिया। कमरे की गहराई में एक दरवाज़ा चरमराया और वास्का बिल्ला अन्दर आया—पूंछ ऊपर को उठाये हुए और उसका सारा व्यक्तित्व नम्रता और शिष्टता की मूर्त्ति-सा था। अपना गुलाबी मुंह खोलकर उसने बहुत ही धीरे से 'म्याऊं' की। कापी पर नज़र टिकाये हुए ही अर्कादी इवानोविच ने पूछा—

"तुम किस काम से आये हो, वासीली वासील्येविच?"

बिल्ला वास्का मां के पास आया, सिकोड़ी हुई और ज़रा-से सूराख़ जैसी प्रतीत हो रही हरी आंखों से उसने मां की ओर देखा तथा कुछ अधिक ज़ोर से म्याऊं की। साही ने फिर से घों-घों की। निकीता को लगा कि वास्का को किसी बात की ख़बर है, वह कोई सूचना देने आया है।

अटारी में हवा बहुत बुरी तरह 'हू-ऊ' कर रही थी। इसी समय बाहर से हल्की-सी पुकार सुनाई दी, बर्फ़ कचकचाई और कुछ कण्ठस्वर सुनाई दिये। मां झटपट कुर्सी से उठी। साही खर-खर की आवाज़ करती हुई गोद से नीचे लुढ़क गई।

अर्कादी इवानोविच भागकर खिड़की के पास गये और बाहर झांककर चिल्लाये—

"वे आ गये हैं!"

"हे भगवान!" उत्तेजित मां ने कहा। "क्या सचमुच आन्ना अपोल्लोसोव्ना आयी है?.. बर्फ़ के ऐसे भयंकर तूफ़ान में..."

कुछ क्षण बाद बरामदे में खड़े हुए निकीता ने नमदे से मढ़े हुए भारी दरवाज़े को धीरे से खुलते देखा। पाले की भाप का एक बादल-सा अन्दर आया और फिर फ़र के दो कोट पहने और शॉल ओढ़े हुए एक ऊंचे क़द और गदराये बदन की नारी अन्दर आई। वह बर्फ़ से अटी पड़ी थी और एक लड़के का हाथ थामे थी। लड़का चमकते हुए बटनोंवाला सलेटी रंग का ओवरकोट और कज़्ज़ाकी हुड पहने था। उसके पीछे पीछे पाले से अकड़े हुए नमदे के बूटों को ठपठपाता हुआ कोचवान भीतर आया। उसकी दाढ़ी पर पाले की परत जमी हुई थी, मूंछों की जगह बर्फ़ के पीले छल्ले थे और पलकें फूली-फूली तथा सफ़ेद नज़र आ रही थीं। वह हाथों में एक बालिका को उठाये था। बालिका बकरे की खाल का कोट पहने थी जिसकी फ़र बाहर की ओर थी। बालिका कोचवान के कंधे पर सिर टिकाये और आखें मूंदे हुए लेटी थी। उसके चेहरे पर कोमलता थी और साथ ही शरारत का भाव झलक रहा था।

अन्दर आते हुए यह लम्बे क़दवाली नारी ऊंची और भारी आवाज़ में बोली—

"अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना, लो यह रहे तुम्हारे मेहमान!" इतना कहकर उसने हाथ ऊपर उठाये और शॉल खोलने लगी। "पास नहीं आओ, तुम्हें ठण्ड लग जायेगी। मैं यह कहे बिना

नहीं रह सकती कि तुम्हारे यहां के रास्ते तो बहुत ही ख़राब हैं... बिल्कुल घर के क़रीब ग्राकर ही हम झाड़ियों में जा फंसे।"

यह मां की सहेली थी, ग्रान्ना ग्रपोल्लोसोव्ना बावकिना, जो सदा समारा में ही रहती थी। उसका बेटा वीक्तोर इस इन्तज़ार में था कि कोई उसका हुड उतारे ग्रौर नाक-भौं सिकोड़कर निकीता की ग्रोर देख रहा था। निकीता की मां ने सोई हुई बालिका को कोचवान से ले लिया ग्रौर उसकी फ़र की टोपी उतारी। उसी समय उसके सुन्दर, सुनहरे बाल बिखर गये। मां ने उसे चूमा ग्रौर कहा –

"प्यारी लील्या, ग्रब जागो, तुम मौसी के घर पहुंच गई।"

लड़की ने बड़ी-बड़ी नीली ग्रांखें खोलते हुए गहरी सांस ली ग्रौर पूरी तरह जागते हुए एक बार फिर सांस छोड़ी।

वीक्तोर ग्रौर लील्या

निकीता ग्रौर वीक्तोर बावकिन की निकीता के कमरे में सुबह ही ग्रांख खुली। ग्रपने-ग्रपने पलंग पर बैठे हुए उन्होंने माथे पर बल डालकर एक-दूसरे की ग्रोर देखा।

"मुझे तुम्हारा ध्यान है," निकीता ने कहा।

"मुझे भी तुम्हारी बहुत ही ग्रच्छी तरह से याद है," वीक्तोर ने फ़ौरन जवाब दिया। "तुम एकबार हमारे यहां समारा ग्राये थे। तुमने सेबों के साथ इतनी ग्रधिक बत्तख़ खा ली थी कि तुम्हें रेंड़ी का तेल पिलाना पड़ा था।"

"मुझे यह तो याद नहीं।"

"मगर मुझे याद है।"

लड़के चुप हो गये। वीक्तोर ने जानबूझकर जम्हाई ली। निकीता ने लापरवाही से कहा –

"मेरे ग्रध्यापक ग्रर्कादी इवानोविच बहुत ही कठोर हैं, पढ़ा पढ़ाकर मेरे नाक में दम कर दिया है। वे किसी भी किताब को ग्राधे घण्टे में पढ़ डालते हैं।"

वीक्तोर मुस्कराया –

"मैं हाई स्कूल में पढ़ता हूं, दूसरी कक्षा में। हमारे यहां इतनी सख़्ती होती है कि ग्रक्सर मुझे दोपहर का खाना गोल करना पड़ता है।"

"तो क्या हुग्रा!" निकीता ने कहा।

"हां, तुम तो ऐसा ही कहोगे। वैसे यह सही है कि मैं एक हज़ार दिनों तक भूखा रह सकता हूं।"

"वाह," निकीता ने कहा। "कभी ग्राज़माकर देखा है?"

"नहीं, ग्रभी तक तो नहीं। मां इजाज़त नहीं देती।"

 निकीता ने जम्हाई ग्रौर ग्रंगड़ाई ली।

"जानते हो, परसों मैंने स्त्योप्का कार्नाऊश्किन को पीट दिया।"

"यह कौन है स्त्योप्का कार्नाऊश्किन?"

"हमारे गांव का सबसे तगड़ा लड़का। मैंने कसकर ऐसा घूंसा जमाया कि वह चारों खाने चित हो गया। फिर मैंने उसे चार फलोंवाला क़लमतराश चाक़ू दिया और उसने मुझे सीसाभरी हुई हड्डी दी। वह मैं तुम्हें बाद में दिखाऊंगा।"

निकीता पलंग से उठा और इत्मीनान से कपड़े पहनने लगा।

"मैं एक हाथ से मकारोव का शब्द-कोश उठा लेता हूं," खीझ से कांपती हुई आवाज़ में वीक्तोर ने कहा। यह स्पष्ट था कि वह अब मैदान में और अधिक डटा नहीं रहना चाहता था।

निकीता टाइलों के अलावघर के क़रीब गया। उसपर लेटने के लिए भी सीट बनी हुई थी। अलावघर को हाथ से छुए बिना ही वह उछलकर सीट पर जा पहुंचा। फिर उसने एक पैर ऊपर उठाया और दूसरे पैर पर नीचे कूद गया।

"अगर जल्दी-जल्दी टांगें हिलाई-डुलाई जायें तो आदमी उड़ भी सकता है," वीक्तोर की आंखों में आंखें डालकर ध्यान से उसे देखते हुए निकीता ने कहा।

"यह तो बड़ी मामूली-सी चीज़ है। हमारी कक्षा में बहुत-से बालक ऐसे उड़ते हैं।"

लड़कों ने कपड़े पहने और खाने के कमरे में जा पहुंचे। वहां गर्म-गर्म डबलरोटी और पराठों की गंध फैली हुई थी, चमकते हुए समोवार से इतनी भाप निकल रही थी कि सभी खिड़कियों पर धुंध ही धुंध छा गई थी। मेज़ पर मां, अर्कादी इवानोविच और पिछले दिन आई वीक्तोर की बहन लील्या बैठी थी। उसकी उम्र कोई नौ वर्ष की थी। बग़लवाले कमरे से आन्ना अपोल्लोसोव्ना की भारी-भरकम आवाज़ सुनाई दी—"मुझे तौलिया दे जाइये।"

लील्या रेशमी नीले रिबनवाला, जो एक बड़ी 'बो' की शक्ल में पीछे की ओर बंधा हुआ था, फ़्राक पहने थी। उसके सुनहरे घुंघराले बालों में भी एक और नीला रिबन बंधा हुआ था, तितली की शक्ल में।

निकीता उसके क़रीब आया तो शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया और उसने अपना पैर रगड़ा। लील्या अपनी कुर्सी पर बैठी हुई ही घूमी और निकीता की ओर अपना हाथ बढ़ाते हुए उसने बहुत गम्भीरता से कहा—

"नमस्कार, लड़के!"

जब उसने यह कहा तो उसका ऊपरवाला होंठ ऊपर को उठ गया।

निकीता को लगा कि वह जीती-जागती लड़की नहीं, कोई मूर्त्ति है। इतनी सुन्दर थी वह! ख़ासकर उसकी आंखें—रिबन से बढ़कर नीली और चमकती हुई और उसकी लम्बी-लम्बी बरौनियां—बिल्कुल रेशम जैसी। लील्या ने अभिवादन किया और उसके बाद निकीता की ओर कोई ध्यान न देते हुए उसने अपने दोनों हाथों में चाय का बड़ा-सा प्याला साधा और उसी में अपना मुंह गड़ा दिया। लड़के उसके पास ही मेज़ पर बैठ गये। वीक्तोर बच्चों की भांति चाय



पीता था। वह प्याले पर झुक जाता और फिर अपने लम्बे-लम्बे होंठों को आगे की ओर बढ़ाकर चुस्कियां लेता। वह चोरी-छिपे चाय में शकर डालता गया, यहां तक कि वह शरबत बन गई और तब उसने दबी-सी आवाज़ में उसमें पानी डालने का अनुरोध किया। निकीता को अपने घुटने से टहोकते हुए वीक्तोर ने फुसफुसाकर पूछा –

"तुम्हें मेरी बहन अच्छी लगी है?"

निकीता ने कोई उत्तर न दिया। शर्म से उसका चेहरा टमाटर की तरह लाल हो गया।

"ज़रा सम्भलकर रहना उसके मामले में," वीक्तोर ने फुसफुसाकर कहा। "बात बात पर मां के पास भागी जाती है शिकायत करने।"

लील्या ने इसी समय चाय ख़त्म की, नेप्किन से मुंह पोंछा और अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना के पास जाकर शिष्टतापूर्वक और ढंग से बोली –

"धन्यवाद, मौसी साशा।"

फिर वह खिड़की की ओर गई, बड़ी-सी बादामी रंग की आरामकुर्सी पर अपने नीचे टांगें दबाकर बैठ गई, अपनी किसी जेब से उसने सुइयों और धागों से भरा डिब्बा निकाला और सिलाई करने लगी। निकीता को अब तितली की शक्ल में बंधी हुई 'बो', लटकते हुए दो केश-कुण्डल और उनके बीच बाहर को निकली हुई ज़बान का ज़रा-सा सिरा दिखाई दे रहा था जिससे सिलाई के काम में मानो उसे मदद मिल रही थी।

निकीता के सभी विचार अब उलझ-उलझा गये थे। उसने वीक्तोर को यह दिखाना शुरू किया कि कुर्सी की टेक से कैसे कूदा जा सकता है। मगर लील्या ने मुड़कर उस तरफ़ नहीं देखा। तभी मां ने कहा –

"बच्चो, बाहर अहाते में जाकर शोर मचाओ!"

लड़कों ने कपड़े पहने और अहाते में चले गये। दिन धुंधला था, कुछ गर्म भी। कम ऊंचाई पर लाल लाल सूरज बर्फ़ से ढके मैदानों जैसे प्रतीत होते हुए बादलों की लम्बी-लम्बी तहों के ऊपर लटका हुआ था। बगीचे में पाले की चादर से ढके हुए गुलाबी वृक्ष खड़े थे। बर्फ़ पर पड़ती हुई अस्पष्ट परछाइयां भी उसी तन सहलाते प्रकाश को प्रतिबिम्बित कर रही थीं। असाधारण शान्ति का साम्राज्य था। केवल पिछवाड़े के ओसारे के पास दो कुत्ते – शारोक और कातोक – एक दूसरे से सटकर खड़े थे और सिर घुमाकर गुर्रा रहे थे। वे दोनों इसी तरह देर तक गुर्राते, दांत दिखाते और एक-दूसरे से सटे हुए खड़े रहा करते थे। फिर जब कोई उधर से गुज़रता हुआ मज़दूर उनपर दस्ताना फेंकता तो वे गुस्से से खांसते, अपनी पिछली टांगों पर खड़े हो जाते और ऐसे लड़ते कि बाल उड़ उड़कर दूर जा गिरते। वे दूसरे कुत्तों से डरते, भिखारी उन्हें फूटी आंखों न सुहाते और रात को रखवाली करने के बजाय बग्घीख़ाने में सोये रहते।

"तो अब हम क्या करेंगे?" वीक्तोर ने पूछा।

निकीता ने एक झबरीले और खीझे हुए कौवे पर नज़र डाली जो खत्ती से पशुओं के बाड़े की ओर उड़ा जा रहा था। उसका खेलने को मन नहीं हो रहा था, एक अनबूझ-सी उदासी ने

उसके मन में घर कर रखा था। वह चाहता था कि बैठक में चलने का सुझाव दे और वहां वे सोफ़े पर बैठकर कुछ पढ़े-पढ़ायें। मगर वीक्तोर ने कहा –

"अरे, मैं तुम्हें समझ गया हूं, तुम तो सिर्फ़ लड़कियों के साथ ही खेल सकते हो।"

"क्यों?" निकीता ने शर्म से लाल होते हुए पूछा।

"क्यों? यह तो तुम ख़ुद ही जानते हो।"

"तुम तो बेकार मेरे पीछे पड़ गये हो। ख़ैर, मैं कुछ नहीं जानता। ग्राग्रो, कुएं पर चलें।"

लड़के कुएं की ग्रोर चल दिये। इस समय खुले हुए फाटकों से बाहर निकलती हुई गायें भी पानी पीने के लिए कुएं की तरफ़ जा रही थीं। दूर खड़ा हुग्रा मीश्का कोर्याशोनोक चरवाहों का एक बड़ा-सा कोड़ा सटकार रहा था जिससे गोली दगने की सी ग्रावाज़ निकलती थी। मीश्का ग्रचानक चिल्ला उठा –

"वायान, वायान! निकीता, बचो! बचो इससे, निकीता!"

निकीता ने घूमकर देखा। चौड़े माथे पर घुंघराले बालों तथा छोटे-छोटे सींगोंवाला एक गुलाबी-भूरा ग्रौर लम्बा-सा सांड़ गायों के झुंड से निकलकर लड़कों की ग्रोर ग्रा रहा था।

"धां... धां..." वायान रह-रहकर गरजता ग्रौर ग्रपनी पीठ पर दायें-बायें पूंछ मार रहा था।

"वीक्तोर, भागो!" निकीता चिल्लाया ग्रौर उसका हाथ पकड़ कर घर की ग्रोर भाग चला।

सांड़ धां-धां करता हुग्रा बहुत तेज़ी से लड़कों के पीछे भागा।

वीक्तोर ने मुड़कर देखा ग्रौर चीख़ उठा। वह बर्फ़ पर गिर पड़ा ग्रौर सिर को हाथों से ढक लिया। वायान चार-पांच क़दमों की दूरी पर था। निकीता ग्रब रुक गया, वह ग्रचानक ग़ुस्से से उबल पड़ा, उसने ग्रपनी टोपी उतारी, सांड़ के पास भाग गया ग्रौर टोपी को थूथनी पर मारते हुए चिल्लाने लगा –

"हटो यहां से! हटो!"

सांड़ रुक गया ग्रौर उसने सींग झुका लिये। दूसरी ग्रोर से मीश्का कोर्याशोनोक ग्रपना कोड़ा सटकारता हुग्रा ग्रा पहुंचा। तब वायान दुख से रम्भाता हुग्रा मुड़ा ग्रौर कुएं की ग्रोर वापिस चला गया। उत्तेजना से निकीता के होंठ कांप रहे थे। उसने टोपी ग्रोढ़ी ग्रौर मुड़कर देखा। वीक्तोर घर के क़रीब भी पहुंच चुका था ग्रौर हाथ हिलाकर उसे ग्रपने पास बुला रहा था। ग्रनजाने ही निकीता का ध्यान ग्रोसारे की ग्रोर से तीसरी खिड़की की ग्रोर चला गया। खिड़की के पीछे उसे दो ग्राश्चर्यचकित ग्रांखों ग्रौर उनके ऊपर तितली की तरह खड़े हुए नीले रिबन की झलक मिली। लील्या खिड़की के दासे पर खड़ी हुई निकीता की ग्रोर देख रही थी। वह ग्रचानक मुस्करा दी। निकीता ने झटपट दूसरी ग्रोर मुंह कर लिया। उसने फिर खिड़की की ग्रोर नहीं देखा। उसका मन खिल उठा ग्रौर उसने वीक्तोर को पुकारते हुए कहा –

"चलो, स्लेज लेकर टीले पर चलें और वहां से नीचे फिसलें! जल्दी करो!"

दोपहर के खाने का वक़्त होने तक वे स्लेज पर टीले से नीचे फिसलते, ठहाके लगाते और मौज मनाते रहे। मगर निकीता लगातार मन ही मन यह सोचता रहा –

"जब घर लौटेंगे और खिड़की के पास से गुज़रेंगे तो मैं खिड़की पर नज़र डालूं या नहीं? नहीं, मैं उधर नहीं देखूंगा, दूसरी ओर देखता हुआ आगे चला जाऊंगा।"

फ़र वृक्ष के सजावटी खिलौनों का डिब्बा

दोपहर के खाने के समय निकीता ने कोशिश की कि लील्या की ओर न देखे। वैसे अगर वह उसे देखने की कोशिश करता भी, तो उसे लाभ कुछ न होता। कारण कि उन दोनों के बीच लाल रंग की मख़मली जाकेट पहने हुए आन्ना अपोल्लोसोव्ना बैठी थी। वह हाथ हिलाती हुई इतनी ऊंची और भारी-भरकम आवाज़ में बातें कर रही थी कि लैम्प के नीचे लगी हुई शीशे की सजावटी चीज़ें छनछना उठती थीं।

"नहीं, नहीं, हरगिज़ नहीं, अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना," उसने ज़ोरदार आवाज़ में कहा, "घर पर ही पढ़ाना बेटे को। हाई स्कूल में तो ऐसी अव्यवस्था है कि कुछ न पूछो। मेरा तो यह मन होता है कि डायरेक्टर को अपने हाथों से पकड़कर दरवाज़े से बाहर निकाल दूं... वीक्तोर," उसने अचानक चिल्लाकर कहा, "बड़ों के बारे में मां जो कुछ कहती है, तुम्हें उससे कोई मतलब नहीं है। तुम्हें उनकी इज़्ज़त करनी चाहिए। अब इन अध्यापकों को ही ले लो, अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना! निरे उल्लू हैं। एक से एक बढ़कर। और वह भूगोल का अध्यापक? उसका क्या नाम है, वीक्तोर?"

"सिनीच्किन।"

"मैं तुम्हें पहले भी बता चुकी हूं सिनीच्किन नहीं, सिन्याव्किन। यह अध्यापक तो ऐसा सिरफिरा है कि एक बार हमारी बैठक से निकलते हुए उसने टोपी की जगह सन्दूक़ पर सोई हुई बिल्ली उठाकर ओढ़ ली... वीक्तोर, तुम छुरी-कांटा कैसे पकड़े हुए हो? ढंग से खाओ, मच-मच की आवाज़ नहीं करो... मेज़ के और नज़दीक हो जाओ... हां तो मैं तुम्हें क्या बताना चाहती थी, अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना? अरे, हां, मैं क्रिसमस वृक्ष को सजाने के लिए सभी तरह की छुटपुट चीज़ों का सन्दूक़ भर लाई हूं... कल बच्चों को इन्हें चिपकाने के काम में जुटाना चाहिए।"

"मगर मेरे ख़्याल में तो इन्हें आज ही यह काम शुरू करना चाहिए, वरना वे इसे कर नहीं पायेंगे," मां ने कहा।

"ख़ैर, जैसा मनमाने वैसा करो। मैं तो जाकर ख़त लिखती हूं। खाने के लिए धन्यवाद, मेरी प्यारी।"

ग्रान्ना ग्रपोल्लोसोव्ना ने नेप्किन से होंठ पोंछे, ज़ोर से ग्रावाज़ करते हुए कुर्सी पीछे हटाई ग्रौर ख़त लिखने के इरादे से सोने के कमरे में चली गई। मगर घड़ी भर बाद वहां पलंग के स्प्रिंग ऐसे बज उठे मानो उसपर कोई हाथी ढह पड़ा हो।

बड़ी मेज़ से मेज़पोश हटा दिया गया। मां चार कैंचियां लाई ग्रौर लेई बनाने लगी। लेई ऐसे बनाई गई – मां ने कोनेवाली ग्रलमारी से, जहां घरेलू दवाख़ाना था, मैदे का मर्तबान निकाला, मैदे से भरी एक चमची एक गिलास में डाली, फिर उसमें ठंडे पानी की दो चमचियां डालकर उसे ग्रच्छी तरह हिलाना शुरू किया ताकि उसमें बिना घुला मैदा न रह जाये। फिर मां ने समोवार से उबलता हुग्रा पानी उसमें डाला ग्रौर उसे लगातार हिलाती रही। मैदा जैली की तरह पारदर्शी हो गई। इस तरह बढ़िया लेई बन गई।

लड़कों ने ग्रान्ना ग्रपोल्लोसोव्ना का चमड़े का सूटकेस लाकर मेज़ पर रख दिया। मां ने सूटकेस खोला ग्रौर उसमें से चीज़ें निकालनी शुरू कीं – सुनहरे काग़ज़, चिकने ग्रौर उभरे हुए, रुपहले, नीले, हरे ग्रौर नारंगी रंग के काग़ज़, ब्रिस्तोल की दफ़्ती, मोमबत्तियों से भरे डिब्बे, क्रिसमस वृक्ष के लिए शमादानों, सुनहरी मछलियों ग्रौर मुर्गों, धागे से बंधे ग्रौर सफ़ेद छल्लोंवाले शीशे के गोलों से भरे हुए गत्ते के डिब्बे। इन शीशे के गोलों पर चारों ग्रोर गढ़े से बने हुए थे ग्रौर ये गढ़े दूसरे रंगों के थे। इसके बाद मां ने पटाख़ों से भरा हुग्रा डिब्बा, सुनहरी ग्रौर रुपहली किनारी का गुच्छा, खिड़कियोंवाले रंग-बिरंगे चंडोल ग्रौर एक बड़ा-सा सितारा निकाला। हर नये डिब्बे के निकलने पर बच्चे ख़ुशी से चिल्ला उठते।

"इसमें ग्रौर भी कई बढ़िया चीज़ें हैं," सूटकेस में हाथ डालते हुए मां ने कहा, "मगर फ़िलहाल हम उन्हें नहीं निकालेंगे। ग्राग्रो, ग्रब इन्हें लेई से जोड़कर तरह तरह की चीज़ें बनायें।"

वोक्तोर काग़ज़ों को जोड़कर ज़ंजीर बनाने लगा। निकीता ने मिठाइयों के लिए कटोरियां बनानी शुरू कीं। मां काग़ज़ ग्रौर गत्ता काट रही थी। लील्या ने नम्रता से पूछा –

"मौसी साशा, मैं डिब्बा बना सकती हूं?"

"जो चाहो, वही बनाग्रो, बेटी।"

बालक नाक से सांस लेते ग्रौर लेई वाले हाथ कपड़ों से पोंछते हुए चुपचाप काम करने लगे। इसी समय मां यह बताती रही कि कैसे बरसों पहले क्रिसमस वृक्ष सजाने के लिए नाम मात्र को भी खिलौने नहीं होते थे ग्रौर सब कुछ हाथों से ही करना पड़ता था। इसलिए उन दिनों इस कला में माहिर ऐसे लोग होते थे (जिन्हें उसने ग्रपनी ग्रांखों से देखा था) जो मीनारों, चक्करदार सीढ़ियों ग्रौर उठाऊ पुलोंवाले ग्रसली क़िले तक बना देते थे। क़िले के सामने काई वाली शीशे की झील होती थी। झील में सुनहरी नाव में जुते हुए दो हंस तैरते रहते थे।

लील्या सुनती ग्रौर चुपचाप काम करती रही। केवल कठिन क्षणों में जीभ बाहर निकालकर ग्रपने काम को हल्का कर लेती थी। निकीता ग्रपनी कटोरियां नीचे रखकर उसकी ग्रोर देखने

लगा। इसी समय मां बाहर चली गई। वीक्तोर ने कोई दस गज़ लम्बी रंग-बिरंगी ज़ंजीरें कुर्सियों पर लटका दीं।

"तुम क्या बना रही हो?" निकीता ने पूछा।

लील्या सिर झुकाये-झुकाये ही मुस्कराई, उसने सुनहरे काग़ज़ का एक सितारा काटा और उसे नीले ढक्कन पर चिपका दिया।

"तुम क्या करोगी इस डिब्बे का?" निकीता ने धीरे से पूछा।

"इसमें गुड़ियों के दस्ताने रखूंगी," लील्या ने गम्भीर होकर उत्तर दिया। "तुम लड़के हो, यह बात तुम्हारी समझ में नहीं आयेगी।" लील्या ने सिर ऊपर उठाया और अपनी नीली कठोर नज़र से निकीता की ओर देखा।

उसके चेहरे पर लाली आने लगी, बढ़ती गई और आख़िर उसका चेहरा बिल्कुल सुर्ख़ हो गया।

"ओह, तुम कितने लाल हो, बिल्कुल चुक़न्दर की तरह," लील्या ने कहा।

वह फिर से डिब्बे पर झुक गई। उसके चेहरे पर शरारत खेलने लगी। निकीता ऐसे बैठा था मानो किसी ने उसे कुर्सी के साथ चिपका दिया हो। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कहे तो क्या और किसी भी तरह कमरे से बाहर नहीं जा सकता था। लड़की उसका मज़ाक़ उड़ा रही थी, मगर उसने न बुरा माना और न उससे नाराज़ ही हुआ। केवल उसे देखता ही रहा। अचानक लील्या ने डिब्बे पर नज़र टिकाये-टिकाये ही कुछ ऐसे अन्दाज़ में उससे पूछा मानो उनका अपना कोई राज़ हो और वे उसकी चर्चा कर रहे हों –

"तुम्हें यह डिब्बा पसन्द है?"

निकीता ने उत्तर दिया –

"हां, पसन्द है।"

"मुझे भी बहुत पसन्द है," लील्या ने कहा और सिर हिलाया जिससे उसका रिबन और केश-कुंडल झूल उठे। लील्या ने कुछ और भी कहना चाहा, मगर इसी समय वीक्तोर आ गया और लील्या तथा निकीता के बीच अपना सिर करके जल्दी-जल्दी बोला –

"कैसा डिब्बा? कहां है डिब्बा?.. अरे इसमें क्या ख़ास बात है, मामूली-सा डिब्बा है। ऐसे तो जितने चाहो मैं बना सकता हूं।"

"वीक्तोर, मैं सचमुच मां से शिकायत कर दूंगी कि तुम मेरे काम में ख़लल डालते हो," लील्या ने कांपते होंठों से कहा। फिर उसने लेई और काग़ज़ उठाया तथा मेज के दूसरे सिर पर जा बैठी।

वीक्तोर ने निकीता को आंख मारी और बोला –

"मैंने तुमसे कहा था न, इससे ज़रा बचकर रहना। शिकायतें करने का मर्ज़ है इसे!"

उसी रात को निकीता और वीक्तोर जब अंधेरे कमरे में अपने पलंग पर लेटे हुए थे तो निकीता ने सिर ढके ढके ही कम्बल के नीचे से पूछा –

"वीक्तोर, तुम सो गये क्या?"

"अभी तो नहीं... कुछ मालूम नहीं... क्या बात है?"

"सुनो तो वीक्तोर... मैं तुम्हें एक ख़तरनाक राज़ बताना चाहता हूं... वीक्तोर... तुम सोओ नहीं ... वीक्तोर, सुनो तो..."

"हुं... खर-र..." वीक्तोर के खर्राटे सुनाई देने लगे।

अलग स्लेज पर उपहार

पौ फटने के समय निकीता जब अभी नींद में ही था तो उसे घर की अंगीठियों में लकड़ियों के हिलाये-डुलाये जाने की आवाज़ सुनाई दी। फिर बाहरवाला दरवाज़ा ज़ोर से बन्द किया गया। यह झोंकिया था जो लकड़ियों और उपलों के गट्ठे लाया था।

ख़ुशी की अनुभूति के साथ निकीता की आंख खुली। आकाश साफ़ था, पाला कट रहा था।

खिड़की के शीशे पर पाले की मोटी तह जमी हुई थी और तरह तरह के फूल-पत्तों के डिज़ाइन बने हुए थे। वीक्तोर अभी सो रहा था। निकीता ने उसपर तकिया फेंका, मगर वीक्तोर ने थोड़ा खीझकर कम्बल सिर पर खींच लिया। ख़ुशी के कारण निकीता झटपट बिस्तर से उठा, उसने कपड़े पहने और सोचा—"कहां जाऊं?" वह अर्कादी इवानोविच की ओर भाग गया।

अर्कादी इवानोविच की तो उसी समय आंख खुली थी। वे लेटे-लेटे वही ख़त पढ़ रहे थे जिसे तीस बार पहले भी पढ़ चुके थे। निकीता को देखकर उन्होंने कम्बल सहित अपनी टांगें ऊपर को उठाईं, उन्हें पलंग पर ज़ोर से नीचे किया और चिल्ला उठे—

"यह तो कमाल ही हो गया! तुम सबसे पहले जाग गये!"

"अर्कादी इवानोविच, आज दिन कैसा सुहाना है!"

"हां, मेरे दोस्त, बहुत ही बढ़िया दिन है।"

"अर्कादी इवानोविच, मैं आपसे यह पूछना चाहता था," निकीता ने भरेठ पर अपनी उंगली फेरते हुए कहा, "आपको मेहमान बहुत पसन्द हैं?"

"तुम किसके बारे में पूछ रहे हो?"

"बच्चों के बारे में।"

"हुं, हुं... तुम क्या चाहते हो कि कौन-सा बच्चा मुझे पसन्द आये?"

अर्कादी इवानोविच ने यह बातचीत की तो साधारण ढंग से, मगर... बहुत जल्दी-जल्दी। वे तकिये पर कुहनियां टिकाये हुए निकीता की ओर देख रहे थे। यह सच है कि उनके होंठों पर मुस्कान नहीं थी, मगर वे निकीता को देख रहे थे बहुत ही ध्यान से। शायद अर्कादी इवानोविच भी कुछ जानते थे। निकीता अचानक मुड़ा, कमरे से बाहर भागा, उसने घड़ी भर कुछ सोचा और अहाते में चला गया।

नौकरों के क्वार्टरों, खड्ड में बने हुए स्नानागार, वर्फ़ से ढके सफ़ेद मैदान और उससे आगे यानी सारे गांव के ऊपर नीले धुएं के खम्भे से खड़े दिखाई दे रहे थे। रात भर में वृक्षों पर पाले की और मोटी तहें जम गई थीं और तालाब के किनारे वाले विराटकाय काले चिनार की शाखाएं बिल्कुल झुक गई थीं और पालेवाले नीले आकाश में बिल्कुल साफ़ नज़र आ रही थीं। वर्फ़ चमक और कचकचा रही थी। पाले के कारण नाक में खुजली होती थी और वह पलकों पर जमा जा रहा था।

पिछवाड़े के ओसारे के निकट राख का एक ढेर पड़ा था जिसमें से हल्का-हल्का धुआं निकल रहा था। वहीं शारोक और कातोक कुत्ते एक-दूसरे पर गुर्रा रहे थे। मीश्का कोर्याशोनोक मोटी-सी सोटी हाथ में लिये वर्फ़ पर लड़खड़ाता और अहाते को लांघता हुआ निकीता की ओर बढ़ा आ रहा था। वह वर्फ़ के जमे हुए गोलों से मानो हॉकी-सी खेलने जा रहा था। इसी समय गांव के दायीं ओर सड़क पर स्लेजों की क़तार-सी नज़र आई। वे एक-दूसरी के पीछे खड्ड में से निकलती और हिचकोले खाती, बर्फ़ पर नीची और काली-सी नज़र आती और तालाब के पास से गुज़रती हुई बांध की ओर वढ़ी जा रही थीं।

मीश्का कोर्याशोनोक ने दस्ताने से ढका हुआ अंगूठा नाक पर रख कर नाक सिनकी और कहा –

"ये हमारी स्लेजें शहर से लौटी हैं, उपहार लेकर।"

अब स्लेजें वर्फ़ से ढके हुए विल्लो वृक्षों द्वारा वनाई गई मेहराव के नीचे से गुज़रती हुई बांध को लांघ रही थीं। लड़कों को अव टूटती हुई वर्फ़ की कचकच, स्लेजों की पटरियों की रगड़ और घोड़ों की सांसें सुनाई दे रही थीं।

सदा की भांति स्लेजों के इस कारवां का नेतृत्व करता हुआ सबसे पहले अहाते में पहुंचा कारिन्दा निकीफ़ोर। वह कत्थई घोड़ी वेस्ता के साथ साथ चला आ रहा था। निकीफ़ोर मज़बूत काठी का बुज़ुर्ग था। वह पाले से ठिठुरे और सिरों पर रस्सियों से बंधे नमदे के जूते पहने हल्के क़दम रखता हुआ स्लेजों के पास से गुज़रा। उसके लम्बे और भेड़ की खाल के बने कोट के बटन खुले हुए थे, फ़र का कॉलर ऊपर को उठा था और उसकी फ़र की टोपी, दाढ़ी और भौंहों पर पाले की परतें जमी हुई थीं। पसीने के कारण वेस्ता घोड़ी का रंग गहरा नज़र आ रहा था, उसके अगल-बगल के पुट्ठों में ज़ोर की सांस आ-जा रही थी और वह ख़ुद भाप के बादल में लिपटी हुई सी थी। निकीफ़ोर रुका, मुड़ा और पाले से खरखरी हुई, मगर ऊंची आवाज़ में उसने पिछली स्लेजों को हांकनेवालों से चिल्लाकर कहा –

"अरे सुनते हो, खत्तियों की ओर मुड़ जाओ। आख़िरी स्लेज घर की ओर जाये!"

इस क़ाफ़िले में कुल मिलाकर सोलह स्लेजें थीं। घोड़े तेज़ी से चले जा रहे थे, हवा में घोड़ों के पसीने की गंध फैली हुई थी, स्लेजों की लोहे की पटरियों की रगड़ सुनाई दे रही थी, चाबुक सटकारे जा रहे थे और क़ाफ़िले के सभी ओर भाप का बादल छाया हुआ था।

जब आख़िरी स्लेज बांध लांघकर निकट आई तो निकीता फ़ौरन ही यह न जान पाया कि उसमें क्या है। उसमें कोई बड़ी-सी चीज़ थी, अजीब-सी शक्ल की, हरे रंगवाली जिसपर

लम्बी-सी लाल धारी बनी हुई थी। निकीता का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। इस स्लेज पर, जिसके साथ एक और स्लेज जोड़ी गई थी, दो चप्पुओं और नुकीले सिरेवाली एक नाव रखी हुई थी। नाव चूं-चर्र की आवाज़ करती हुई हिल-डुल रही थी। नाव की बग़ल में हरे रंग के दो चप्पू रखे थे और मस्तूल था जिसके सिरे पर तांबे का गोला लगा हुआ था।

तो यह था वह उपहार जिसकी ओर उस रहस्यपूर्ण पत्र में संकेत किया गया था।

क्रिसमस वृक्ष

पाले से ठिठुरा हुआ एक बड़ा-सा फ़र वृक्ष घसीटकर बैठक में लाया गया। लकड़ी के क्रास में उसे खड़ा करने के लिए पख़ोम देर तक कुल्हाड़ी से काट-छांट करता रहा। आख़िर वृक्ष खड़ा हो गया। वह इतना ऊंचा था कि उसका कोमल हरा सिरा छत को छूता हुआ झुक गया।

फ़र वृक्ष से ठंडक-सी आ रही थी। मगर कुछ देर बाद उसकी शाखाएं पाले की जकड़ से मुक्त होकर ऊपर को तन गईं, फैल गईं और घर भर में फ़र वृक्ष की गंध फैल गई। बालक रंग-बिरंगे काग़ज़ों की मालाएं और सजावटी चीज़ों से भरे हुए डिब्बे बैठक में ले आये, उन्होंने फ़र वृक्ष के क़रीब कुर्सियां रखीं और उसे सजाने लगे। मगर जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि चीज़ें नाकाफ़ी हैं। इसलिए उन्हें काग़ज़ चिपकाकर मिठाइयों के लिए और कटोरियां बनानी पड़ीं, सुनहरे अख़रोट बनाने और केकों और क्रीमिया के सेबों के गिर्द रुपहले तार लपेटने पड़े। बालकों ने इसी काम में सारी शाम लगा दी और आख़िर लील्या सिलवटें पड़ी हुई 'बो' वाला सिर कुहनियों पर रखकर सो गई।

क्रिसमस की शाम आई। फ़र वृक्ष की सजावट का काम पूरा हो गया। उसपर सुनहरे तार फैला दिये गये, रंग-बिरंगी काग़ज़ी मालाएं लटका दी गईं और छोटे-छोटे रंगीन शमादानों में मोमबत्तियां टिका दी गईं। जब सब कुछ तैयार हो गया तो मां ने कहा –

"बच्चो, अब यहां से भाग जाओ। ख़बरदार, जो शाम तक बैठक में आकर झांका भी।"

उस दिन उन्होंने देर से दोपहर का खाना खाया और सो भी जल्दी-जल्दी। बच्चों ने तो सिर्फ़ सेब की मिठाई खाई। घर में ख़ासा हंगामा मचा हुआ था। लड़के इधर-उधर भाग रहे थे, हर किसी से पूछते फिर रहे थे कि शाम कब होगी? और तो और अर्कादी इवानोविच (जिन्होंने लम्बे छोरवाला कोट और कलफ़ से अकड़ी हुई क़मीज़ पहन ली थी) भी यह नहीं जानते थे कि वक़्त कैसे काटें और सीटी बजाते हुए एक खिड़की से दूसरी खिड़की तक आ-जा रहे थे। लील्या अपनी मां के पास चली गई।

सूरज बहुत ही धीरे धीरे पृथ्वी की ओर सरक रहा था। वह गुलाबी हुआ, उसके ऊपर धुंधले-धुंधले से बादल बिखर गये और सफ़ेद बर्फ़ पर पड़ती हुई कुएं की बैंगनी परछाइयां लम्बी हो गईं। आख़िर मां ने लड़कों से कहा कि वे जाकर कपड़े बदल लें। निकीता के पलंग पर

नीली रेशमी क़मीज़ रखी थी जिसके कॉलर, कफ़ों और घेरे पर लहरदार बारीक बखिया किया

हुआ था। वहीं झब्बों और फुंदनों वाली रेशमी पेटी और मख़मली बिरजिस भी रखी हुई थी। वह कपड़े पहनकर मां के पास भाग गया। मां ने कंघे से उसके वालों में चीर निकाला, उसके कंधों को अपने हाथों में साधा, ग़ौर से उसके चेहरे को देखा और फिर उसे महोगनी की लकड़ी में जड़े हुए बड़े-से दर्पण के सामने ले गई।

निकीता ने दर्पण में देखा एक बना-ठना और सलीक़े का लड़का। वह सोचने लगा—

"क्या यह मैं ही हूं?"

"ओह, निकीता, निकीता," उसका सिर चूमते हुए मां ने गहरी सांस ली। "काश तुम हमेशा ही ऐसे अच्छे लड़के बने रहते!"

निकीता दबे पांव बरामदे में गया। उसने सफ़ेद पोशाक पहने हुए एक लड़की को बड़ी शान से अपनी ओर आते देखा। वह मलमल के पेटीकोट पर बढ़िया-सा सफ़ेद फ़ाक पहने थी, उसके बालों में बड़ी-सी सफ़ेद 'बो' लगी हुई थी और उसके चेहरे के (जो पहचान में नहीं आ रहा था) दोनों ओर मोटे-मोटे छः केश-कुण्डल लटके हुए थे जो उसके पतले-पतले कंधों को छू रहे थे। निकीता के निकट आकर लील्या ने मुंह बनाते हुए कहा—

"तुमने क्या मुझे भूत समझा है? ऐसे डर क्यों गये हो?" इतना कहकर वह पढ़ाई के कमरे में गई और टांगें अपने नीचे दबाकर सोफ़े पर बैठ गई।

निकीता भी कमरे में जाकर सोफ़े पर बैठ गया, मगर उसके दूसरे सिरे पर। कमरे में अंगीठी जली हुई थी, लकड़ियां चिटकती थीं और उनसे जलते हुए कोयले झड़कर गिर रहे थे। चमड़े की आरामकुर्सियों, दीवार पर लगे हुए सुनहरे चौखटे और अलमारियों के बीच रखी हुई पुश्किन की मूर्त्ति पर फड़फड़ाती हुई लाल रोशनी पड़ रही थी।

लील्या निश्चल बैठी थी। अंगीठी के प्रकाश से जब तब उसके गाल और उसकी उठी हुई नाक चमक उठती, तो वह बहुत भली लगती। वीक्तोर चमकते हुए बटनों वाली नीली और सुनहरे गोटे से सुसज्जित कॉलरवाली वर्दी पहने हुए आया। उसका कॉलर इतना तंग था कि उसे बातचीत करने में भी कठिनाई होती थी।

वीक्तोर भी चुपचाप आरामकुर्सी पर बैठ गया। पास ही बैठक थी जहां मां और आन्ना अपोल्लोसोव्ना कुछ बंडल खोल रही थीं, फ़र्श पर कोई चीज़ खड़ी करती हुई खुसुर-फुसुर कर रही थीं। बच्चों को ये आवाजें सुनाई दे रही थीं। वीक्तोर का मन हुआ कि चाबीवाले सूराख़ में से झांके, मगर उसे दूसरी ओर से काग़ज़ लगाकर बन्द कर दिया गया था।

कुछ देर बाद बरामदे का दरवाज़ा ज़ोर से बन्द हुआ, उन्हें बहुत-सी आवाज़ें और छोटे-छोटे पैरों की आहटें सुनाई दीं। गांव के बालक आये थे। चाहिए तो यह था कि वह भागकर उनके पास जाता, मगर निकीता तो जैसे जहां का तहां जमकर ही रह गया था। खिड़की पर पाले से बने हुए बेल-बूटों में से तन सहलाती हुई नीली-नीली रोशनी छन रही थी। लील्या ने बारीक और धीमी-सी आवाज़ में कहा—

"सितारा निकल आया है।"

इसी समय पढ़ाई के कमरे के दरवाज़े चौपट खोल दिये गये। बच्चे उछलकर सोफ़े से खड़े हुए। बैठक में फ़र्श से लेकर छत तक फैला हुआ क्रिसमस वृक्ष ढेरोंढेर मोमबत्तियों से जगमगा रहा था। वह तो जैसे अग्नि-वृक्ष लग रहा था जिसमें सोना, चिनगारियां और प्रकाश की लम्बी-लम्बी किरणें चमक रही थीं। उससे आनेवाला प्रकाश घना और सुहाना था और शंकुधर, मोम, नारंगियों और शहदवाले केकों की गन्ध से बोझल था।

बालक निश्चल और स्तम्भित खड़े थे। बैठक के दूसरे दरवाज़े भी खोल दिये गये और गांव के बालक अन्दर आये। वे एक-दूसरे के निकट होते हुए दीवार से सटते गये। उन्होंने अपने नमदे के बूटे उतार दिये थे। वे मोटी ऊनी जुराबें, लाल, गुलाबी और पीली क़मीज़ें पहने थे और पीले, लाल तथा सफ़ेद रूमाल बांधे थे।

मां ने पियानो पर पोल्का की धुन बजानी शुरू की। धुन बजाते हुए उसने मुस्कराकर वृक्ष की ओर देखा और गाने लगी –

टांगें तो लम्बी-लम्बी हैं सारस की।
ढूंढ़ न पाई राह मगर अपने घर की...

निकीता ने लील्या की ओर अपना हाथ बढ़ाया। लील्या ने उसके हाथ में अपना हाथ रख दिया, मगर वृक्ष की ओर देखती रही। पूरे का पूरा वृक्ष उसकी नीली आंखों में प्रतिबिम्बित हो रहा था, हर आंख में एक वृक्ष। बच्चे निश्चल खड़े थे।

अर्कादी इवानोविच भाग कर लड़के-लड़कियों की भीड़ की ओर गये, उनके हाथ थामे और लगे क्रिसमस वृक्ष के गिर्द तेज़ी से उछलने-कूदने। उनके कोट के छोर लहराने लगे। भागते-भागते उन्होंने और दो बच्चों के हाथ थाम लिये, फिर निकीता, लील्या और वीक्तोर को भी खींचा और आख़िर सभी बालक एक-दूसरे का हाथ पकड़कर क्रिसमस वृक्ष के गिर्द नाचने लगे।

गांव के बालक गा रहे थे –

छिपा रहा हूं मैं सोना, मैं सोना
छिपा रहा हूं मैं चांदी, मैं चांदी...

निकीता ने क्रिसमस वृक्ष से एक पटाख़ा तोड़कर ज़मीन पर दे मारा। उसके अन्दर से एक ऊंची नोकदार टोपी निकली जिसके सिरे पर सितारा लगा हुआ था। कुछ क्षण बाद सभी जगह पटाख़-पटाख़ पटाख़े फटने लगे, बारूद की गंध फैल गई और पतंगोंवाले पतले काग़ज़ की टोपियां सरसराने लगीं।

लील्या को जेबोंवाला काग़ज़ी पेशबन्द मिला। उसने उसे पहन लिया। उसके गाल सेबों की तरह लाल थे और उसके होंठों पर चाकलेट लगा हुआ था। जब भी वह क्रिसमस वृक्ष के नीचे एक बड़ी सी टोकरी पर रखी हुई बृहदाकार गुड़िया को उसके पूरे साज़-सामान के साथ देखती थी, उसे हंसी आ जाती थी।

वृक्ष के नीचे ही रंग-बिरंगे रूमालों में लिपटे हुए लिफ़ाफ़े रखे थे जिनमें लड़कों-लड़कियों के लिए उपहार थे। वीक्तोर को तोपों और तम्बुओं के साथ पूरी रेजीमेन्ट मिली और निकीता को असली चमड़े का ज़ीन, लगामें और चाबुक मिला।

अब अखरोटों के तोड़े जाने की आवाज़ सुनाई देने लगी, उनके छिलके पैरों के नीचे दब कर टूटने लगे। बालक अपने उपहारों को खोलते हुए नाकों से सूं-सूं कर रहे थे।

मां फिर से पियानो बजाने लगी, बालक क्रिसमस वृक्ष के गिर्द नाचने-गाने लगे। मोमबत्तियों की रोशनी अब धीमी हो गई थी। अर्कादी इवानोविच ने उछलते-कूदते हुए उन्हें बुझा दिया। क्रिसमस वृक्ष धुंधला-सा हो गया। मां ने पियानो बजाना बन्द कर दिया और बालकों से चाय पीने के लिए खाने के कमरे में चलने को कहा।

मगर अर्कादी इवानोविच ने यह मौक़ा भी हाथ से न जाने दिया। उन्होंने बालकों की एक लम्बी रेलगाड़ी-सी बना ली। ख़ुद इंजन की तरह सबसे आगे और पचीस बालक-बालिकाएं उनके पीछे खड़े हो गये। फिर वे बरामदे का लम्बा-सा चक्कर लगाते और भागते हुए खाने के कमरे की ओर चल दिये।

ड्योढ़ी में पहुंचकर लील्या बालकों की रेलगाड़ी से अलग हो गई। वह मुस्कराती आंखों से निकीता को देखती हुई दम लेने लगी। वे दोनों उन खूंटियों के निकट खड़े थे जहां फ़र के कोट लटके हुए थे।

"किसलिए हंस रहे हो तुम?" लील्या ने पूछा।

"मैं नहीं, यह तो तुम हंस रही हो," निकीता ने जवाब दिया।

"तुम मुझे घूर क्यों रहे हो?"

शर्म से निकीता का मुंह लाल हो गया। पर साथ ही वह लील्या के और निकट हो गया और ख़ुद भी कुछ न समझ पाते हुए वह उसकी ओर झुका और उसने उसे चूम लिया। लील्या ने भी जल्दी-जल्दी ये शब्द कह डाले –

"तुम भले लड़के हो। मैंने इसीलिए तुमसे अब तक यह नहीं कहा था कि किसी और को इसका पता न चल जाये। यह राज़ है!"

वह इतना कहकर मुड़ी और खाने के कमरे की ओर भाग गई।

चाय के बाद अर्कादी इवानोविच ने बुझारतें बूझने और दण्ड देने का खेल शुरू किया। मगर बालक थक गये थे, उन्होंने ख़ूब पेटभर कर खाया था और इसलिए खेल उनकी समझ में नहीं आ रहा था। खेल के दौरान ही बुन्दनियोंवाली क़मीज़ पहने हुए एक छोटा-सा लड़का ऊंघने लगा, कुर्सी से नीचे जा गिरा और गला फाड़कर रोने लगा।

मां ने कहा कि क्रिसमस त्योहार की पार्टी अब ख़त्म होती है। बालक बरामदे में गये जहां दीवार के साथ उनके घुटनों तक के नमदे के जूते और भेड़ की खाल के कोट रखे हुए थे। उन्होंने कोट और जूते पहने तथा पाले से ठिठुरी हुई रात में सभी एकसाथ बाहर आ गये।

निकीता बालकों को छोड़ने के लिए बांध तक गया। जब वह अकेला घर लौटा तो आकाश के एक पीले और रंग-बिरंगे कोने में बहुत ऊंचाई पर चांद चमक रहा था। बांध पर और बाग़ में खड़े हुए वृक्ष बहुत बृहदाकार नज़र आ रहे थे और सफ़ेद सफ़ेद थे। चांदनी में वे और भी अधिक लम्बे मालूम हो रहे थे। निकीता के दायीं ओर पाले का सफ़ेद रेगिस्तान था और वह अभेद्य अन्धेरे में दूर-दूर तक फैला हुआ था। बड़े सिर और लम्बी-लम्बी टांगोंवाली एक परछाईं निकीता के साथ-साथ चल रही थी।

निकीता को ऐसे प्रतीत हुआ मानो वह सपने में किसी परी-देश में चला जा रहा है। केवल किसी परी-देश में ही ऐसी अजीब-सी और साथ ही ऐसी उल्लासपूर्ण अनुभूति होती है।

वीक्तोर के साथ बुरी हुई

इन्हीं दिनों वीक्तोर की मीश्का कोर्याशोनोक के साथ गहरी छनने लगी थी। एक दिन वह उसके साथ निचले तालाब पर "बिल्लियां" जलाने के लिए गया। उनमें से एक "बिल्ली" इतनी बड़ी थी कि बर्फ़ में से उसकी लपटें आदमी के क़द से भी ऊंची उठीं। तब उन्होंने तालाब से आगे खड्ड में एक क़िला बनाया – बर्फ़ की मीनार और उसके गिर्द झरोखों और फाटकों वाली दीवार बनाई। इसके बाद वीक्तोर ने कोंचान टोली के लड़कों को यह ख़त लिखा –

"ए कोंचान टोलीवालो, भेंगी आंखों और चूहों को नाल लगानेवाले लुहारो, हम तुम्हारी वह पिटाई करेंगे कि उम्रभर याद करोगे। हम अपने क़िले में तुम्हारा इन्तज़ार करेंगे।

वीक्तोर बाबकिन, क़िले का कमांडर,
हाई स्कूल की २ री कक्षा का छात्र।"

इस पत्र को एक डंडे पर कील ठोंक कर लगा दिया गया। मीश्का कोर्याशोनोक इस डंडे को लेकर गांव में गया और उसने वह अर्तामोन के झोंपड़े की बग़ल में बर्फ़ के ढेर में गाड़ दिया। स्योम्का, ल्योन्का और छोटा अर्तामोन, अल्योश्का और काले कानोंवाला वान्का तथा साबोस्का का भतीजा पेत्रूश्का डंडे की बग़ल में टीले पर जा खड़े हुए, कोंचान टोली के लड़कों को देर तक धमकियां देते और उनपर बर्फ़ के गोले फेंकते रहे। इसके बाद वे मीश्का के साथ आकर क़िले में बैठ गये।

वीक्तोर ने उन्हें बर्फ़ के छोटे-बड़े गोले बनाने का आदेश दिया। ये गोले उन्होंने क़िले के अन्दर दीवार के साथ जमा कर दिये, मीनार पर सरकंडों के साथ एक डंडा खड़ा कर दिया और दुश्मन का इन्तज़ार करने लगे।

 निकीता यहां आया, उसने किलेबन्दी देखी और जेब में हाथ डालकर बोला –

"कोई नहीं आयेगा, तुम्हारा क़िला किसी काम का नहीं, मैं तुम लोगों के साथ नहीं खेलूंगा, घर जा रहा हूं।"

"छोकरी से खेलोगे," वीक्तोर ने दीवार के पास खड़े होकर कहा। "छोकरियों का दीवाना!"

अर्तामोन के लड़के ठठाकर हंसे, काले कानोंवाले वान्का ने मुंह में उंगलियां डालकर सीटी बजाई।

निकीता ने कहा –

"अगर मैं चाहूं तो तुम सभी को क़िले से निकाल बाहर करूं। मगर तुम लोग इस लायक़ नहीं हो कि तुम्हारी ख़ातिर मैं अपने हाथों को तकलीफ़ दूं।" इतना कह कर उसने वीक्तोर को ज़बान दिखाई और तालाब लांघता हुआ घर की ओर चला गया।

निकीता पर पीछे से बर्फ़ के गोले फेंके गये, मगर उसने तो मुड़कर भी नहीं देखा।

क़िले में बैठे हुए लड़कों को बहुत देर तक इन्तज़ार नहीं करना पड़ा। गांव की ओर से जमे हुए पानी पर से गुज़र कर कोंचान टोली के लड़के आये। घुटनों तक बर्फ़ से लथपथ वे सीधे क़िले के क़रीब पहुंचे। कोई पन्द्रह होंगे वे।

वीक्तोर ने डींग हांकी कि वह उन सबका भुरकस बना देगा और उसने पाले से लाल हुई अपनी नाक से सूं-सूं की। घबराहट से उसकी पुतलियां इधर-उधर डोलने लगीं। कोंचान टोली के लड़के क़िले के फाटक पर रुक गये, उनमें से कुछेक बर्फ़ पर बैठ गये। उनके साथ अपनी मां की शॉल लपेटे हुए छोटा-सा लड़का भी था। स्त्योप्का कार्नाऊश्किन कोंचान टोली का अगुआ था। उसने क़िले को ग़ौर से देखा और दीवार के पास जा खड़ा हुआ।

"चमकते हुए बटनोंवाला यह लड़का हमारे हवाले कर दो," उसने कहा। "हम बर्फ़ में ज़रा उसके कान मलेंगे।"

वीक्तोर ने चिन्तित होकर नाक सुड़की। मीश्का फुसफुसाया – "उस पर बर्फ़ का बड़ा-सा ढेला दे मारो। दे मारो भी!" वीक्तोर ने बर्फ़ का ढेला उठाया और फेंका, मगर वह निशाने पर ठीक नहीं बैठा। स्त्योप्का अपने लड़कों के बीच लौट गया। कोंचान टोली के लड़के उठकर खड़े हुए और बर्फ़ के गोले बनाने लगे। इन पर क़िले की ओर से तड़ातड़ बर्फ़ के गोले पड़ने लगे। अर्तामोन के बेटे तो ख़ास तौर पर बहुत अच्छे निशानेबाज़ थे। मां की शॉल लपेटे हुए लड़के को तो उन्होंने फ़ौरन चित कर दिया। कोंचान टोली के लड़कों ने जवाबी कार्रवाई शुरू की। दोनों ओर से बर्फ़ के ढेरों गोले बरसने लगे। मीनार पर खड़ा हुआ डंडा नीचे गिर गया।

काले कानोंवाला वान्का दीवार से गिर पड़ा और उसने कोंचान टोली के लड़कों के सामने हार मान ली। अचानक वीक्तोर की टोपी उतरकर दूर जा गिरी और बर्फ़ का एक और गोला उसके मुहं पर आकर लगा। कोंचान टोली के लड़कों ने शोर मचाते, हो-हल्ला करते और सीटियां बजाते हुए क़िले पर धावा बोल दिया...

क़िले की दीवार टूट गई और रक्षक सरकंडों को लांघते जमे हुए तालाब के पार भाग गये।

दीवालघड़ी के फूलदान में क्या था

निकीता ख़ुद भी यह नहीं जानता था कि लड़कों के साथ खेलना उसे क्यों अच्छा नहीं लगा था। वह घर लौटा, उसने अपना टोप और कोट उतारा। वह जब कमरों को लांघ रहा था तो उसने लील्या को अपनी मां से यह कहते सुना –

"मां, मुझे साफ़ कपड़े का एक टुकड़ा तो दीजिये। मेरी नई गुड़िया वालेन्तीना की टांग पर चोट लग गई है, मुझे उसकी तन्दुरुस्ती के बारे में फ़िक्र हो रही है।"

निकीता जहां का तहां खड़ा रह गया। वह उन दिनों लगातार अनुभव होनेवाली ख़ुशी को फिर से अनुभव कर रहा था। इतनी अधिक थी यह ख़ुशी कि उसे अपने अन्दर कोई छोटा-सा बाजा हिलता-डुलता और उससे कोई प्यारी और लुभावनी-सी धुन निकलती प्रतीत हुई।

निकीता पढ़ाई के कमरे में गया और सोफ़े पर उसी जगह जा बैठा जहां दो दिन पहले लील्या बैठी थी। उसने अपनी आंखें सिकोड़ीं और पाले द्वारा खिड़कियों के शीशों पर बनाये गये नमूनों को ग़ौर से देखने लगा। परी-देश के नाजुक और अद्भुत नमूनों जैसे थे ये। उस परी-देश के, जहां से उसे मूक जादुई संगीत-लहरियां सुनाई दे रही थीं। वहां शाखाएं थीं, पत्ते थे, वृक्ष थे और जानवरों तथा इन्सानों की अजीबोग़रीब आकृतियां थीं। निकीता इन नमूनों को देख रहा था और उसे ऐसे महसूस हो रहा था मानो शब्द आपस में जुड़ते जाते थे और कोई गीत गाते थे। इन गाते हुए अद्भुत शब्दों से उसे अपने बालों में झनझनाहट-सी अनुभव हुई।

निकीता धीरे से सोफ़े पर से उठा, पिता की मेज़ से उसने काग़ज़ का एक टुकड़ा उठाया और बड़े-बड़े अक्षरों में कविता की ये पंक्तियां लिखनी शुरू कीं –

ओह जंगल, मेरे जंगल,
तुम जादू की दुनिया हो, मेरे जंगल,
तुम में तरह-तरह के पक्षी...
तरह-तरह के जीव-जन्तु हैं...
ख़ुशदिल जंगली मानव भी...
मुझको तुमसे बहुत प्यार है
बहुत प्यार मुझको तुमसे, रे जंगल...

जंगल के बारे में और अधिक पंक्तियां रचना उसे कठिन प्रतीत हुआ। निकीता ने क़लम का सिरा कुतरा और छत की ओर ताका। हां, उसने जो शब्द लिखे थे वे वही नहीं थे जो कुछ क्षण पहले अपने आप गा उठे थे और जो अभिव्यक्ति पाने के लिए बेचैन थे।

निकीता ने कविता पढ़ी। फिर भी वह उसे रुची। उसने काग़ज़ के टुकड़े को आठ तहें दीं और उसे जेब में डालकर खाने के कमरे की ओर चल दिया जहां लील्या खिड़की के पास

बैठी हुई सिलाई कर रही थी। जेब में रखे हुए काग़ज़ को वह जिस हाथ से थामे था, वह

पसीने से तर हो गया था, मगर फिर भी निकीता अपनी कविता लील्या को दिखाने का इरादा न बना पाया।

झुटपुटा होने पर वीक्तोर घर लौटा, ठण्ड से अकड़ा हुआ और सूजी हुई नाक के साथ। आन्ना अपोल्लोसोव्ना ने परेशानी से हाथ बजाते हुए कहा—

"फिर किसी ने तुम्हारी नाक तोड़ डाली! किससे लड़-भिड़ कर आये हो? फ़ौरन जवाब दो मुझे।"

"किसी से भी लड़ा-भिड़ा नहीं। मेरी नाक तो अपने आप ही सूज गई है," वीक्तोर ने उदासी से उत्तर दिया और अपने कमरे में जाकर पलंग पर लेट रहा।

निकीता भी कमरे में आया और अंगीठी के पास खड़ा हो गया। हरे हरे आकाश में कुछ सितारे झिलमिला उठे, बिल्कुल इस तरह मानो सुई मारकर उन्हें आकाश की चादर में से बाहर निकाल लिया गया हो। निकीता ने पूछा—

"चाहो तो तुम्हें एक कविता सुनाऊं, जंगल के बारे में?"

वीक्तोर ने कंधे झटके और पलंग की टेक पर अपने पैर रख कर बोला—

"तुम इस स्त्योप्का कार्नाऊश्किन को कह देना कि वह फिर कभी मेरे सामने न आये।"

"जानते हो," निकीता ने कहा, "इस कविता में एक जंगल का वर्णन किया गया है। यह जंगल ऐसा है जिसे देखना मुमकिन नहीं, मगर इसके बारे में जानते सभी हैं... अगर तुम्हारा दिल परेशान है तो तुम यह कविता पढ़ लो, तुम्हारी सारी परेशानी दूर हो जायेगी। या फिर कभी-कभी ऐसा भी होता है कि सपने में कुछ नज़र आता है, कुछ बहुत ही अद्भुत। यह समझना मुमकिन नहीं होता कि वह क्या है, मगर होता है बहुत ही अद्भुत। पर जब आंख खुलती है तो किसी तरह भी याद नहीं आता कि वह क्या था... समझे न?"

"नहीं, कुछ नहीं समझा," वीक्तोर ने उत्तर दिया। "और तुम्हारी कविता भी मैं नहीं सुनना चाहता।"

निकीता ने गहरी सांस ली, कुछ क्षण अंगीठी के पास खड़ा रहा और फिर कमरे से बाहर चला गया। अंगीठी में जल रही आग की रोशनी से बड़ी ड्योढ़ी रोशन थी। वहीं अंगीठी के सामने भेड़िये की खाल से ढके हुए सन्दूक़ पर लील्या बैठी थी और चिंगारियों के खेल का मज़ा ले रही थी।

निकीता उसके क़रीब सन्दूक़ पर बैठ गया। ड्योढ़ी में अंगीठी की गरमाहट और खूंटी पर लटके हुए फ़र कोटों की गन्ध फैली थी। बहुत बड़ी अलमारी की दराज़ों में रखी हुई पुरानी चीज़ों की गन्ध भी आ रही थी, मन को उदास करनेवाली।

"आओ, कुछ बातचीत करें," लील्या ने सोचते हुए कहा। "मुझे कोई दिलचस्प बात सुनाओ!"

"कहो तो तुम्हें वह सपना सुनाऊं जो मैंने कुछ ही दिन पहले देखा था?"

"हां, हां, सुनाओ! ज़रूर सुनाओ!"



निकीता ने विल्ले और सजीव हो उठनेवाले चित्रों के बारे में बताना शुरू किया। उसने बताया कि कैसे वह उड़ता रहा और छत के नीचे उड़ते हुए उसने क्या कुछ देखा।

घुटनों पर उस गुड़िया को टिकाये हुए जिसकी टांग पर पट्टी बांध दी गई थी, लील्या बहुत ध्यान से उसकी बातें सुन रही थी।

निकीता जब सपने के बारे में सुना चुका तो लील्या उसकी ओर मुड़ी। वह डर और जिज्ञासा से आंखें फाड़ फाड़ कर उसे देख रही थी। उसने फुसफुसाकर पूछा—

"फूलदान में क्या था?"

"मालूम नहीं।"

"उसमें ज़रूर कोई दिलचस्प चीज होगी।"

"मगर मैंने तो यह सपने में देखा था।"

"फिर भी तुम्हें उसे देखना चाहिए था। तुम लड़के हो, कुछ भी नहीं समझते। यह बताओ, क्या तुम्हारे घर में सचमुच ऐसा फूलदान है?"

"उस तरह की घड़ी तो हमारे घर में है, मगर फूलदान का मुझे कुछ ख़्याल नहीं। घड़ी तो दादा के पढ़ाई के कमरे में है, ख़राब हुई पड़ी है।"

"आओ, चलकर देखें।"

"वहां अन्धेरा है।"

"हम क्रिसमस वृक्ष से लालटेन उतार लेंगे। तुम जाकर लालटेन ले आओ। कृपया जाओ।"

निकीता भागकर बैठक में गया, उसने क्रिसमस वृक्ष से रंगीन अभ्रक की खिड़कियोंवाली लालटेन उतारी, उसे जलाया और हॉल में वापिस चला गया।

लील्या ने एक बड़ी-सी ऊनी शॉल कंधों पर डाल ली। बालक दबे पांव बरामदे में आये और चुपके-चुपके गर्मी के कमरों में जा पहुंचे। ऊंची छतवाले अन्धेरे दीवानख़ाने की खिड़कियों पर पाले की मोटी परत जमी हुई थी। चांदनी में उन पर शाखाओं की भारी और काली परछाइयां पड़ रही थीं। वहां ठण्ड थी और सड़े हुए सेबों की गन्ध फैली हुई थी। बग़ल के कमरे में खुलनेवाले बलूत के दरवाज़े अधखुले थे।

"घड़ी वहां अन्दर है क्या?" लील्या ने पूछा।

"नहीं, और आगे, तीसरे कमरे में।"

"निकीता, तुम्हें किसी चीज से भी डर नहीं लगता?"

निकीता ने दरवाज़े को खींचा। वह दर्दीली आवाज़ में चरमराया और यह आवाज सभी ख़ाली कमरों में धीरे से गूंज गई। लील्या ने निकीता की बांह थाम ली। लालटेन हिल गई और उसकी लाल और नीली किरणें दीवारों पर हिलने-डुलने लगीं।

बालक पंजों के बल अगले कमरे में पहुंचे। यहां खिड़कियों में से छन रही चांदनी लकड़ी के फ़र्श पर नीले चौके बनाती हुई लेटी थी। दीवार के साथ धारीदार आरामकुर्सियां रखी थीं

ग्रौर कोने में टेढ़ी-मेढ़ी टांगोंवाला सोफ़ा टिका था। निकीता का सिर घूमने लगा – बिल्कुल ऐसा ही तो कमरा उसने सपने में देखा था।

"वे हमारी ग्रोर देख रहे हैं," बूढ़े ग्रौर बुढ़िया के दीवार पर लगे चित्रों की ग्रोर संकेत करते हुए लील्या फुसफुसाई।

बालक भागकर कमरे में गये ग्रौर उन्होंने दूसरा दरवाज़ा भी खोल दिया। कमरे में चांदनी खिली हुई थी। ग्रलमारियों के शीशे ग्रौर उनके ग्रंदर रखी हुई किताबों की सुनहरी जिल्दें चांदनी में ख़ूब चमक रही थीं। ग्रंगीठी के ऊपर घुड़सवार की पोशाक पहने ग्रौर चांदनी में नहाई हुई महिला की तस्वीर रहस्यपूर्ण ढंग से मुस्करा रही थी।

"यह कौन है?" निकीता के निकट होते हुए लील्या ने पूछा।

"यह वही है," निकीता ने फुसफुसाकर जवाब दिया।

लील्या ने सिर हिलाकर हामी भरी ग्रौर कमरे में नज़र दौड़ाते हुए ग्रचानक चिल्ला उठी – "फूलदान! निकीता, वह रहा फूलदान!"

कमरे के सिरे पर महोगनी के केस में एक बड़ी-सी घड़ी लटकी हुई थी, उसका पेण्डुलम गतिहीन था। घड़ी के ऊपर, लकड़ी के दो कंगूरों के बीच बबर के सिर से सुसज्जित कांसे का एक फूलदान था। न जाने क्यों, मगर उसकी ग्रोर निकीता का पहले कभी ध्यान नहीं गया था। हां, ग्रब उसे पहचानने में देर न लगी। यह वही फूलदान था जो उसने सपने में देखा था।

उसने घड़ी के साथ एक कुर्सी टिकाई, उसपर चढ़ा ग्रौर पंजों के बल खड़े होकर फूलदान में ग्रपना हाथ डाला। उसके तल में उसकी उंगलियां धूल में सन गईं ग्रौर उसे किसी सख़्त-सी चीज़ की ग्रनुभूति हुई।

"मिल गई!" उस चीज़ को मुट्ठी में कसकर बन्द करते ग्रौर फ़र्श पर कूदते हुए निकीता ने कहा।

इसी समय ग्रलमारियों के पीछे से घुर्र-घुर्र की ग्रावाज़ हुई, दो बैंगनी ग्रांखें चमक उठीं ग्रौर यहां चूहों का शिकार करने के लिए ग्राया हुग्रा बिल्ला, वासीली वासील्येविच, उछलकर सामने ग्रा गया।

लील्या हाथ झटकती हुई भागी ग्रौर निकीता उसके पीछे-पीछे। वह बेहद डर गया था। उसे ऐसी ग्रनुभूति हुई मानो किसी ने उसके बालों को छुग्रा हो। बिल्ला बालकों से ग्रागे निकल गया ग्रौर ग्राहट किये बिना तथा ग्रपनी पूंछ झुकाये हुए चांदनी में नहाये कमरों को लांघता चला गया।

बालक भागकर ड्योढ़ी में पहुंचे ग्रौर ग्रंगीठी के सामने फिर से सन्दूक़ पर जा बैठे। डर के मारे मुश्किल से ही उनकी सांस ग्रा जा रही थी।

"हूं, तो फूलदान में से क्या चीज़ मिली है?" निकीता की ग्रांखों में झांकते हुए लील्या ने पूछा।

निकीता ने मुट्ठी खोली। उसकी हथेली में नीलम जड़ी एक पतली-सी ग्रंगूठी थी। लील्या ग्रवाक्-सी रह गयी, उसने हाथ बजाये।

"अंगूठी!"

"यह जादुई अंगूठी है," निकीता ने कहा।

"सुनो तो, मगर हम इसका क्या करेंगे?"

निकीता ने माथे पर बल डाले, लील्या का हाथ पकड़ा और उसकी तर्जनी में अंगूठी पहनाने लगा।

"नहीं नहीं, मुझे क्यों पहना रहे हो?" लील्या ने पूछा। उसने हीरे की ओर देखा, मुस्कराई, गहरी सांस ली और निकीता के गले में बाहें डालकर उसे चूम लिया।

निकीता ऐसे लाल हो गया कि उसे अंगीठी से दूर हटना पड़ा। उसने अपना पूरा साहस बटोरकर कहा –

"यह भी तुम्हारे लिए है," इतना कहकर उसने अपनी जेब से आठ बार तह किया हुआ काग़ज़ का वह टुकड़ा निकाला जिसपर कविता लिखी हुई थी और लील्या को दे दिया।

लील्या ने वह काग़ज़ खोला, होंठ हिलाते हुए उसे पढ़ा और फिर सोचते हुए कहा –

"धन्यवाद, निकीता। तुम्हारी यह कविता मुझे बहुत अच्छी लगी है!"

आख़िरी शाम

शाम की चाय के समय मां ने कई बार आन्ना अपोल्लोसोव्ना की आंखों में झांका और कंधे झटके। अर्कादी इवानोविच अपने गिलास को एकटक देख रहे थे। उनका चेहरा भावशून्य था। उसे देखकर ऐसी अनुभूति होती थी कि अगर इस व्यक्ति की हत्या भी कर दी जाये, तो भी यह उफ़ नहीं करेगा। आन्ना अपोल्लोसोव्ना ने गर्मागर्म मीठी पावरोटियों के साथ क्रीमवाली चाय का पांचवां प्याला ख़त्म किया, अपने सामने से प्याले, प्लेटें और पावरोटियों के कण हटाकर मेज़ पर कुछ जगह साफ़ की और अपनी बड़ी-सी हथेली वहां टिका कर भारी-भरकम आवाज़ में बोली –

"नहीं, नहीं, हरगिज़ नहीं, अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना। मैंने जो कहा है वही होगा। उसे पत्थर की लकीर समझो। थोड़े दिन तक ही मेहमान रहने में ज़्यादा मज़ा है। हां, तो बच्चो," वह मुड़ी और उसने अपनी तर्जनी वीक्तोर की पीठ में घुसेड़ी ताकि वह कूबड़ निकाल कर न बैठे, "कल सोमवार है। ज़ाहिर है कि तुम्हें तो उसका ध्यान नहीं होगा। चाय ख़त्म करो और फ़ौरन जाकर सो रहो। कल पौ फटते ही हम यहां से रवाना हो जायेंगे।"

वीक्तोर ने चुपचाप अपने होंठ आगे को फैला लिये, नाक से भी आगे। लील्या ने झटपट आंखें झुका लीं और चाय के प्याले पर झुक गई। निकीता की आंखों में अन्धेरा-सा छा गया और उसे ऐसे प्रतीत हुआ मानो लैम्प के शोले से चिंगारियां निकल रही हों। उसने मुंह फेर लिया और बिल्ले वासीली वासील्येविच की ओर देखने लगा।

बिल्ला धुले हुए साफ़-सुथरे फ़र्श पर बैठा पिस्तौल की तरह तानी हुई अपनी पिछली टांग को चाट रहा था। उसकी आंखें सिकुड़ी हुई थीं। बिल्ला न उदास था न ख़ुश। उसे कहीं भी जाने की जल्दी नहीं थी। "कल तुम इन्सानों का काम-काज का दिन शुरू हो जायेगा," उसने सोचा, "तुम फिर से हिसाब के सवाल हल करोगे और इमला लिखोगे। मगर मैंने तो न छुट्टियां मनाई हैं, न कविताएं रची हैं, न किसी लड़की को चूमा है। मेरा तो कल भी हर दिन जैसा ही रहेगा।"

वीक्तोर और लील्या ने चाय ख़त्म की। अपनी मां की घनी भौंहों की ओर देखते हुए, जो तनने लगी थीं, उन्होंने शुभरात्रि कहा और निकीता के साथ कमरे से बाहर चले गये।

"वीक्तोर!" आन्ना अपोल्लोसोव्ना ने पुकार कर कहा।

"क्या है मां?"

"तुम चल कैसे रहे हो?"

"कैसे चल रहा हूं मां?"

"जैसे कोई तुम्हें रस्सी से बांध कर खींचे लिये जा रहा हो... सीधे चलो। कमरे में चक्कर मत काटो, वह देखो, वह रहा दरवाज़ा। तनकर चलो। भगवान जाने, तुम अपनी ज़िन्दगी में कुछ कर-धर भी पाओगे या नहीं!"

बालक बाहर चले गये। गर्म और धुंधली-धुंधली ड्योढ़ी में पहुंचकर, जहां से लड़कों को दायीं ओर जाना था, निकीता लील्या के सामने खड़ा हो गया और अपने होंठ काटते हुए बोला –

"तुम गर्मियों में हमारे यहां आओगी?"

"यह तो मेरी मां ही बता सकती है," नज़र झुकाये हुए ही लील्या ने अपनी पतली-सी आवाज़ में जवाब दिया।

"मुझे ख़त लिखोगी?"

"हां, लिखूंगी।"

"अच्छा, तो नमस्ते।"

"नमस्ते, निकीता।"

लील्या ने सिर का रिबन झटका और अपनी उंगलियों के सिरे निकीता के हाथ से मिलाकर अपने कमरे की ओर चल दी। वह तनकर और सधे-सधाये क़दम रखती हुई चलती गई। उसने तो मुड़कर भी नहीं देखा। उसे जाते देखकर यह भांपना कठिन था कि उस समय वह क्या सोच रही थी। "बहुत ही धुन्नी लड़की है," आन्ना अपोल्लोसोव्ना अक्सर कहती थी।

वीक्तोर एक टोकरी में अपनी किताबें और खिलौने समेटते, तस्वीरों को उखाड़कर छोटे-से डिब्बे में बन्द करते और मेज़ के नीचे अपने क़लमतराश चाक़ू को ढूंढ़ते हुए कुछ बड़बड़ाता रहा। इस बीच निकीता मौन साधे रहा। उसने झटपट कपड़े उतारे, बिस्तर में घुसकर कम्बल ओढ़ लिया और ऐसे ज़ाहिर किया मानो सो रहा हो।

निकीता को ऐसे लगा कि दुनिया में प्रलय होनेवाली है। जब उसकी ग्रांखों में नींद घिरती ग्रा रही थी तो उसकी बन्द ग्रांखों के सामने बालों में लगी हुई एक बहुत बड़ी 'बो', मानो दीवार पर परछाई बनकर झलकी। यह वह 'बो' थी जिसे वह ज़िन्दगी भर नहीं भूल पायेगा। नींद में उसे कुछ ग्रावाजें सुनाई दीं, कोई उसके बिस्तर के क़रीब ग्राया ग्रौर ग्रावाजें फिर से दूर हो गईं। सपने में उसे पंजों जैसे बड़े-बड़े गर्म-गर्म पत्ते, विराट वृक्ष ग्रौर घने जंगल में ग्रासानी से नज़र ग्रा जानेवाला लाल-सा रास्ता दिखाई दिया। प्रकाश के कारण लाल लाल हुग्रा यह ग्रजीब-सा जंगल उसे बहुत ही सुहाना लगा। किसी ऐसी उदासी के कारण जिससे वह सर्वथा ग्रनजान था, उसका मन रोने को हो रहा था। ग्रचानक पत्तों के बीच से सुनहरा चश्मा लगाये हुए एक रेड इंडियन सामने ग्राया ग्रौर गरजते हुए बोला – "ग्ररे, तुम ग्रभी तक सो रहे हो!"

निकीता ने ग्रांखें खोलीं। सुबह का सुहाना प्रकाश उसके चेहरे को चूम रहा था। ग्रर्कादी इवानोविच सामने खड़े पेंसिल का सिरा ग्रपनी नाक पर मारते हुए कह रहे थे –

"उठो, उठो, रे शैतान!"

जुदाई

जनवरी के ग्रन्त में निकीता के पिता वासीली निकोल्येविच का यह ख़त ग्राया –

"...मैं बहुत परेशान हूं। प्यारी साशा, लगता है कि विरासत का झंझट ग्रभी बहुत समय तक मुझे घर नहीं लौटने देगा। सम्भवतः मुझे दौड़-धूप करने के लिए मास्को जाना होगा। ख़ैर, जो भी हो, लेण्ट के मौक़े पर मैं ज़रूर तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा..."

ख़त पढ़कर मां बहुत उदास हो गई ग्रौर शाम को उसने वह ख़त ग्रर्कादी इवानोविच को दिखाया।

"भाड़ में जाये यह विरासत का मामला, ग्रगर इसके कारण इतनी परेशानियों से दो-चार होना ज़रूरी है। जाड़े भर एक-दूसरे से जुदा रहे हैं। मुझे तो ग्रब ऐसे लगता है कि निकीता ग्रपने बाप को भूलने लगा है।"

मां दूसरी ग्रोर मुंह करके ग्रंधेरी ग्रौर पाले से जमी हुई खिड़की को घूरने लगी।

बाहर ग्रन्धेरा था ग्रौर इतने ज़ोर का पाला पड़ रहा था कि बगीचे में वृक्ष चिटक रहे थे, ग्रटारी की शहतीरियां इतने ज़ोर से चरमरा उठती थीं कि सारा घर हिलने लगता था। ग्रगली सुबह उन्हें बर्फ़ पर मरी हुई गौरैयां पड़ी मिलेंगी। मां ने रूमाल से धीरे से ग्रांखें पोंछीं।

"हां, जुदाई, जुदाई," ग्रर्कादी इवानोविच बड़बड़ाये। ज़ाहिर था कि उन्हें ग्रपनी जुदाई की कसक ग्रनुभव हो रही थी। उनका हाथ जेब में पड़े हुए ख़त को टटोलने लगा।

निकीता इस समय दक्षिणी ग्रमरीका का नक़्शा बना रहा था। उस दिन मां ने उसे डांटा-डपटा था। वह उत्तेजित थी ग्रौर उसने निकीता के दिमाग़ में यह बात डालने की कोशिश की

थी कि वह छुट्टियों के दौरान ग्रालसी ग्रौर कामचोर हो गया है ग्रौर इस तरह वह हल्के के किसी दफ़्तर में क्लर्क या बेज़ेनचूक स्टेशन पर नार बावू बनकर रह जायेगा। "ऊट-पटांग तस्वीरें बनाने के बजाय," मां ने कहा था, "ग्राज शाम को तुम दक्षिणी ग्रमरीका का नक़्शा बनाना।"

निकीता दक्षिणी ग्रमरीका का नक़्शा बना रहा था, मगर लगातार यही सोच रहा था कि क्या वह मचमुच ग्रपने पिता को भूल गया है? नहीं ऐसा कुछ नहीं है। ग्रमजन नदी की जगह, उस बिन्दु पर, जहां देशान्तर ग्रौर ग्रक्षांश रेखाएं एक-दूसरी को काटती हैं, उसे ग्रपने पिता का चेहरा दिखाई दिया – लाल लाल गाल, चमकती ग्रांखें, मोतियों जैसे दांत, खिला हुग्रा चेहरा, दो हिस्सों में विभाजित काली दाढ़ी ग्रौर ऊंचे ठहाकोंवाली गूंजती ग्रावाज़। उनके चेहरे को एकटक निहारते ग्रौर उनके क़िस्से-कहानियों को सुन सुनकर लोट-पोट होते हुए घंटों गुज़र जाते थे। मां ग्रक्सर ग़ैरज़िम्मेदारी ग्रौर लापरवाही के लिए उनकी ग्रालोचना करती, मगर वास्तव में उनकी यह लापरवाही उनकी बेहद ज़िन्दादिली का ही नतीजा थी। मिसाल के तौर पर उनके दिमाग़ में ग्रचानक यह ख़्याल समा गया कि जागीर के तीन तालाबों में भरे हुए मेंढक योंही बेकार जाते हैं। ग्रब वे कई शामों तक इसी बात की चर्चा करते रहे कि उन्हें कैसे खिलाया-पिलाया जाये, उनकी नसल बढ़ायी जाये, उन्हें चटपटा बनाया जाये ग्रौर पीपों में बन्द कर पेरिस भेजा जाये। मां ये बातें सुनकर ख़ूब ज़ोर से हंस देती ग्रौर हंसी के मारे उसकी ग्रांखें डबडबा ग्रातीं। "तुम मेरी बातों पर हंसती हो न," वे कहते। "मगर देख लेना कितना पैसा कमाता हूं मैं मेंढकों से।" बस, पिता ने तालाब के एक हिस्से को बाड़ लगाकर ग्रलग कर देने का हुक्म दे दिया, मेंढकों को खिलाने के लिए दलिया बनाया जाने लगा ग्रौर वे परीक्षण के मेंढकों को घर लाने लगे। ग्राख़िर मां ने, जिसकी मेंढकों से जान निकलती थी, एलान कर दिया कि निकीता के पिता या तो उसे रखें या मेंढकों को। उसने कहा कि मेंढकोंवाले घर में मैं किसी सूरत भी रहने को तैयार नहीं हूं।

पिता एक दिन शहर गये ग्रौर वहां से उन्होंने बलूत के दरवाज़ों ग्रौर खिड़कियों के चौखटों से भरे हुए छकड़े भेज दिये। उन्होंने ख़त में लिखा – "प्यारी साशा, संयोगवश मैंने ढेर सारे दरवाज़े ग्रौर खिड़कियों के चौखटे सस्ते दामों पर ख़रीद लिये हैं। प्यारी, तुम्हें याद होगा कि तुम टीले पर चिनारों के नीचे एक मंडप बनवाने की सोच रही थीं। उसके लिए हमें इन्हीं की ज़रूरत थी। मैंने एक वास्तुशिल्पी से सलाह ले ली है। उसने ऐसा मंडप बनाने का मशविरा दिया है जिसमें जाड़े में भी रहना मुमकिन हो। यह बात मुझे बहुत पसन्द ग्राई है। कारण कि हमारा घर तो ऐसे खड्ड में है जहां खिड़कियों से बाहर झांकने पर कोई सुन्दर दृश्य नहीं दिखाई देता।"

ख़त पढ़कर मां तो बस ग्रांसू बहाकर रह गई। तीन महीनों से ग्रर्कादी इवानोविच को वेतन नहीं दिया गया था ग्रौर ग्रचानक यह नया ख़र्च... उसने मंडप बनवाने से साफ़ इनकार कर दिया ग्रौर ग्रब दरवाज़े तथा खिड़कियों के चौखटे एक शेड में पड़े सड़ रहे थे।

फिर पिता जी को अचानक एक नया जनून हुआ। उन्होंने खेती के तरीक़ों में सुधार करने की ठान ली। यह भी मुसीबत ही साबित हुई। उन्होंने अमरीका से मशीनें मंगवा लीं। ख़ुद उन्हें स्टेशन से लदवा कर लाये। मज़दूरों को उन्हें चलाने का ढंग सिखाते हुए सभी पर बरसते-बिगड़ते और बार-बार चिल्लाते रहे – "ध्यान से काम करो शैतानो, तुम्हारा बुरा हो!"

कुछ समय बाद मां ने पूछा –

"कहिये, आपकी पूले बांधनेवाली अद्भुत मशीन का क्या हुआ?"

"होना क्या था?" पिता ने खिड़की पर उंगलियों से ताल देते हुए जवाब दिया, "ख़ूब बढ़िया मशीन है।"

"मगर मैंने तो उसे छानी में खड़े देखा है।"

पिता ने कंधे झटके और दाढ़ी को थपथपाते हुए उसे झटपट दो भागों में बांट दिया।

"क्या वह टूट गई है?" मां ने नम्रता से पूछा।

"ये उल्लू अमरीकी ऐसी ही मशीनें बनाते हैं जो हर घड़ी टूटा करती हैं," पिता ने बिगड़कर कहा। "इसमें मेरा क्या क़सूर है?"

अमज़न नदी और उसकी शाखाओं को नक़्शे पर खींचते हुए निकीता प्यार और ख़ुशी की कोमल अनुभूति के साथ पिता को याद करता रहा। उसका मन खिल उठा। मां ने ग़लत कहा था कि मैं अपने पिता को भूल गया हूं।

अचानक दीवार में कोई चीज़ ऐसे ज़ोर से चिटकी मानो पिस्तौल से गोली चली हो। मां ने ज़ोर से आह भरी और बुनाई की सिलाइयां उसके हाथ से नीचे गिर गईं। अलमारी की दराज़ के नीचे साही अख़ील्का ग़ुस्से से घुरघुराई। निकीता ने अर्कादी इवानोविच पर नज़र डाली जो ऐसे ज़ाहिर कर रहे थे मानो पढ़ने में मस्त हों। मगर वास्तव में उनकी आंखें बन्द थीं, यद्यपि वे जाग रहे थे। निकीता को अर्कादी इवानोविच के लिए अफ़सोस होने लगा। बेचारे हर समय अपनी प्रेयसी वास्सा नीलोव्ना की याद में घुलते रहते थे। वास्सा नीलोव्ना किसी नगर में अध्यापिका थी। इसे कहते हैं जुदाई!

निकीता ने हथेली पर अपना गाल टिका दिया और अपनी जुदाई के बारे में सोचने लगा। मेज़ पर इसी जगह लील्या बैठा करती थी, मगर अब वह यहां नहीं है। कैसे मन उदास हो रहा है यह सोचकर कि कभी वह यहां थी और अब नहीं है। और यह रहा मेज़ पर वह धब्बा जहां उसने गोंद गिरा दिया था। और इस दीवार पर कभी उसके बालों में लगी हुई 'बो' की छाया नज़र आया करती थी। "पंख लगाकर उड़े सुखद दिन।" इन असाधारण और इसी समय दिमाग़ में आ जानेवाले शब्दों से निकीता के गले में दर्द-सा होने लगा। इसलिए कि कहीं ये शब्द दिमाग़ से निकल न जायें, उसने उन्हें दक्षिणी अमरीका के नक़्शे के नीचे लिख दिया – "पंख लगाकर उड़े सुखद दिन।" वह नक़्शा बनाता रहा और अमज़न को दूसरी ही दिशा में – पाराग्वाय और उरुग्वाय के बीच से गुज़ारता हुआ टिएरा डेल फ़्वेगो में ले गया।

"अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना, मेरे ख़्याल में आपकी बात सच ही थी। यह लड़का बेज़ेनचूक रेलवे स्टेशन पर तार बाबू बनने की ही तैयारी कर रहा है," अर्कादी इवानोविच ने कुछ ऐसे शान्तिपूर्ण अन्दाज़ में यह बात कही जिसे सुनकर तन में झुरझुरी सी होने लगती है। वे बहुत देर से यही देख रहे थे कि निकीता नक़्शे का क्या बुरा हाल कर रहा है।

काम-काज के दिन

पाला और भी ज़ोर से पड़ने लगा। बर्फ़ीली हवाओं से वृक्षों में जमी हुई पाले की परतें झड़कर गिरने लगीं। बर्फ़ पर पाले की सख़्त तह जमी हुई थी जिस पर कोई ठिठुरा हुआ, भूखा और अकेला भेड़िया या फिर इकट्ठे दो भेड़िये जागीर तक आ जाते।

शारोक और कातोक को जब भेड़ियों की गंध आती तो वे डरकर कू-कू करने लगते, बग्घीख़ाने में घुस जाते और दिल को चीरती हुई दर्दभरी बारीक आवाज़ में हूंकने लगते – हूं-हूं-ऊ-ऊ...

भेड़िये जमे हुए तालाब को लांघते और इन्सानी बस्ती की गन्ध सूंघते हुए सरकंडों के बीच खड़े रहते। कुछ समय बाद उनकी हिम्मत और बढ़ी और वे बगीचे में आने लगे। वे घर के सामनेवाले मैदान में बैठ जाते, अपनी चमकती हुई आंखों से जमी हुई अन्धेरी खिड़कियों को देखते, ठण्ड से जमे हुए अंधेरे में अपने सिर ऊपर उठाते और धीमे स्वर में मानो गुर्राने लगते। उनकी यह आवाज़ धीरे-धीरे ऊंची होती जाती, उनकी भूख को ज़ाहिर करनेवाली चीख़-पुकार बढ़ती जाती और वे अधिकाधिक ज़ोर से हूंकते। उनका हूंकना दिल में तीर की तरह चुभता...

भेड़िये जब इस तरह हूंकते तो शारोक और कातोक घास-फूस में अपने सिर छिपा लेते और डरके मारे सुध-बुध खोकर बग्घीख़ाने में दुबके पड़े रहते। नौकरों के क्वार्टरों में अलावघर पर भेड़ का लम्बा ओवरकोट ओढ़ कर लेटा हुआ बढ़ई पख़ोम ऊंघता और करवटें बदलता हुआ कहता –

"हे भगवान, कितने बड़े हैं हमारे गुनाह!"

घर में ये काम-काज के दिन थे। जब नीली-काली खिड़कियों को ऊषा की गुलाबी किरणें चूमने लगतीं, पाले से जमे हुए शीशे हल्के-हल्के रोशन होने लगते और उनके ऊपरी भाग नीले हो जाते, तब सभी लोग जाग उठते।

घर में अंगीठी के लोहे के दरवाज़ों की टनटनाहट सुनाई देती। रसोईघर में अब भी लालटेन जलती होती। समोवार और गर्म रोटी की गन्ध आती। नाश्ता झटपट ख़त्म किया जाता। मां खाने के कमरे की मेज़ साफ़ करती और सिलाई की मशीन निकाल लेती। पेस्त्राव्का गांव से सोन्या नाम की एक दर्जिन आती – कुबड़ी और चेचकरू, लगातार धागा काटते रहने से उसका सामनेवाला दांत ख़राब हो गया था। मां के साथ मिलकर वह हर दिन के इस्तेमाल की सभी तरह की चीज़ों की सिलाई करती। वे सिलाई करती हुई धीरे-धीरे बातें करतीं और जब छींट को फाड़तीं तो बहुत ज़ोर की आवाज़ होती। दर्जिन सोन्या तनिक भी आकर्षक नहीं थी।

उसे देखकर कुछ ऐसे अनुभव होता मानो वह बरसों तक किसी अलमारी के पीछे पड़ी रही हो, वहीं से किसी को मिल गई हो और उसे झाड़-पोंछकर सिलाई करने के लिए बिठा दिया गया हो।

अर्कादी इवानोविच इन दिनों पढ़ाई के मामले में कुछ ज़्यादा ही कड़ाई से काम लेने लगे थे। वे अपने मनपसन्द शब्दों को दोहराते हुए अक्सर कहते – हम आगे की ओर छलांग लगा रहे हैं। अब बीजगणित की पढ़ाई शुरू हो गई थी। बहुत ही ख़ुश्क है यह विषय!

गणित सीखते हुए तो सभी तरह की बेकार, मगर दिलचस्प चीज़ों की कल्पना करना सम्भव है। मिसाल के तौर पर ज़ंग लगे और मरे हुए चूहोंवाले ऐसे तालाब की कल्पना की जा सकती है जिसमें तीन पाइपों द्वारा पानी डाला जाता है। या फिर स्थायी रूप से लम्बी नाक और मोमजामे के कोटवाले उस फ़र्ज़ी आदमी को ध्यान में लाया जा सकता है जो तीन क़िस्मों की कॉफ़ी मिलाता है या तांबे के डले ख़रीदता है या फिर कपड़े के दो थानोंवाले उस बदक़िस्मत बज़ाज़ को ही आंखों के सामने उभरता हुआ देखा जा सकता है। मगर बीजगणित में तो ऐसा कुछ भी नहीं होता जिसकी कल्पना की जा सके, उसमें तो प्राणियों की चर्चा ही नहीं होती। अगर कोई दिलचस्प चीज़ थी तो सिर्फ़ यह कि बीजगणित की किताब से गोंद की गंध आती थी और यह भी कि जब अर्कादी इवानोविच नियम समझाने के लिए निकीता की कुर्सी पर झुकते तो दवात में उनका चेहरा झलक उठता था, घड़े की तरह गोल-मटोल।

एक दिन अर्कादी इवानोविच इतिहास पढ़ाते समय अंगीठी की ओर पीठ करके खड़े थे। सफ़ेद टाइलों पर उनके काले फ़ाककोट, लाल दाढ़ी और सुनहरे चश्मे की जो परछाईं पड़ रही थी, वह तो बस कमाल की ही थी। वे निकीता को सोयस्सोन के फ़्रांसीसी बादशाह पेपिन नाटे के बारे में यह बता रहे थे कि कैसे वह तलवार के एक भरपूर हाथ से मग के दो टुकड़े कर डालता था। इस बात को व्यक्त करने के लिए अर्कादी इवानोविच ने अपने हाथ को ज़ोर से लहराकर हवा को काटा।

"तुम्हें यह बात अपने दिमाग़ में बिठा लेनी चाहिए," अर्कादी इवानोविच ने निकीता से कहा, "कि पेपिन नाटे जैसे लोग दृढ़ संकल्प और साहस के लिए ही विख्यात हैं। कुछ अन्य लोगों की तरह वे आलसी नहीं थे, वे बेकार ही दवात को नहीं ताका करते थे जिसमें कुछ भी लिखा नहीं रहता, 'मैं नहीं कर सकता', 'मैं थक गया हूं' जैसे शर्मनाक शब्द तो वे जानते तक नहीं थे। बीजगणित के नियमों को समझने और याद करने के बजाय वे माथे पर ज़ुल्फ़ों को नहीं मरोड़ा करते थे। इसीलिए," इतना कहकर अर्कादी इवानोविच ने किताब ऊपर उठाई, जिसके पृष्ठों के बीच वे अपनी उंगली रखे हुए थे, और बोले, "ऐसे लोग आज हमारे लिए मिसाल बने हुए हैं..."

दोपहर के खाने के बाद मां आम तौर पर अर्कादी इवानोविच से कहती –

"अगर आज भी तापमान शून्य से बीस दर्जे नीचे है, तो निकीता फिर बाहर नहीं जायेगा।"

अर्कादी इवानोविच आज भी खिड़की के पास गये और उन्होंने खिड़की के शीशे पर उस जगह सांस छोड़ी जहां थरमामीटर लगा हुआ था।

"साढ़े इक्कीस है, अलेक्सान्द्रा लेम्रोन्त्येव्ना।"

"मेरा भी ऐसा ही ख़्याल था," मां ने कहा। "जाम्रो, निकीता, अन्दर जाकर किसी तरह अपना मन बहलाम्रो।"

निकीता अपने पिता के अध्ययन-कक्ष में जाकर चमड़े के सोफ़े के उस सिरे पर बैठ गया जो अंगीठी के निकट था। वहां बैठकर वह फ़ेनीमोर कूपर की जादुई कहानियों की किताब पढ़ने लगा।

कमरे में ऐसा गहरा सन्नाटा था कि मुश्किल से ही सुनाई देनेवाली एक अजीब-सी आवाज़ उसके कानों में गूंजने लगी। ऐसी आवाज़ सुनता हुआ जब कोई व्यक्ति सोफ़े पर अकेला बैठा हो, तो कैसी-कैसी कहानियों के ताने-बाने उसके दिमाग़ में बन सकते हैं। पाले से जमी हुई खिड़कियों में से सफ़ेद प्रकाश छन रहा था। निकीता कूपर को पढ़ता रहा और फिर अपनी भौंहों को सिकोड़े हुए बहुत देर तक अन्तहीन और विस्तृत मैदानों में लहराती हुई ऊंची-ऊंची घास की लहरों की कल्पना करता रहा। अपनी कल्पना में उसने चितकबरे मुस्तांग घोड़ों को सरपट दौड़ते, हिनहिनाते और अपनी ओर थूथनी हिलाते हुए देखा। उसने देखे कार्डिल्येरास के काले काले दर्रे, उसे दिखाई दिया सफ़ेद जल-प्रपात और उसके ऊपर मिस्री के कूज़े की शक्लवाली चट्टान के शिखर पर निश्चल खड़ा हुआ रेड इंडियनों का सरदार, लम्बी-सी बन्दूक़ हाथ में लिये हुए। उसने अपने को किसी घने जंगल के बीच एक अतिकाय वृक्ष की जड़ों के पास, गालों में मुट्ठियां गड़ाये एक पत्थर पर बैठे देखा। उसके पैरों के पास अलाव जल रहा था। जंगल में ऐसी ख़ामोशी थी कि उसे अपने कानों की सूं-सूं भी सुनाई दे रही थी। निकीता यहां लील्या को खोजने आया था जिसे धोखे से हर लिया गया था। यहां उसने बहादुरी के बड़े बड़े कारनामे किये। अनेक बार वह लील्या को जंगली मुस्तांग घोड़े पर बिठाकर ले उड़ा, रेंगकर दर्रों पर चढ़ा और उसने ऐसा साधकर निशाना लगाया कि रेड इंडियनों का सरदार मिस्री के कूज़े की शक्लवाली चट्टान से नीचे जा गिरा। मगर जितनी बार भी उसने सरदार को गोली का निशाना बनाया, वह उतनी बार ही फिर चट्टान पर आ खड़ा हुआ। निकीता लील्या को बचा कर ले भागा और उसे लगातार यही करते रहना पड़ा।

जब पाले का ज़ोर कम हुआ और मां ने घर से बाहर जाने की इजाज़त दे दी, तो निकीता अहाते में अकेला घूमता रहता। मीश्का कोर्याशोनोक के साथ वह जो खेल खेला करता था, उन से अब उसे ऊब महसूस होती थी। मीश्का इन दिनों अपना अधिकतर समय नौकरों के क्वार्टरों में ताश के ऐसे खेल खेलने में बिताता था जिन में हारनेवाले को बालों से पकड़कर घसीटा जाता है।

निकीता कुएं के पास गया तो उसे याद आया – यहीं से तो मैंने घर की खिड़की में से झांकती हुई दुनिया की एकमात्र नीली 'बो' देखी थी। मगर अब खिड़की सूनी थी। बग्घीख़ाने के निकट शारोक और कातोक ने बर्फ़ में दबा हुआ एक मृत कौवा निकाल लिया था। यह वही कौवा था जिसके क़रीब झुककर लील्या ने कहा था – "ओह, मुझे कितना दुःख हो रहा है यह

मरा हुआ पक्षी देखकर। निकीता, इसे देखो तो!" निकीता ने कुत्तों से कौआ छीन लिया और तहखाने से आगे जाकर उसे बर्फ़ के टीले में दफ़ना दिया।

बांध को लांघते हुए निकीता को याद आया कि कैसे क्रिसमस के समारोह के बाद वाली रात को मैं चांदनी में पारदर्शी लगनेवाले अतिकाय विल्लो वृक्षों के नीचे से घर लौटा था और कैसे मेरी छाया मेरे साथ साथ चलती रही थी। क्यों मैंने उस समय उस चीज़ का महत्त्व नहीं समझा था जो मेरे साथ घटी थी? उस समय ही तो मुझे अपनी आंखें मूंदकर यह अनुभव करना चाहिये था कि कितनी अपार, कितनी असीम थी मेरी ख़ुशी! अब पाले से जमे हुए काले विल्लो वृक्षों के बीच से तेज़ हवा सांय-सांय कर रही थी। तालाब पर की वह जमी हुई ढाल अब बिल्कुल बर्फ़ से ढंक गई थी जिस पर वह और लील्या अपनी स्लेज नीचे की ओर दौड़ाते रहे थे। उसे याद आया कि लील्या गुपचुप रही थी, उसने अपनी आंखें सिकोड़ ली थीं और स्लेज के पहलुओं को कसकर पकड़े रही थी। अब सभी चिह्न बर्फ़ के नीचे दबकर रह गये थे।

जमकर सख़्त हुई बर्फ़ पर चलता हुआ निकीता अहाते से आगे चला गया। वहां उत्तर की ओर बर्फ़ के टीले घास-फूस की झोंपड़ियों की छतों के बराबर ऊंचे थे। वहां से उसे समतल सफ़ेद मैदान, बर्फ़ का वह रेगिस्तान नज़र आया जो पाले के धुंधलके में लिपटा हुआ आकाश से जा मिला था। बर्फ़ पर धुएं के बादल की तरह एक वातचक्र चला जा रहा था। निकीता के भेड़ की खाल के कोट के छोर पीछे की ओर फड़फड़ाने लगे। बर्फ़ के एक टीले की चोटी पर से बर्फ़ उड़ रही थी। निकीता ख़ुद भी यह नहीं समझ पा रहा था कि क्यों वह बर्फ़ के रेगिस्तान को ताकते रहना चाहता था।

मां ने इस बात की ओर ध्यान दिया कि निकीता लुटा-लुटा सा और अकेला घूमता रहता है। उसने अर्कादी इवानोविच से इसकी चर्चा की। यह तय हुआ कि बीजगणित के पाठ बन्द कर दिये जायें, निकीता को रात को जल्दी सुलाया जाया करे और अर्कादी इवानोविच के अटपटे शब्दों में "रेंडी का तेल पिलाकर उसकी सफ़ाई" की जाये।

यह सभी कुछ किया गया। अर्कादी इवानोविच के अनुसार निकीता ख़ुश नज़र आने लगा था। मगर उसे असली ख़ुशी तीन हफ़्तों बाद ही नसीब हुई। तब दक्षिण से तेज़ हवा आई, अपने साथ धुंधली सी धुंध लाई जो खेतों और बाग़-बगीचों पर छा गई। उसके साथ ही बिखरे-बिखरे बादल आये जो पागलों की तरह आकाश में भागने लगे।

रूक पक्षी

इतवार का दिन था और नौकरों के क्वार्टरों में मज़दूर वासीली, मीश्का कोर्याशोनोक, चरवाहा छोकरा लेक्स्या और लम्बा, हड़ीला तथा लम्बी टेढ़ी नाकवाला अर्त्योम ताश खेल रहे थे। अर्त्योम एक ग़रीब घोड़ाहीन किसान था, जो ज़िंदगी भर रोज़नदार और हमेशा शादी करने की फ़िक्र में रहा था, मगर कोई लड़की इसके लिये तैयार ही न हुई थी। पिछले कुछ समय से

वह दुन्याशा की ओर ध्यान देने लगा था। दुन्याशा प्यारी-सी लड़की थी, लाल लाल गालोंवाली। वह पशुशाला की देखभाल करती थी। दिन भर वह पशुशाला से तहखानों या रसोईघर की ओर दौड़ती-घूमती रहती, उसके हाथों में जस्ते की कलई चढ़ी हुई लोहे की बालटियां खनकती रहतीं, उससे हमेशा ताजा दूध की गंध आती और जब बर्फ़ पड़ती तो उसके गालों पर बर्फ़ के गाले-से चमकते हुए प्रतीत होते। बड़ी हंसोड़ थी वह! अर्त्योम चाहे किसी जगह कुछ भी करता होता – खत्तियों से भूसा लेकर जाता होता या भेड़ों के बाड़े की सफ़ाई करता होता – फ़ौरन तंगली ज़मीन में गाड़ता और अपनी लम्बी-लम्बी टांगों से ऊंट की तरह चलता हुआ उसकी ओर बढ़ जाता।

दुन्याशा के क़रीब जाकर वह अपनी टोपी उतारता और सिर झुकाकर कहता –

"नमस्ते, दुन्याशा।"

"नमस्ते!" दुन्याशा बालटियां नीचे रखकर अपने पेशबन्द के छोर से मुंह ढक लेती।

"अभी तक दूध के झंझट से छुट्टी नहीं मिली?"

तब दुन्याशा का हंसी के मारे ऐसा बुरा हाल होता कि उसके लिये खड़े रहना मुश्किल हो जाता और वह नीचे बैठ जाती। वह बालटियां उठाती और बर्फ़ जमे संकरे मार्ग पर तहखाने की ओर भाग जाती। वहां पहुंच कर वह फटाक से बालटियां फ़र्श पर फेंकती और जल्दी-जल्दी बोलती हुई घर की देखभाल करनेवाली नौकरानी वसिलीसा को बताती – "वह ऊंट आज फिर मुझ से कह रहा था कि मैं उससे शादी कर लूं! हाय राम, मेरा तो किसी दिन दम निकल जायेगा!" इसके बाद वह इतने ज़ोर से हंसती कि पूरे अहाते में उसकी गूंज सुनाई देती।

निकीता नौकरों के क्वार्टरों में चला गया। आज वहां भेड़ के सिर का शोरबा तैयार किया जा रहा था और उबले हुए भेड़ के मांस और ताज़ा पकायी गयी रोटी की प्यारी-प्यारी गंध फैली हुई थी। दरवाज़े के पास हाथ मुंह धोने के लिये टूटीवाली मिट्टी की गागर लटकी हुई थी और उसके नीचे लकड़ी का कठौता रखा हुआ था। वहां लोगों के जूतों के साथ सड़क पर से आई हुई नम बर्फ़ जमा थी। पख़ोम अंगीठी के क़रीब एक बेंच पर बैठा था और उसके चेचकरू माथे तथा तनी हुई भौंहों पर काले बाल बिखरे हुए थे। वह घुटने तक के जूते के ऊपरी भाग की सिलाई कर रहा था। वह सूजे से बहुत सावधानी के साथ चमड़े में सूराख़ करता, फिर सिर को सीधा कर आंख मिचमिचाता, सूराख़ पर नज़र टिका कर उसमें सूअर का बाल और उसके बाद राल से मज़बूत किया हुआ डोरा घुसेड़ता तथा जूते के ऊपरी भाग को घुटनों के बीच कसकर डोरे को आर-पार खींचता। उसने माथे पर बल डालकर निकीता की ओर देखा। आज वह बहुत गुस्से में था। बावर्चिन से उसकी तू तू मैं मैं हो गई थी जिसने उसकी पैरों की गर्म पट्टियां सूखने के लिये डाली थीं और उन्हें जला दिया था।

ताश खेलनेवाले लोग मेज़ के गिर्द डटे थे, छुट्टी के दिन की साफ़-सुथरी क़मीज़ें पहने, बालों को तेल लगाकर ढंग से संवारे हुए। सिर्फ़ अर्त्योम के ही बाल अस्तव्यस्त थे और वह घर

की बुनी हुई फटी-फटाई जाकेट पहने था। उसकी देखभाल करने और क़मीज़ें धोनेवाला कोई नहीं था। ताश खेलनेवाले चिकने और गन्धयुक्त पत्तों को ज़ोर से मेज़ पर फेंकते हुए चिल्ला रहे थे –

"यह रहा गुलाम।"

"यह रही बेगम।"

"और इसे देखते हो?"

"और यह?"

"मार ली बाज़ी।"

"क्यों, कैसी रही?"

"अर्त्योम, अपनी नाक आगे करो!"

"मैं क्यों?" पत्तों को हैरानी से देखते हुए अर्त्योम ने पूछा। "यह ग़लत है, भूल हुई है।"

"नाक आगे करो!"

अर्त्योम ने दोनों हाथों में एक-एक पत्ता लेकर उनसे अपनी आंखें ढक लीं।

मज़दूर वासीली ने तीन पत्ते लिये और उन्हें धीरे-धीरे अर्त्योम की नाक पर मारने लगा। बाक़ी खिलाड़ी अर्त्योम की ओर देखते हुए गिनती करने और ग़ुस्से से चीख़कर अर्त्योम से कहने लगे कि वह हिले-डुले नहीं।

निकीता उनके साथ खेलने बैठ गया और फ़ौरन ही बाज़ी हार गया। उसकी नाक पर पन्द्रह बार पत्ते मारे गये। इसी समय पख़ोम ने जूते का ऊपरी भाग और सूजा बेंच के नीचे रखे और कड़ाई से कहा –

"कुछ लोग अभी प्रार्थना कर गिरजे से लौटेंगे और यहां ऐसे हज़रत भी हैं जो अपने ऊपर सलीब तक बनाने की भी परवाह नहीं करते। ताश लेकर बैठे हुए हैं। और तो और लेण्ट में मांस खाने से भी गुरेज़ नहीं करते... स्तेपानीदा!" हाथ धोने के कठौते की ओर जाते हुए वह चिल्लाया, "खाना लगाओ!"

रसोईघर में बावर्चिन स्तेपानीदा ऐसी डरी कि पतीली का ढक्कन उसके हाथ से छूटकर नीचे जा गिरा। मज़दूरों ने पत्ते समेट लिये। वासीली उस कोने की ओर मुड़ा जहां तिल-चटों द्वारा बनाये गये निशानोंवाली काग़ज़ी देव-प्रतिमा रखी थी। उसके सामने खड़े होकर वासीली ने अपने ऊपर सलीब बनाई।

स्तेपानीदा लकड़ी के प्याले में भेड़ों के सिरों के मांस का शोरबा लाई। प्याले से उठनेवाली प्यारी भाप के कारण स्तेपानीदा ने मुंह दूसरी ओर कर लिया। मज़दूर अपना अपना चमचा ले, चुपचाप और संजीदा होकर मेज़ के गिर्द बैठ गये। वासीली ने डबलरोटी के लम्बे-लम्बे टुकड़े काटे, हर मज़दूर को एक-एक टुकड़ा दिया और फिर चमचे से लकड़ी के प्याले पर ठक ठक की। इसका मतलब था – खाना शुरू करो। सभी मज़दूर खाने में जुट गये। भेड़ों के सिरों के मांस का शोरबा ज़ायकेदार था।

पखोम दूसरों के साथ खाना खाने नहीं बैठा। उसने तो केवल रोटी का एक टुकड़ा लिया और अंगीठी के पास बेंच पर आ बैठा। बावर्चिन उसके लिये उबले हुए कुछ आलू और लकड़ी की नमकदानी में नमक ले आई। वह लेण्ट के व्रत के अनुसार खाना खा रहा था।

"पट्टियां," पखोम ने गर्म-गर्म आलू को सावधानी से दो हिस्सों में काटते और आधे को नमक लगाते हुए कहा। "तुमने पट्टियां जला दीं। मैं तुम से फिर कहता हूं कि तुम सिरफिरी बुढ़िया हो, बेवक़ूफ़ खूसट हो। बस, यही कुछ हो..."

निकीता बाहर अहाते में चला गया। बड़ा उदासी भरा दिन था। सीली-सीली भारी हवा चल रही थी। नमी में नमक की तरह भुरभुरी मटमैली बर्फ़ को घोड़ों की लीद ने थोड़ा पीलापन दे दिया था। बांध की ओर मुड़नेवाला स्लेज का रास्ता, जिसपर गोबर पड़ा था और बहुत-से डबरे थे, इर्दगिर्द के बर्फ़ ढके मैदान से ऊंचा था। छानियों और खत्तियों की लट्ठों की दीवारें, फूस की काली पड़ी हुई छतें, निपत्ते वृक्ष, लट्ठों का रंग-रोग़न के बिना बड़ा-सा घर,—हर चीज़ काली, मटमैली और साफ़ नज़र आ रही थी।

निकीता बांध के क़रीब चला गया। दूर से उसे गीले वृक्षों की सरसराहट सुनाई दे रही थी। यह सरसराहट दूरी पर फाटकों से पानी गिरने के कारण पैदा होनेवाली आवाज़ के समान थी। विल्लो वृक्षों की झूमती हुई चोटियां निचाई पर इधर-उधर उड़ने और बिखरे-बिखरे बादलों में लिपटी हुई थीं। बादलों में लिपटी हिलती हुई शाखाओं के बीच काले काले पक्षी चक्कर लगाते हुए उड़ रहे थे और आतंकित-से चीख़-चिल्ला रहे थे।

निकीता पीछे की ओर अपना सिर किये और मुंह खोले वहां खड़ा था। ऐसा लगता था मानो ये पक्षी बोझल और सीली हवा में से नमूदार हुए थे, बादलों के साथ उड़ते चले आये थे और सरसराते तथा झूमते विल्लो वृक्षों के साथ लटके हुए वे कुछ अस्पष्ट, भयानक और सुखद चीज़ों के बारे में चिल्ला रहे थे। निकीता ने अपना दम साध लिया और उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा।

ये रूक पक्षी थे जो वसन्त के पहले तूफ़ान के साथ अपनी पुरानी जगहों पर, अपने तबाह हुए घोंसलों में लौट आये थे। वसन्त आ गया था।

पहियोंवाला घर

तीन दिन तक नम हवा चलती रही, बर्फ़ को चट करती हुई। ऊंची जगहों पर बर्फ़ के बीच से काली काली ज़मीन के टुकड़े नज़र आने लगे। हवा में पिघलती हुई बर्फ़, घोड़ों की लीद और पशुओं की गंध बसी हुई थी। जब पशुओं के बाड़े के दरवाज़े खोले गये तो गायें एक-दूसरी को धकेलती, सींग टकराती और ज़ोर-ज़ोर से रम्भाती हुई कुएं की ओर चली गईं। वासन्ती हवा से मदमत्त हुआ बायान सांड़ बुरी तरह गरज रहा था। मीश्का कोर्याशोनोक और लेक्स्या ने अपने कोड़ों से पशुओं को गोबर की गंधवाले बाड़ों में मुश्किल से वापिस भेजा। इसके बाद

उन्होंने घुड़साल का दरवाज़ा खोला। घोड़े ऐसे ऊंघते हुए बाहर निकले मानो उन्होंने पी रखी हो। उनकी चमड़ी पहले की तुलना में काली हो गई थी, बाल झड़ गये थे, उनके अयाल लम्बे, मैले और उलझे हुए थे और उनके पेट फूले-फूले थे। वेस्ता घोड़ी ने घुड़साल की बग़ल में रखे पिंजरे में बच्चे जने थे। काले कौवे बेमतलब कांय कांय करते और पंख फड़फड़ाते हुए छतों के ऊपर उड़ते फिर रहे थे। कौवे तहख़ानों के पीछे किसी मरे हुए जानवर के गिर्द जमा हो गये थे जो अचानक वर्फ़ में से निकल आया था। वृक्ष ज़ोर से सांय-सांय कर रहे थे, परेशान करनेवाला भारी शोर मचा रहे थे। बांध के ऊपर वृक्षों और बादलों में उड़ते हुए रूक पक्षी कांय कांय कर रहे थे।

इन दिनों निकीता के सिर में लगातार दर्द होता रहा। वह उनींदा और परेशान-सा अहाते में और पानी में छपछपाती सड़कों पर भटकता रहा, खलिहान में गया जहां भूसी के ढेर से अनाज की धूल और चूहों की गन्ध आ रही थी। एक अनबूझ-सी परेशानी उसे घेरे हुए थी। उसे लगता था कि कोई भयानक बात होगी। मगर क्या, यह न तो उसकी समझ में आती थी और न वह उसकी उपेक्षा ही कर सकता था। धरती, जंगली जानवर, चौपाये और पक्षी – कोई भी अब उसका दोस्त नहीं रहा था, किसी को भी तो अब वह समझ नहीं पाता था, सभी तो बेगाने, शत्रु और द्वेषपूर्ण हो गये थे। कुछ तो होनेवाला था, कुछ ऐसा जो समझ में न आये, कुछ ऐसा गुनाह से भरा हुआ कि जिससे मौत ही आ जाये। मगर बेशक वह उनींदा था, बेशक हवा, जानवर की लाश, घोड़ों के खुरों, गोबर और पिघलती हुई वर्फ़ की गंध से उसका सिर चकराने लगा था, फिर भी कोई उत्सुकता थी जो उसे यहां भटकते रहने की प्रेरणा देती थी, उसे यहां खींच लाती थी।

जब वह भीगा हुआ, परेशान-सा और कुत्तों की गन्ध के साथ घर लौटा, तो मां ने बहुत ग़ौर से उसकी ओर देखा। मां की नज़र में दया की नहीं, भर्त्सना की झलक थी। निकीता समझ नहीं पाया कि मां क्यों नाराज़ थी, इससे उसकी उदासी और भी बढ़ गई, वह और परेशान हो उठा। पिछले कुछ दिनों के दौरान उसने कोई भी तो बुरी बात नहीं की थी, मगर फिर भी वह इस तरह परेशान था कि मानो उसने कोई बड़ा अपराध कर दिया हो, ऐसा अपराध जो सारी पृथ्वी को अपनी लपेट में लेता जा रहा था।

निकीता हवा के रुख़ वाली दिशा में भूसी की पूलियों के पास से गुज़र रहा था। पूलियों की इस टाल में अभी तक वे सूराख़ क़ायम थे जो मज़दूरों और मज़दूरिनों ने पतझर के दिनों में गेहूं की कंडनी करते समय बना दिये थे। रात के समय लोग इनमें घुसकर सो रहते थे। गर्म और सोंधी गन्धवाले भूसे के नीचे निकीता ने अंधेरे में कभी कुछ बातचीत सुनी थी। उसे वह याद हो आई। भूसे की यह टाल उसे बहुत भयानक-सी प्रतीत हुई।

निकीता खलिहान के निकट खड़े हलवाहे के कोष्ठक की ओर चला गया। यह तख़्तों का बना हुआ छोटा-सा पहियेदार घर था। एक चूल के सहारे लगा हुआ उसका दरवाज़ा हवा में बुरी तरह चूं-चूं कर रहा था। घर ख़ाली पड़ा था। पांच पैड़ियोंवाली छोटी-सी सीढ़ी चढ़कर

निकीता उसमें गया। इसमें शीशे के छोटे-छोटे चार टुकड़ोंवाली एक छोटी-सी खिड़की थी। फ़र्श पर अभी तक बर्फ़ पड़ी हुई थी। छत के नीचे दीवार के साथ लगे हुए तख़्ते पर जहां तहां से कुतरा हुआ लकड़ी का एक चमचा पड़ा था। पिछली पतझर से उसे किसी ने यहां से नहीं उठाया था। वहीं एक बोतल भी थी जिसमें कभी वनस्पति तेल रहा होगा और चाकू का दस्ता भी पड़ा हुआ था। छत के ऊपर हवा सीटियां बजा रही थी। निकीता वहां खड़ा हुआ सोच रहा था कि मैं अब एकदम एकाकी हूं, सब ने मुझे भुला दिया है, कोई मुझ से प्यार नहीं करता, हर कोई मुझ से नाराज़ है। उसे दुनिया की हर चीज़ सीली, काली और अभिशापित लग रही थी। उसकी आंखें डबडबा आईं, उसे अपने लिये बहुत दुख होने लगा! होता भी क्यों न, वह इस दुनिया में एकदम एकाकी था, ख़ाली कोष्ठक में अकेला खड़ा था...

"हे भगवान," निकीता ने धीरे से कहा। उसे अपने सारे शरीर में झुरझुरी-सी महसूस हुई। "हे भगवान, फिर से सब कुछ ठीक-ठाक कर दो। मैं चाहता हूं कि मां मुझे प्यार करे, कि मैं अर्कादी इवानोविच का कहा मानने लगूं... कि फिर से सूरज चमके और घास लहलहा उठे... कि ये रूक पक्षी ऐसे ज़ोर से न चीखें-चिल्लायें... कि मुझे बायान सांड़ का गरजना सुनाई न दे... हे भगवान, फिर से सभी चीज़ों को ऐसा कर दो कि मुझे चैन मिले..."

निकीता ने ये शब्द कहते हुए सिर झुकाया और झटपट अपने ऊपर सलीब बनाई। प्रार्थना करने के बाद जब उसने लकड़ी के चमचे, तेल की बोतल और चाकू के दस्ते पर नज़र डाली तो सचमुच अपने दिल को कुछ हल्का पाया। छोटी-सी खिड़कीवाले इस कोष्ठक में वह कुछ देर और खड़ा रहा और फिर घर वापिस चला गया।

छोटे से घर ने सचमुच उसकी मदद की। वह जब ड्योढ़ी में अपना कोट उतार रहा था तो वहां से गुज़रती हुई मां ने उसे बहुत ध्यान से देखा। इन दिनों वह हमेशा ही अपनी भूरी आंखों से उसे बहुत ग़ौर और कड़ाई से देखती थी। वह सहसा सस्नेह मुस्करा दी और उसने निकीता के सिर पर हाथ फेरा।

"कहो, इधर-उधर काफ़ी दौड़ चुके हो न?" उसने पूछा। "अब चाय पीना चाहते हो?"

वासीली निकीत्येविच अचानक हो आये

आख़िर इस रात पानी बरसा, सो भी मूसलधार। खिड़कियों और टीन की छत पर बरसात ने पटापट का ऐसा ज़ोरदार शोर मचाया कि निकीता की नींद टूट गई, वह उठकर बिस्तर में बैठ गया और मुस्करा दिया।

रात के समय बरसात का गीत शीशे पर ताल देता हुआ मानो लोरी दे रहा था— "सोओ, सोओ, सोओ।" अन्धेरे में तेज़ हवा घर के सामनेवाले पोपलार के वृक्षों से जूझ रही थी।

निकीता ने अपने तकिये की नीचेवाली ठंडी तरफ़ ऊपर कर ली और फिर से बिस्तर में लेट गया। ऊनी कम्बल के नीचे वह तब तक करवटें बदलता और हिलता-डुलता रहा जब तक कि उसे फिर से चैन महसूस नहीं हुआ। "सब कुछ अच्छा हो जायेगा, बहुत ही अच्छा हो जायेगा," -उसने सोचा और नींद के कोमल तथा प्यारे-प्यारे बादलों में खो गया।

सुबह को बरसात बन्द हो गई, मगर आकाश बोझल और जलभरे बादलों से ढका रहा। ये बादल दक्षिण से उत्तर की ओर तैर रहे थे। निकीता ने खिड़की से बाहर झांका तो आह भर कर रह गया। बर्फ़ का तो नाम-निशान ही बाक़ी नहीं रह गया था। अहाते में सभी ओर नीले पानी के डबरे थे जिनमें हवा के कारण छोटी-छोटी लहरियां उठ रही थीं। ज़मीन के साथ लगी हुई सूखी बादामी घास के साथ साथ डबरों के बीच से स्लेज का मार्ग अभी भी नज़र आ रहा था, पूरी तरह ग़ायब नहीं हुआ था। पोपलार की भीगी हुई लाल-पीली शाखाएं मस्ती में झूम रही थीं। दक्षिण में फटे-फटे बादलों के बीच से आंखों को चकाचौंध करता हुआ आकाश का नीला धब्बा-सा दिखाई दिया जो भयानक रफ़्तार से उड़ता हुआ घर की ओर आने लगा।

नाश्ते के समय मां परेशान थी और बार-बार खिड़कियों की ओर देखती रही।

"पांच दिन से डाक नहीं आई," उसने अर्कादी इवानोविच से कहा। "न जाने क्यों?.. अब बाढ़ आ गई है और दो हफ़्ते तक सड़कों पर आना-जाना न हो सकेगा... ऐसी लापरवाही तो बहुत भयानक चीज़ है।"

निकीता समझ गया कि मां उसके पिता की चर्चा कर रही थी। हर दिन ही उनकी प्रतीक्षा हो रही थी। अर्कादी इवानोविच कारिन्दे से बात करके यह मालूम करने गये कि क्या डाक लाने के लिए किसी घुड़सवार को भेजना मुमकिन होगा। मगर उसी समय खाने के कमरे में लौट आये और बहुत ऊंचे तथा असाधारण अन्दाज़ में बोले –

"हे भगवान, यह क्या हो रहा है!.. ज़रा बाहर जाकर सुनिये... पानी कैसे शोर मचा रहा है।"

निकीता ने ओसारे में खुलने वाला दरवाज़ा चौपट खोल दिया। तेज़ और ताज़ा हवा गिरते हुए पानी की ज़ोरदार और मधुर आवाज़ से भरपूर थी। यह आवाज़ थी पिघली हुई बर्फ़ की असंख्य जल-धाराओं की जो हल-रेखाओं, गढ़ों और खाइयों में से बहती हुई खड्डों में गिर रही थीं। किनारों तक भरे हुए खड्ड वसन्त के पानी को नदी में पहुंचा रहे थे। बर्फ़ की तह को तोड़कर नदी अपने किनारों से बाहर उमड़ पड़ी थी और उसका पानी बर्फ़ के तूदों तथा जड़ से उखाड़ी गयी झाड़ियों को चक्कर देता हुआ तेज़ी से बांध की ओर दौड़ रहा था, भंवर बना रहा था।

आकाश का वह नीला-सा धब्बा जो घर की ओर उड़ता हुआ आया था, बादलों को फाड़कर बढ़ता जा रहा था। आकाश ठंडे और नीले प्रकाश से जगमगा उठा और अहाते के डबरे

गहरी और तलहीन नीलिमा में बदल गये। जल-धाराओं, खेतों की बड़ी-बड़ी झीलों और लबालब भरे खड्डों में सूरज की किरणें प्रतिबिम्बित हो रही थीं, आंखों को चौंधियाता हुआ प्रकाश-प्रतिबिम्ब कौंध उठता था।

"हे भगवान, कैसी कमाल की हवा है!" अपनी ऊनी शॉल के नीचे छाती पर हाथ रखते हुए मां ने कहा। उसका चेहरा खिला हुआ था और उसकी भूरी आंखों में हरी-सी चमक झलक उठी थी। मां जब मुस्कराती थी तो उसका रूप दुनिया में बेजोड़ हो जाता था।

निकीता ने यह देखने के लिये अहाते के गिर्द चक्कर लगाया कि वहां क्या हालत है। सभी जगह जल-धाराएं थीं, जिनमें से कुछ मटमैले और पैर आ जाने पर आह-सी भर कर चूर-चूर हो जानेवाले बर्फ़ के टुकड़ों के नीचे ग़ायब हो जाती थी। चारों ओर पानी ही पानी था। घर एक द्वीप-सा बन गया था। निकीता सिर्फ़ लुहारख़ाने तक ही जा पाया जो एक छोटे-से टीले पर बना हुआ था। सूखती हुई ढाल से उतर कर वह खड्ड की ओर भागा। पिछले साल की घास को डुबोता हुआ बर्फ़ का साफ़ और सुगन्धित पानी तेज़ी से बहा चला जा रहा था। उसने चुल्लू भर पानी पिया।

खड्ड में कुछ आगे जाकर बर्फ़ के पीले और नीले टुकड़े अभी तक क़ायम थे। कुछ जगहों पर पानी इन टुकड़ों को चीर कर वह निकला था और दूसरी जगह बर्फ़ के ऊपर से बहा जा रहा था। भगवान न करे कि कोई घुड़सवार बर्फ़ की इस खिचड़ी में आ फंसे! निकीता खड्ड के क़रीब घास के साथ-साथ चला जा रहा था। वह सोच रहा था कि वसन्त के पानी में तैरते हुए एक के बाद एक खड्ड को पार करने, सूखते हुए, मगर अभी तक सीले तटों को लांघने और बड़ी-बड़ी चमकती हुई झीलों के पार जाने में कितना मज़ा होगा जिनकी सतहों पर वसन्ती हवा लहरियां पैदा कर रही थी।

खड्ड के दूसरी ओर समतल मैदान था जो कई जगहों पर बादामी था और कई जगह अभी तक बर्फ़ से ढका हुआ था। उसके ऊपर अनेक जल-धाराएं वह रही थीं और सारा मैदान आंखों को चकाचौंध करता हुआ चमक रहा था। कुछ दूर घोड़ों की नंगी पीठों पर पांच घुड़सवार मैदान को धीरे-धीरे पार कर रहे थे। उनके अगुआ ने गर्दन घुमाई और रस्सियों का एक गुच्छा हिलाते हुए चिल्लाकर बाक़ियों से कुछ कहा। निकीता ने चितकबरी घोड़ी देखकर पहचान लिया कि वह अर्तामोन त्यूरिन था। आख़िरी घुड़सवार अपने कंधे पर एक लम्बा-सा बांस रखे हुए था। घुड़सवार ख़ोम्याकोव्का गांव की ओर जा रहे थे जो खड्डों के परे, नदी के दूरवर्ती तट पर स्थित था। जलमग्न खेतों में से, जहां कहीं कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था, घुड़सवारों को जाते हुए देखना बहुत अजीब-सा लग रहा था।

निकीता नीचेवाले तालाब पर चला गया। पीली बर्फ़ पर से अपनी मोटी और फेनिल जलधारा को बहाता हुआ खड्ड उसे इसी तालाब में गिरा रहा था। छोटी-छोटी लहरियों में बहते हुए पानी ने तालाब की समूची बर्फ़ को ढक दिया था। बायीं ओर को बर्फ़ की जकड़ से
 मुक्त हुए कोमल, चौड़े-चौड़े और अतिकाय विल्लो वृक्ष ज़ोर से सांय-सांय कर रहे थे। पिछली



रात की बरसात में भीगे हुए रूक पक्षी नंगी और हिलती-डुलती शाखाओं में बैठे थे।

विल्लो वृक्षों के टेढ़े-मेढ़े तनों के बीच एक घुड़सवार बांध पर दिखाई दिया। वह मरियल-से घोड़े की बग़लों में लगातार एड़ियां मारता हुआ दायें-बायें हिलडुल रहा था और अपनी कुहनियों को ऊपर-नीचे झटक रहा था। यह स्त्योप्का कार्नाऊश्किन था। पानी के डबरों के बीच से सरपट अपना घोड़ा दौड़ाते हुए उसने चिल्लाकर निकीता से कुछ कहा। घोड़े के कीचड़ से लथपथ सुम ढेरों बर्फ़ और पानी के छींटे उड़ाते जा रहे थे।

ज़ाहिर था कि कुछ ख़ास बात हो गयी थी। निकीता घर की तरफ़ दौड़ा। पिछवाड़े के ओसारे की बग़ल में कार्नाऊश्किन का हांफता हुआ घोड़ा खड़ा था। उसने निकीता को देखकर सिर झटका। निकीता जैसे ही घर पहुंचा, उसे अपनी मां की डरी-सहमी, संक्षिप्त और ऊंची-सी चीख़ सुनाई दी। वह बरामदे के सिरे पर नज़र आई, उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं और आंखें डर से फैली हुई थीं। स्त्योप्का उसके पीछे नज़र आया और अर्कादी इवानोविच दूसरी ओर के दरवाज़े से भागते हुए बाहर निकले। मां चल नहीं रही थी, बरामदे में से उड़ी चली जा रही थी।

"जल्दी करो, जल्दी करो," रसोईघर का दरवाज़ा फटाक-से खोलते हुए वह चिल्लाई। "स्तेपानीदा, दुन्याशा, भागकर नौकरों के क्वार्टरों में पहुंचो!.. वासीली निकीत्येविच ख़ोम्याकोव्का के क़रीब डूब रहे हैं..."

सबसे भयानक बात तो यह थी कि ख़ोम्याकोव्का के क़रीब यह घटना घट रही थी। निकीता की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। बरामदे में अचानक तले हुए प्याज़ों की गन्ध फैल गई। मां ने बाद में बताया कि निकीता आंखें सिकोड़ कर ख़रगोश की भांति चीख़ उठा था। उसे तो ख़ैर यह याद नहीं रहा था कि वह इस तरह चीख़ा था। अर्कादी इवानोविच उसे बाहों में कसकर पढ़ाई के कमरे में ले गये।

"तुम्हें शर्म नहीं आती, निकीता, तुम इतने बड़े लड़के हो," कोहनी के ऊपर उसकी दोनों बाहों को दबाते हुए वे लगातार दोहराते रहे। "आख़िर हुआ क्या है, हुआ ही क्या है? वासीली निकीत्येविच जल्द ही घर आ जायेंगे... वे शायद किसी गढ़े में गिरकर भीग गये हैं... और उस उल्लू स्त्योप्का ने तुम्हारी मां को डरा दिया है... क़सम भगवान की... मैं ज़रूर उसके कान खींचूंगा..."

फिर भी निकीता ने देखा कि अर्कादी इवानोविच के होंठ कांप रहे थे और उनकी आंखों की पुतलियां सिकुड़कर बिन्दुओं जैसी हो गई थीं।

इसी बीच मां केवल एक शॉल लपेटे हुए भाग कर नौकरों के क्वार्टरों में जा पहुंची थी। मज़दूरों को तो इस बात का पहले ही पता लग चुका था और वे बग्घीख़ाने में बड़े-से, जानदार और बदमिज़ाज नीग्रो नामक घोड़े को चौड़े तले की स्लेज में जोतने की कोशिश कर रहे थे।
 घोड़ों के चरागाह से वे घुड़सवारी के घोड़े पकड़ लाये। एक आदमी घास-फूस की छत से लम्बे

हत्थेवाली नाव की हुक खींचकर नीचे उतार रहा था। दूसरे ने फावड़ा सम्भाला और एक अन्य ने रस्से का लच्छा उठाया। दुन्याशा भेड़ की खाल का लम्बा कोट और भारी फ़र कोट उठाये हुए घर से बाहर निकली। पख़ोम मां के पास जाकर बोला –

"अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना, कृपया, दुन्याशा को वोद्का लाने के लिये गांव भेज दीजिये। जैसे ही हम उन्हें लेकर घर पहुंचें, आप उन्हें वोद्का पिलाकर गर्म करें..."

"पख़ोम, मैं आपके साथ चल रही हूं..."

"हरगिज़ नहीं! आप घर जाइये, कहीं ठण्ड लग जायेगी।"

पख़ोम सिमट कर स्लेज की सीट पर जा बैठा और उसने कसकर लगामें पकड़ लीं। "छोड़ दो अब इसे!" उसने उन लड़कों से पुकार कर कहा जो घोड़े की लगाम पकड़े खड़े थे। नीग्रो ने बमों पर ज़ोर मारा, हिनहिनाया, झटके के साथ आगे बढ़ा और स्लेज को कीचड़ और डबरों के ऊपर से आसानी से खींच ले चला। मज़दूर एक दल-सा बनाकर अपने घोड़ों को रस्सियां मारकर तेज़ी से दौड़ाते हुए स्लेज के पीछे-पीछे बढ़ चले।

मां देर तक निश्चल खड़ी रहकर उन्हें जाते देखती रही और फिर सिर झुकाये हुए घर में लौट गई। मां खाने के कमरे की खिड़की के क़रीब जा बैठी। वहां से खुला मैदान और दूरी पर, पहाड़ियों से आगे, ख़ोम्याकोव्का गांव के विल्लो वृक्षों के शिखर नज़र आ रहे थे। मां ने निकीता को बुलवाया। वह भागता हुआ आया, उसने अपनी बांहें मां के गले में डाल दीं और अपना सिर उसके कंधों पर पड़ी हुई शॉल के ऊपर टिका दिया...

"भगवान हमें मुसीबत से बचाये, प्यारे निकीता," मां ने धीरे से कहा और देर तक निकीता के बालों पर अपने होंठ टिकाये रही।

अर्कादी इवानोविच कई बार कमरे में आये, उन्होंने अपना चश्मा ठीक किया और हाथ मले। मां कई बार यह देखने के लिये ओसारे में गई कि वे लौटे या नहीं, फिर खिड़की के पास आकर बैठ गई और निकीता को उसने अपने पास से नहीं हटने दिया।

सूर्यास्त के पहले दिन के प्रकाश में हल्की-सी लालिमा घुल गई थी। खिड़की के शीशों के निचले भागों पर पाले ने हल्के-हल्के बेलबूटे बना दिये थे। सन्ध्या समय ठण्ड बढ़ गई थी। अचानक घर के बाहर घोड़े के सुम बज उठे और नीग्रो दिखाई दिया। उसके मुंह से झाग निकल रहा था। पख़ोम स्लेज के एक ओर बैठा था और स्लेज के अन्दर भेड़ की खाल के बड़े कोट, फ़र कोट और नमदे के ढेर के नीचे वासीली निकीतयेविच का लाल लाल और मुस्कराता हुआ चेहरा दिखाई दे रहा था। वे भेड़ की खाल के बड़े कोट के नीचे से मुस्करा रहे थे और उनकी मूंछों की जगह जमी हुई बर्फ़ के दो बड़े-बड़े छल्ले नज़र आ रहे थे।

मां जल्दी से उठती हुई चीख़ उठी, उसका चेहरा कांप रहा था।

"वे ज़िन्दा हैं!" वह चिल्लाई और उसकी चमकती हुई आंखों से आंसू की धार बह चली।

मैं तो लगभग डूब ही गया था

पिता चमड़े की बड़ी सी आरामकुर्सी पर बैठे हुए थे। यह कुर्सी विशेष रूप से खाने के कमरे में गोल मेज़ के गिर्द लाकर रख दी गई थी। वासीली निकीत्येविच ऊंट के बालों का मुलायम ड्रेसिंग गाउन और नमदे के नर्म बूट पहने थे। वे अपनी मूंछों और नम दाढ़ी को कंघे से संवार कर दो हिस्सों में बांटे हुए थे। उनका हंसता हुआ चेहरा समोवार में प्रतिबिम्बित हो रहा था। अन्य सभी चीजों की भांति इस शाम को समोवार भी बहुत ज़ोर से सूं-सूं करता हुआ उबल रहा था और उसके नीचेवाले झरोखे से चिंगारियां निकल रही थीं।

वासीली निकीत्येविच ख़ुशी के कारण और वोद्का के असर से अपनी आंखें सिकोड़े हुए बैठे थे और उनके सफ़ेद दांत ख़ूब चमक रहे थे। मां बेशक वही साधारण सलेटी पोशाक पहने और ऊनी शॉल लपेटे थी, फिर भी बिल्कुल दूसरी ही नज़र आ रही थी, पहचान से वाहर थी। उसके चेहरे पर मुस्कान वरवस खिल उठती थी, उसके होंठ सिकुड़ जाते थे और ठुड्डी कांप उठती थी। अर्कादी इवानोविच ने ख़ास ख़ास मौक़ों पर पहनने के लिये सुरक्षित रखा हुआ कछुए के फ़्रेमवाला अपना नया चश्मा पहन रखा था। निकीता मेज़ के साथ अपना पेट सटाये एक कुर्सी पर घुटनों के बल बैठा हुआ था और दम साधकर अपने पिता की वातें सुन रहा था। दुन्याशा बार-बार अन्दर आती, कुछ ले जाती, कुछ लाती और मालिक को बहुत ग़ौर से देखती। स्तेपानीदा एक बड़ी-सी कड़ाही में बड़े-बड़े मीठे पराठे लाई जिनके ऊपर अभी तक घी सूं-सूं कर रहा था। इन्हें मेज़ पर रखा हुआ देखकर बरबस मुंह में पानी भर आता था। बिल्ला वासीली वासील्येविच अपनी दुम को सीधी अकड़ाये इधर-उधर और चमड़े की आरामकुर्सी के इर्दगिर्द घूम रहा था, उसके साथ अपनी पीठ, बग़लें और सिर रगड़ता था और अस्वाभाविक रूप से ऊंची और ख़ुशीभरी आवाज़ में म्याऊं-म्याऊं करता था। अख़ील्का साही ने अलमारी के नीचे से अपना सुअर जैसा सिर बाहर निकाला। उसके कांटे उसकी पीठ के साथ चिपके हुए थे। इससे यह स्पष्ट था कि वह भी ख़ुश है।

पिता ने बड़ी ख़ुशी के साथ एक मीठा पराठा खाया। फिर उन्होंने दूसरा पराठा लेकर उसे नली की तरह लपेटा और वह भी खा लिया। "शाबाश, स्तेपानीदा!" उन्होंने कहा, क्रीमवाली चाय का बड़ा-सा घूंट भरा, मूंछों को थपथपाया और एक आंख सिकोड़ ली।

"अब मैं तुम्हें बताता हूं कि कैसे मैं लगभग डूब ही गया था।" इतना कहकर उन्होंने अपनी कहानी सुनानी शुरू की।

"मैं समारा से परसों रवाना हुआ। क़िस्सा यह हुआ, साशा," वे घड़ी भर के लिये गम्भीर रहे, "कि मैंने बहुत ही फ़ायदे की एक ख़रीदारी कर डाली थी। वह पोज़्दूनिन लगातार मेरे पीछे ही पड़ा रहा कि मैं उसका काला घोड़ा, लार्ड वायरन, ख़रीद लूं।

"'मैं क्या करूंगा तुम्हारा घोड़ा ख़रीदकर?' मैंने उससे पूछा। 'ज़रा आकर उसे एक नज़र देख तो लो,' उसने कहा। मैंने घोड़ा देखा तो उसपर लट्टू हो गया। बला का ख़ूब-

सूरत! बड़ा समझदार भी! मुझे लगा कि वह अपनी बैंगनी आंखों से मुझे देखते हुए मानो कह रहा है—'मुझे ख़रीद लो!' पोज्दूनिन मेरे पीछे पड़ा रहा कि मैं उसका घोड़ा ख़रीद ही लूं। उसके साथ स्लेज भी है और साज़ भी... साशा, तुम मुझ से नाराज़ तो नहीं हो यह ख़रीदारी करने के लिये?" पिता ने मां का हाथ अपने हाथ में ले लिया। "मुझे क्षमा कर दो।" मां ने तो अपनी आंखें भी मूंद लीं। इस दिन मां नाराज़ हो ही कैसे सकती थी? पिता जी ने अगर ज़ेमस्त्वो (नगरपालिका) के अध्यक्ष, ख़ुद पोज्दूनिन को भी ख़रीद लिया होता, तो भी वह नाराज़ न होती। "सो, मैंने हुक्म दे दिया कि लार्ड बायरन को मेरे अहाते में लाकर खड़ा कर दिया जाये। फिर सोचने लगा कि अब क्या करूं! घोड़े को समारा में अकेले छोड़ने को मन नहीं मानता था। एक सूटकेस में बहुत-से तोहफ़े भरे," पिता ने शरारती ढंग से एक आंख सिकोड़ी, "पौ फटते ही बायरन को स्लेज में जोत दिया गया और मैं अकेला ही समारा से रवाना हो गया। शुरू में तो कहीं-कहीं बर्फ़ बाक़ी नज़र आई, मगर बाद में तो सड़क पर कीचड़ ही कीचड़ हो गया। मेरे घोड़े के बदन पर थकान के मारे पसीने के झाग के धब्बे उभर आये और वह लड़खड़ाने लगा। मैंने कोल्दिवान में पादरी वोजद्विजेन्स्की के पास रात बिताने का निर्णय किया। पादरी ने मुझे ऐसी सासेज खिलाई कि बस, कुछ न पूछो! तो ख़ैर! पादरी ने मुझ से कहा—'वासीली निकोल्येविच, आप घर नहीं जा पायेंगे। आज रात को खड्डों में जमी हुई बर्फ़ अवश्य ही पिघल जायेगी।' मगर मैंने तो हर हालत में वहां से चल देने का इरादा बना लिया था। इसलिये आधी रात तक पादरी से मेरी बहस होती रही। उसने मुझे काली बेरियों की ऐसी बढ़िया शराब पिलाई कि मज़ा ही आ गया! क़सम ख़ुदा की, अगर ऐसी शराब पेरिस में पहुंच जाये, तो फ़्रांसीसी तो पागल हो उठें... ख़ैर, इसकी चर्चा हम बाद में करेंगे। मैं बिस्तर में जा लेटा और कुछ देर बाद मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। तुम कल्पना कर सकती हो, साशा, कि उस समय मेरे दिल पर क्या गुज़री होगी। मैं तुम से सिर्फ़ बीस कोस की दूरी पर था और फिर भी यह नहीं जानता था कि कब तुम्हारे पास पहुंच पाऊंगा... भाड़ में जाये बरसात, पादरी और शराब..."

"वासीली," मां ने उन्हें टोका और बहुत कड़ाई से घूरते हुए बोली—"मैं बहुत संजीदगी से कह रही हूं कि फिर कभी ऐसा ख़तरा मोल नहीं लेना।"

"मैं क़सम खाता हूं," घड़ी भर भी सोचे बिना वासीली निकोल्येविच ने कहा। "और इस तरह... सुबह होने तक बारिश बन्द हो गई, पादरी प्रार्थना के लिये चला गया, मैंने बायरन को जोतने का हुक्म दिया और वहां से रवाना हो गया। हे भगवान!.. वहां सभी ओर बस पानी ही पानी था। मगर घोड़े को चलने में कम तकलीफ़ हो रही थी। हम बिना सड़कों के घुटने घुटने तक पानी और झीलों में से गुज़र रहे थे... ओह, क्या नज़ारा था... सूरज, हवा... मेरी स्लेज तैर रही थी, मेरे पांव भीगे हुए थे। बड़ा ही मज़ा आ रहा था! आख़िर दूरी पर मुझे अपने गांव के विल्लो वृक्ष दिखाई दिये। मैंने खोम्याकोव्का को पीछे छोड़ा और नदी को पार करने के लिये सबसे अधिक सुविधाजनक स्थान खोजने लगा... उस कमीने पोज्दूनिन को मैं

बताऊंगा," वासीली निकीत्येविच ने कुर्सी के हत्थे को जोर से ठोककर कहा, "कहां कहां पुल बनाने की जरूरत है! कोई तीन कोस तक मुझे ख़ोम्याकोव्का गांव से आगे जाकर नदी को पार करना पड़ा। बहुत कमाल का है यह घोड़ा वायरन! खड़े तट पर मुझे सीधे ऊपर खींच ले गया। कुछ आगे जाकर मैं सोचने लगा कि नदी तो पार कर ली और अब आगे तीन खड्ड हैं, और भी ज़्यादा ख़तरनाक! इरादा बदलने में अब कोई तुक नहीं थी। मैं पहले खड्ड तक पहुंचा। अब तुम कल्पना करो, साशा, वर्फ़ मिला हुआ पानी किनारों को छू रहा था। यह तो तुम्हें मालूम ही है कि यह खड्ड कोई पन्द्रह फ़ुट गहरा है।"

"हे भगवान!" मां ने ज़र्द होते हुए कहा।

"मैंने घोड़े को जोत से निकाला, उसके अंसबंध खोले, साज़ उतारा और उन्हें स्लेज में रख दिया। मगर मैं अपना फ़र कोट उतारना भूल गया। वही सारी मुसीबत की जड़ साबित हुआ। मैं घोड़े की पीठ पर सवार हो गया। भगवान भला करे! घोड़ा शुरू में तो अड़ा। मैंने उसकी पीठ ठोंकी। उसने पानी को सूंघा और हिनहिनाया। वह ज़रा लड़खड़ाया और फिर खड्ड में उतर गया, बर्फ़ीले कीचड़ में। वह गर्दन तक कीचड़ में धसक गया, उसने हिलने-डुलने के लिये ज़ोर लगाया, मगर टस से मस न हो पाया। मैं उसकी पीठ से नीचे उतरा और ख़ुद भी बर्फ़ीले कीचड़ में धसक गया, सिर्फ़ मेरा सिर बाहर रहा। मैं इधर-उधर हाथ-पैर मारने, एक तरह से कुछ तैरने और कुछ रेंगने लगा। घोड़े ने देखा कि मैं उसे छोड़े जा रहा हूं—वह दर्दनाक ढंग से हिनहिना उठा मानो कह रहा हो—मुझे छोड़कर न जाओ! अब वह अपनी टांगों को हरकत में लाया और मेरे पीछे-पीछे रेंगने लगा। वह मेरे क़रीब पहुंच गया और उसके अगले सुम मेरे खुले हुए कोट के छोरों में उलझ गये और मुझे पानी में घसीट ले चले। मैंने अपने को सम्भालने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया, मगर अधिकाधिक नीचे ही पहुंचता गया। मेरे पैरों के नीचे कहीं ज़मीन नहीं थी। ख़ुशक़िस्मती ही समझो कि मेरे कोट के बटन खुले हुए थे और जब मैं अपने को बचाने के लिए पानी में संघर्ष कर रहा था, तो मेरा कोट उतर गया। वह अभी तक खड्ड के तल में पड़ा हुआ है... मैं सतह पर आया, फिर से सांस लेने लगा और बाहें फैलाकर मेढक की तरह निश्चल-सा पड़ा रहा। तभी मुझे पानी में से बुलबुले उठने की आवाज सुनाई दी। मैंने घूमकर देखा तो पाया कि घोड़े का सिर पानी के नीचे था और उसकी नाक से बुलबुले निकल रहे थे—लगामों पर उसका पैर आ गया था। मैं उसकी ओर मुड़ा। मैंने उसके बन्द खोले और लगामें अलग कीं। उसने मेरी ओर सिर घुमाया और इन्सान की तरह मुझे देखा। कोई घंटे भर तक हम इस कीचड़ में छपछपाते रहे। मुझे लगा कि मेरी हिम्मत अब जवाब दिये जा रही है और शरीर ठंड से अकड़ने लगा है। मेरा दिल बैठने लगा। तभी मैंने देखा कि घोड़े ने कीचड़ में चलना बन्द कर दिया था, वह मुड़कर तैरने लगा था। इसका मतलब यह था कि हम खुले पानी में पहुंच गये थे। पानी में तैरना आसान था और हम खड्ड के तट पर जा पहुंचे। पहले बायरन और फिर मैं घास पर पहुंचा। मैंने उसके अयाल पकड़ लिये और हम

दोनों लड़खड़ाते हुए साथ-साथ चल दिये। हमारे सामने अभी दो खड्ड और थे... तभी मैंने अपने लोगों को घोड़ों पर अपनी ओर आते देखा..."

वासीली निकीत्येविच ने कुछ और अस्पष्ट-से शब्द कहे और फिर अचानक उनका सिर नीचे को झुक गया। उनका चेहरा एकदम सुर्ख़ हो गया था और दांत बजने लगे थे।

"घबराने की कोई बात नहीं है, कोई बात नहीं है। यह तो समोवार की गैस का असर है," उन्होंने कहा, कुर्सी की टेक लगाई और आंखें मूंद लीं।

उनके शरीर में कंपकंपी शुरू हो गई। उन्हें बिस्तर में लिटा दिया गया और वे बेहोशी की हालत में कुछ बड़बड़ाने लगे...

पावन सप्ताह

पिता तीन दिन तक बुख़ार में पड़े रहे और जब होश आया तो सबसे पहले उन्होंने यही पूछा कि बायरन ज़िन्दा है या नहीं। वह ख़ूबसूरत घोड़ा ख़ूब मज़े में था।

वासीली निकीत्येविच की ज़िन्दादिली और ख़ुशमिज़ाजी ने उन्हें जल्द ही फिर से अपने पैरों पर खड़ा कर दिया। वसन्त की बोआई के पहले का व्यस्त समय शुरू हो गया था। लुहारख़ाने में फालों के सिरे तेज़ किये जाने लगे, हलों की मरम्मत होने लगी और घोड़ों को नाल लगाये जाने लगे। खत्तियों में मज़दूर चूहों को डराते और धूल के बादल उड़ाते हुए बहुत दिनों से बन्द पड़े अनाज को फावड़ों से इधर-उधर हिलाने-डुलाने लगे। एक छानी में छंटाई की मशीन भड़भड़ा रही थी। घर में ज़ोर-शोर से वसन्त के दिनों की सफ़ाई शुरू हो गई थी – खिड़कियां साफ़ की गईं, फ़र्श धोये गये और छतों से मकड़ियों के जाले उतारे गये। क़ालीनों, कुर्सियों और सोफ़ों को छज्जे में लाकर, उन्हें पीट-पीट कर उनमें से जाड़े का असर निकाला गया। जाड़े में जो भी चीज़ें अपनी ही जगह पड़ी रही थीं, उन्हें हिलाया-डुलाया गया, उन्हें झाड़ा-पोंछा गया और नये ढंग से व्यवस्थित किया गया। साही अख़ील्का को तो होहल्ला बिल्कुल नागवार था, वह तो बुरी तरह झल्ला उठी और एक स्टोर में जाकर रहने लगी।

खाने के कमरे के चांदी के बर्तन और देव-प्रतिमाओं के चांदी के फ़्रेम तो मां ने ख़ुद ही साफ़ किये, पुराने संदूक खोले, जिनसे घर भर में नेफ़्थलीन की गन्ध फैल गई, वसन्त के कपड़े बाहर निकाले जिनमें संदूकों में पड़े रहने के कारण सिलवटें पड़ गई थीं और जो जाड़े भर पड़े रहने से अब नये जैसे लगते थे। खाने के कमरे में पूरी तरह उबले हुए अंडों से भरी एक टोकरी रखी थी। निकीता और अर्कादी इवानोविच ने अंडों को प्याज़ के छिलकों के उबले हुए पानी से रंगा और वे पीले हो गये। इसके बाद उन्होंने अंडों को काग़ज़ों में लपेटकर सिरके मिले उबलते पानी में डाल दिया। इस तरह अंडों पर रंग-बिरंगे डिज़ाइन बन गये। फिर उन्होंने अंडों पर रुपहली और सुनहरी पालिश की।

शुक्रवार के दिन घर भर में वानीला ग्रौर इलायचियों की ख़ुशबू फैल गई। बावर्चिन ने ईस्टर के केक बनाने शुरू कर दिये थे। शाम को मां के बिस्तर पर साफ़-सुथरे तौलिये में लिपटे हुए कोई दसेक केक रखे हुए थे। इनमें कुछ केक ऊंचे ग्रौर फूले फूले थे ग्रौर कुछ चौड़े ग्रौर गोल।

सप्ताह भर मौसम डांवांडोल रहा। शुरू में तो भारी काली घटा छाई रही, भुरभुरी बर्फ़ पड़ी ग्रौर फिर ग्राकाश निर्मल हो गया। तलहीन नीले ग्राकाश में वसन्त का ठंडा-सा प्रकाश झलक उठा। फिर नम बर्फ़ का तूफ़ान ग्राया। रात को डबरों में पानी जम गया।

शनिवार को जागीर सूनी-सूनी रही। घर के ग्रौर नौकरों के क्वार्टरों के ग्राधे लोग सात कोस की दूरी पर स्थित कोलोकोल्त्सोव्का गांव के गिरजे की बड़ी प्रार्थना में भाग लेने के लिए चले गये थे।

उस दिन मां की तबीयत कुछ ख़राब थी – उसने हफ़्ते भर बहुत ग्रधिक काम किया था। पिता जी ने कहा कि वे रात के खाने के फ़ौरन बाद सो जायेंगे। ग्रर्कादी इवानोविच हर दिन समारा से ख़त पाने की बेकार प्रतीक्षा करते रहे थे। इस समय वे कौवे की तरह बेहद उदास-से ग्रपने कमरे का दरवाज़ा बन्द किये बैठे थे।

माता-पिता ने निकीता से कहा कि ग्रगर वह बड़ी प्रार्थना में जाना चाहता है, तो ग्रर्त्योम को ढूंढ़कर उसे बग्घी में ग्रफ़ोडिट घोड़ी जोतने के लिए कह दे। इस घोड़ी के चारों सुमों की नालबन्दी कर दी गई थी। निकीता को बताया गया कि उसे ग्रन्धेरा होने से पहले घर से जाना होगा ग्रौर वासीली निकीतयेविच के एक पुराने दोस्त प्योत्र पेत्रोविच देव्यातोव के यहां रात बितानी होगी। प्योत्र पेत्रोविच देव्यातोव की कोलोकोल्त्सोव्का गांव में परचूनी की दूकान थी। मां ने साथ में यह भी जोड़ दिया – "संयोगवश उनके घर में बहुत-से बालक हैं ग्रौर तुम यहां हर समय ग्रकेले ही रहते हो। तुम्हारे लिए यह हानिकारक है।"

झुटपुटा होने पर निकीता लंबे-तड़ंगे ग्रर्त्योम की बग़ल में बग्घी में जा बैठा। ग्रर्त्योम छिद्रोंवाले पुराने कोट पर नई पेटी बांधे था। "हां, तो ले चल हमें, भगवान तेरा भला करे," ग्रर्त्योम ने लगाम सम्भालते हुए घोड़ी से कहा। बूढ़ी ग्रौर भारी कूल्होंवाली ग्रफ़ोडिट सिर झुकाये हुए दुलकी चाल से चल दी।

बग्घी ग्रहाते से बाहर ग्राई, लुहारख़ाने के पास से गुज़री ग्रौर पायदान को छूते हुए पानी में से उसने खड्ड को पार किया। किसी कारणवश ग्रफ़ोडिट ग्रपना सिर घुमा घुमाकर ग्रर्त्योम को देखती जाती थी।

ग्राकाश की नीलिमा उन डबरों में प्रतिबिम्बित हो रही थी जिनपर बर्फ़ की पतली-सी तह जमी हुई थी। घोड़ी के सुमों के नीचे बर्फ़ कचकचाती हुई टूटती थी ग्रौर बग्घी खड़खड़ा रही थी। ग्रर्त्योम उदासी भरी चुप्पी साधे ग्रौर मुंह लटकाये बैठा था। वह दुन्याशा के प्रति ग्रपने ग्रसफल प्यार के बारे में सोच रहा था। हरे हरे ग्राकाश में, डूबते सूरज की छोटी-सी लाल पट्टी के ऊपर एक सितारा चमक रहा था – बर्फ़ के एक टुकड़े की भांति।

प्योत्र पेत्रोविच के बच्चे

लोहे के एक चक्र के सहारे छत के साथ एक लैम्प टंगा हुआ था। नीली रोशनीवाली उसकी बत्ती नीची थी और इस तरह उसकी रोशनी बहुत ही हल्की-हल्की थी और उससे मिट्टी के तेल की गन्ध आ रही थी।

फ़र्श पर दो विस्तर विछे हुए थे, पंखों वाले और कपड़े से ढके हुए। उनसे घर की और लड़कों के तन की गन्ध आ रही थी। इन्हीं विस्तरों पर निकीता और प्योत्र पेत्रोविच के छः बेटे – वोलोद्या, कोल्या, ल्योश्का, ल्योन्का उर्फ़ रोंदू और दो सबसे छोटे बेटे, जिनके नामों में निकीता को कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेटे हुए थे।

बड़े लड़के धीरे-धीरे गपशप कर रहे थे। रोंदू ल्योन्का की बार-बार ख़बर ली जाती। कभी उसका कान उमेठा जाता, तो कभी उसके सिर पर चपत जमाई जाती ताकि वह रोये नहीं। छोटेवाले लड़के सो रहे थे, उनकी नाकें पंख के विस्तरों में धंसी हुई थीं।

प्योत्र पेत्रोविच का सातवां बच्चा था – बेटी आन्ना। वह निकीता की हमउम्र थी। चित्तियों से भरा चेहरा, पक्षी की आंखों के समान गोल-गोल आंखें जिनमें मुस्कान की झलक तक नहीं थी और चित्तियों से भरी हुई नाक – ऐसी थी आन्ना। जब-तब वह लड़कों के कमरे के दरवाज़े के सामने दबे पांव आती। तभी लड़कों में से कोई न कोई उससे कहता –

"आन्ना, भाग जाओ यहां से, वरना मैं अभी उठता हूं..."

और आन्ना जैसे दबे पांव आती थी, वैसे ही लौट जाती थी। घर में ख़ामोशी थी।

प्योत्र पेत्रोविच गिरजे का संरक्षक था और इसलिए शाम होते ही वहां चला गया था। उसकी पत्नी मारिया मिरोनोव्ना ने बच्चों से कहा –

"तुम ज़रा शोर तो करके देखो, तुम्हारे सिर न क़लम कर दिये, तो कहना..."

वह सुबह की बड़ी प्रार्थना के पहले कुछ आराम करने के लिए लेट गई। लड़कों को आदेश दिया गया कि वे लेटे रहें, भागें-दौड़ें नहीं। गोल चेहरा, माथे पर लहराती हुई एक ज़ुल्फ़ और सामनेवाले दांत ग़ायब, ऐसा था यह ल्योश्का जो कोई क़िस्सा सुना रहा था।

"पिछले ईस्टर में हमने अंडे लुढ़काने का खेल खेला। मैंने दो सौ अंडे जीते। मैं एक के बाद एक अंडा खाता गया, हत्ता कि मेरा पेट गुब्बारे की तरह फूल गया।"

आन्ना को शंका हुई कि निकीता कहीं यक़ीन ही न कर ले, इसलिए वह दरवाज़े के पीछे से झटपट बोली –

"झूठ बोल रहा है। आप इसकी बात पर विश्वास न कर लीजिये।"

"भगवान की क़सम, मैं अभी उठकर तुम्हारी ख़बर लेता हूं," ल्योश्का ने उसे धमकाया। दरवाज़े के पीछे ख़ामोशी छा गई।

सांवला, घुंघराले बालोंवाला सबसे बड़ा लड़का वोलोद्या बिस्तर में उकड़ूं बैठते हुए बोला –

"कल हम गिरजाघर में जाकर घंटे बजायेंगे। जब मैं घंटा बजाने लगता हूं, तो सारा घंटाघर ही कांपने लगता है। छोटी घंटियां तो मैं बायें हाथ से बजाता हूं। वे टनटन करती हैं और अपने इस दायें हाथ से बड़ा घंटा बजाता हूं जो ज़ोर से टन-टोन, टन-टोन करने लगता है। बड़े घंटे का वज़न एक लाख पूड* है।"

"झूठ है," दरवाज़े के पीछे से फुसफुसाहट सुनाई दी।

वोलोद्या ऐसे तेज़ी से मुड़ा कि उसके घुंघराले बाल लहरा उठे।

"आन्ना!"

"और हमारे पिता जी इतने ताक़तवर हैं कि कुछ पूछो ही नहीं," वोलोद्या कहता गया। "वे घोड़े को अगली टांगों से ऊपर उठा सकते हैं... मैं तो खैर अभी ऐसा नहीं कर सकता। पर यदि तुम गर्मियों में हमारे यहां आओ तो हम तुम्हें अपने तालाब पर ले चलेंगे। छः कोस लम्बा है हमारा तालाब। मैं वृक्ष की सबसे ऊंची चोटी पर चढ़कर वहां से सिर के बल पानी में छलांग लगा सकता हूं।"

"और मैं सांस रोक कर पानी के नीचे रह सकता हूं और देख सकता हूं," ल्योश्का ने कहा। "पिछली गर्मियों में हम वहां जाकर नहाते रहे और मेरे सिर में ये बड़े-बड़े कीड़े, पिस्सू और गुबरैले हो गये थे।"

"झूठा," दरवाज़े के पीछे से हल्की-सी फुसफुसाहट बामुश्किल सुनाई दी।

"आन्ना, मैं तुम्हारी चोटी पकड़कर खींचूंगा!"

"लड़की क्या है, निरी मुसीबत है," वोलोद्या ने खीझ कर कहा। "वह हर वक़्त हमारे मामलों में टांग अड़ाती रहती है, निरी मुसीबत है और फिर मां से शिकायत भी करती है कि हम उसकी पिटाई करते हैं।"

दरवाज़े के पीछे से सिसकी सुनाई दी। तीसरा लड़का, कोल्या, अपनी मुट्ठी पर सिर टिकाये करवट लेकर लेटा हुआ था। वह अपनी दयालु और कुछ कुछ उदास-उदास आंखों से लगातार निकीता को ताक रहा था। उसका चेहरा लम्बूतरा था और उसपर शान्ति झलक रही थी। उसकी नाक के सिरे और ऊपरवाले होंठ के बीच बहुत जगह थी। निकीता ने जब उसकी ओर देखा तो वह आंखों ही आंखों में मुस्कराया।

"आपको तैरना आता है?" निकीता ने पूछा।

कोल्या की आंखों में मुस्कान खिल उठी। वोलोद्या ने उपेक्षा के अन्दाज में कहा —

"यह तो बस किताबें ही पढ़ा करता है। गर्मियों में यह छत पर रहता है, तम्बू लगाकर — हां, हां, छत पर तम्बू में। यह वहां लेटकर पढ़ता रहता है। पिता जी उसे तालीम दिलाने के लिए शहर भेजना चाहते हैं। मैं दूकान का काम-काज सम्भालूंगा। ल्योश्का तो अभी छोटा है, इसलिए कुछ दिन और खेल-कूद ले। हमारे लिए सबसे बड़ी सिरदर्दी तो बना हुआ यह

*पूड — सोलह सेर से कुछ अधिक होता है। — अनु०

रोंदू," उसने ल्योन्का के सामनेवाले बाल खींचे, "बड़ा ही निकम्मा लड़का है यह। पिता जी का कहना है कि इसके पेट में कीड़े हैं।"

"नहीं, नहीं, उसके पेट मे ऐसा कुछ नहीं है। कीड़े तो मेरे पेट में हैं," ल्योश्का ने कहा। "क्योंकि मैं फलियां और बबूल के फल खाता रहता हूं। मैं तो मेढक के बच्चे भी खा सकता हूं।"

"झूठा," दरवाज़े के पीछे से फिर धीमी-सी आवाज़ सुनाई दी।

"अब तुम बचकर नहीं जा सकोगी, आन्ना," ल्योश्का उछलकर खड़ा हुआ और दरवाज़े की तरफ़ भागा। रास्ते में उसने सोये हुए बच्चे से ठोकर खाई। बच्चा जागा नहीं, और नींद में ही कुनमुना कर रह गया। ऐसे प्रतीत हुआ मानो बरामदे में हवा के साथ पत्ते उड़े जा रहे हों। आन्ना का कहीं नाम-निशान ही नहीं था। दूरी पर दरवाज़ा चरमराया।

ल्योश्का ने लौट कर कहा –

"वह मां के पास भाग गई है। ख़ैर, कोई बात नहीं, मुझसे बचकर कहां जायेगी। मैं इसका दिमाग़ ठिकाने करके ही दम लूंगा।"

"बेकार उसे परेशान नहीं करो, ल्योश्का," कोल्या ने कहा। "क्यों उसके पीछे पड़े रहते हो?"

ल्योश्का, वोलोद्या और यहां तक कि ल्योन्का रोंदू भी उसपर बरस पड़े –

"हम उसके पीछे नहीं पड़े रहते! वही हमारे सिर पर सवार रहती है। हज़ार कोस दूर चले जाने पर भी अगर घूमकर देखोगे तो उसे अपने पीछे-पीछे पाओगे। हर चीज में मीन-मेख निकालती रहती है – हम झूठ बोलते हैं, जो कुछ कहा जाता है वह नहीं करते हैं..."

"एक बार मैं दिन भर सरकंडों के बीच छिपकर पानी में बैठा रहा ताकि मुझे इसकी सूरत न नजर आये। जोंकें मुझे नोच-नोचकर खाती रहीं।"

वोलोद्या ने कहा –

"जब हम खाना खाने बैठे तो उसने फ़ौरन मां को बताया – 'वोलोद्या ने चूहा पकड़ा है जो उसकी जेब में है।' उसे क्या मालूम कि मेरे लिए चूहा दुनिया की सबसे प्यारी चीज़ है।"

ल्योन्का रोंदू ने कहा –

"वह हमेशा खड़ी-खड़ी ऐसे लगातार देखती रहती है कि आदमी रोने लगता है।"

आन्ना के बारे में निकीता से शिकायत करते हुए लड़के बिल्कुल भूल ही गये कि उन्हें प्रार्थना से पहले चुपचाप लेटे रहने और बातें न करने का आदेश दिया गया था। अचानक उन्हें दूर से मारिया मिरोनोव्ना की भारी-भरकम आवाज सुनाई दी। उसने डांटते हुए कहा –

"मुझे क्या हज़ार बार तुम लोगों से कहना होगा!.."

लड़के फ़ौरन ख़ामोश हो गये। फिर कानाफूसी करते और एक-दूसरे को कोहनियाते हुए उन्होंने अपने बूट और भेड़ की खाल के छोटे कोट पहने, गले में गुलूबन्द लपेटे और सड़क पर भाग गये।

मारिया मिरोनोव्ना प्लश का बना हुआ नया कोट पहने और गुलाबों के छापेवाली शॉल ओढ़े हुए बाहर आई। बड़ी-सी शॉल में लिपटी-लिपटायी आन्ना अपनी मां का हाथ पकड़े थी।

सितारों भरी रात थी। हवा में मिट्टी और पाले की गंध थी। काले-काले झोंपड़ों के क़रीब से मर्द, औरतें और बच्चे गिरजाघर को चले जा रहे थे। डबरों के ऊपर जमी हुई बर्फ़ की तह उनके पैरों के नीचे कचकचा रही थीं। दूरी पर, बाज़ार चौक में आकाश को छूता हुआ गिरजे का सुनहरा गुम्बज नज़र आ रहा था। गुम्बज के नीचे तीन पंक्तियों में दीपक जल रहे थे। मन्द-मन्द हवा के झोंके दीप-शिखाओं को सहला रहे थे।

मन की दृढ़ता

प्रार्थना के बाद वे घर लौटे। मेज़ पर रखे मीठे और ईस्टर के केकों और दीवार पर भी काग़ज़ी गुलाब लगे थे। खिड़की के क़रीब लटके हुए पिंजरे में एक कानरी चिड़िया चहचहा रही थी। वह लैम्प की रोशनी से परेशान थी। लम्बा और काला कोट पहने हुए प्योत्र पेत्रोविच अपनी तातारी मूंछों के बीच से मुस्करा रहे थे। उनकी ऐसी ही आदत थी। उन्होंने छोटे-छोटे गिलासों में सभी के लिए चेरी की हल्की शराब डालनी शुरू की। लड़कों ने अंडे तोड़ने और चमचे चाटने शुरू किये। मारिया मिरोनोव्ना इतनी अधिक थकी हुई थी कि शॉल उतारे बिना ही बैठ गई। वह तो तब तक खा-पी और अन्य कोई काम भी नहीं कर सकती थी, जब तक कि बालक, जिन्हें वह गुट्ट कहती थी, पूरी तरह शान्त नहीं हो जाते।

निकीता लैम्प की नीली रोशनी के नीचे भेड़ की खाल का कोट ओढ़कर बिस्तर पर लेटा ही था कि बारीक आवाज़ और गम्भीर ढंग से गाये जानेवाले ये शब्द उसके कान में गूंजने लगे – "ईसा मसीह पुनर्जीवित हो गये हैं। उन्होंने मरकर मृत्यु पर विजय पा ली है..." फिर से उसे तख़्तों की सफ़ेद दीवार दिखाई दी, उसने सोने के पतरे जड़े चौखटोंवाली देव-प्रतिमाओं के सामने असंख्य मोमबत्तियां जलती देखीं। उसे अपने ऊपर काफ़ूर के धुएं के बादलों के बीच से गिरजे के गुम्बज की सितारों जड़ी नीलिमा के नीचे पंख फैलाये हुए एक कबूतरी नज़र आई। जाली लगी हुई खिड़कियों के बाहर रात थी, भजन गूंज रहा था, भेड़ की खालों और लाल रंग के घटिया कपड़े की गन्ध आ रही थी। मोमबत्तियों की रोशनी हज़ारों आंखों में प्रतिबिम्बित हो रही थी। पश्चिम की ओर के दरवाज़े खुले और ध्वजवाहकों ने प्रवेश किया। अन्दर आने से पहले वे दरवाज़े पर रुके। इस रात को साल भर के दौरान किये गये गुनाह माफ़ हो गये। चित्तियों से भरी नाकवाली आन्ना कानों के ऊपर दो नीली बो लगाये हुए अपने भाइयों को चूमने के लिए झुकी...

अगली सुबह धुंधली थी, गर्म थी। घंटियां टनटन बजती हुई पर्व के शुभ समाचार की सूचना दे रही थीं। निकीता और प्योत्र पेत्रोविच के सभी बच्चे, सबसे छोटे भी, गांव के पंचायती

 खलिहान में गये। लोग रंग-विरंगे कपड़े पहने थे और भारी भीड़ के कारण काफ़ी शोर मचा

हुआ था। लड़के तरह-तरह के खेल खेल रहे थे। लड़कियां शोख रंगों की शॉलें ओढ़े और फूली हुई नई सूती फ़ाकें पहने हुए खत्ती की दीवारों के क़रीब बैठी थीं। हरेक के हाथ में सूरजमुखी के बीजों, किशमिश और अंडों से भरा हुआ रूमाल था। वे आते-जाते राहगीरों को देखती और हंसती-चहकती हुई बीज छील छीलकर खा रही थीं।

पंच का बांका-छैला बेटा पेत्या कुन्दों के ढेर के सिरे पर बड़ी शान से टेक लगाये बैठा था। वह अपने पैर सामने की ओर फैलाये हुए था ताकि उसके बढ़िया-क़ीमती जूतों पर सभी की नज़र पड़े। वह किसी की ओर भी ध्यान दिये बिना अकार्डियन के पर्दों पर योंही उंगलियां चला रहा था। अचानक वह रंग में आया और उसने एक प्यारी-सी लोक-धुन बजानी शुरू कर दी।

एक अन्य दीवार के पास बहुत-से लड़के घेरा बनाकर खड़े थे और 'टॉस' का खेल खेल रहे थे। उनमें से प्रत्येक की मुट्ठी में तांबे के ढेर-सारे सिक्के थे। जिस लड़के की 'टॉस' करने की बारी होती, वह पांच कोपेक का सिक्का नीचे फेंकता, उसे एड़ी से दबाता, फिर बूट के पंजे से रगड़कर उसे चमकाता, ठोकर लगाकर बाहर निकालता और फिर उसे हवा में उछालकर कहता – "हेड या टेल ?"

निकट ही मैदान में, जहां पिछले साल की घास में से नवनीत-पुष्प निकल आये थे, बैठी हुई लड़कियां "अंडे खोजो" का खेल खेलने में मस्त थीं। इस खेल के अनुसार भूसे की टाल को दो भागों में बांट दिया जाता है। एक भाग में अंडे छिपाये जाते हैं। विरोधी दल की लड़कियों को यह अनुमान लगाना होता है कि भूसे के किस हिस्से में अंडे छिपाये गये हैं।

निकीता "अंडे खोजो" का खेल खेलनेवाली लड़कियों के दल के पास गया और उसने अपनी जेब से अंडा निकाला। उसी समय उसे अपने पीछे आन्ना की फुसफुसाहट सुनाई दी। न जाने वह कहां से इस जगह आ टपकी थी।

"सुनिये, आप इनके साथ नहीं खेलियेगा। ये आपको धोखा देकर अंडे हथिया लेंगी।"

आन्ना ने अपनी मुस्कानहीन गोल-गोल आंखों से निकीता की ओर देखा और चित्तियोंवाली नाक से सूं-सूं की। तब निकीता लड़कों के पास गया जो सीसे भरी हड्डियों से खेल रहे थे। आन्ना यहां भी आ टपकी और फुसफुसाई –

"इनके साथ मत खेलियेगा। मैंने इनकी बातें सुन ली हैं। वे आपको धोखा देंगे।"

निकीता जहां भी जाता, आन्ना हवा में उड़ते हुए पत्ते की तरह उसके पीछे-पीछे जा पहुंचती और कानों में फुसफुसाती रहती। निकीता समझ नहीं पा रहा था कि वह ऐसा क्यों करती है। उसे बड़ी परेशानी हो रही थी, शर्म आ रही थी। उसने देखा कि लड़के उसे घूरने और उसपर फब्तियां कसने लगे हैं।

"लड़की के साथ खेलता है!" एक चिल्लाया।

निकीता ठंडे और नीले तालाब की ओर चला गया। खड़े तट के गढ़ों में अभी तक पिघली हुई गन्दी बर्फ़ नज़र आ रही थी। दूरी पर निपत्ते वृक्षों के झुरमुट में कौवे चक्कर काटते हुए कांय-कांय कर रहे थे...

"सुनिये," आन्ना फिर उसके पीछे फुसफुसाई, "मैं जानती हूं कि धानीमूष कहां रहता है। आप उसे देखना चाहते हैं?"

निकीता ने घूमकर देखे बिना ही ग़ुस्से से सिर हिला दिया।

"क़सम खाती हूं। अगर झूठ बोलूं तो मेरी आंखें फूट जायें। आप धानीमूष को क्यों नहीं देखना चाहते?"

"नहीं चाहता।"

"अच्छा तो यह चाहते हैं कि हम नवनीत-पुष्प तोड़कर आंखों पर मलें ताकि हमें कुछ भी नज़र न आये?"

"नहीं, मैं नहीं चाहता।"

"तो यूं कहिये कि आप मेरे साथ खेलना नहीं चाहते?.."

आन्ना ने अपने होंठ दबाये, तालाब की लहरियोंवाली सतह में झांका, उसकी कसी हुई चोटी हवा से एक ओर को उड़ गई, चित्तियोंवाली उसकी नाक का सिरा लाल हो गया, उसकी आंखें डबडबा आईं और वह पलकें मिचमिचाने लगी। अब निकीता सारी बात समझ गया। आन्ना सुबह से उसके पीछे-पीछे इसीलिए भागी फिर रही थी कि उसे निकीता के बारे में वैसी ही अनुभूति हो रही थी जैसी निकीता को लील्या के सम्बन्ध में हुई थी।

निकीता जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाता हुआ खड़े तट की ओर चला गया। अगर अब भी आन्ना उसके पीछे-पीछे आती, तो वह पानी में कूद जाता। उसे इतनी अधिक परेशानी हो रही थी, इतनी शर्म आ रही थी। लील्या के सिवा वह और किसी से भी अजीब-से शब्दों का आदान-प्रदान नहीं कर सकता था, ख़ास अन्दाज़ में नज़रें नहीं मिला सकता था, मुस्करा नहीं सकता था। किसी और लड़की के साथ ऐसा करना तो सरासर बेहयाई होती, विश्वासघात होता।

"लड़कों ने आपके कान भर दिये कि आप मुझसे दूर रहें," आन्ना ने कहा, "मैं मां से सब कुछ कह दूंगी... मैं अकेली ही खेलूंगी... बड़ी परवाह पड़ी है मुझे आप लोगों की... मुझे मालूम है कि कहां एक चीज़ छिपी हुई है... बहुत ही दिलचस्प है यह चीज़..."

निकीता ने मुड़कर नहीं देखा। उसे आन्ना की बुदबुदाहट सुनाई देती रही, मगर उसने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। उसका दिल कठोर हो चुका था।

वसन्त

सूरज की ओर देख पाना अब मुमकिन नहीं था। वह तो आकाश से आग बरसाने लगा था। गहरे नीले आकाश में तैरते हुए बादल बर्फ़ के ढेर जैसे लग रहे थे। वसन्ती समीर में ताज़ा घास और पक्षियों के घोंसलों की गंध घुली मिली हुई थी।

घर के सामने महकते हुए पोपलार पर बड़े बड़े अंकुर फूटने लगे थे। मुर्गियां धूप में कुड़-कुड़ करती फिर रही थीं। बगीचे में सड़े हुए पत्तों की तह में से हरी-हरी घास निकल आई थी। सारा मैदान छोटे-छोटे सफ़ेद और पीले सितारों से भर गया था। बगीचे में पक्षियों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जाती थी। काले पक्षी वृक्षों के तनों के इर्द-गिर्द मंडराते थे, बड़े मजे से चलते थे। ओरिओल पक्षियों ने लाइम वृक्षों में अपने घोंसले बना लिये थे। ये बड़े बड़े हरे पक्षी होते हैं और इनका नीचेवाला भाग पीला होता है जो उनके पंखों के नीचे सोने की तरह चमकता रहता है। वे इधर-उधर उड़ते हुए अपनी मीठी आवाज़ में चहक रहे थे।

जैसे ही सूरज निकलता छतों और ओसारों में बैठी हुई मैनाएं जाग उठतीं और पक्षियों के सहगान में अपनी तरह तरह की आवाजें मिला देतीं। वे कभी बुलबुलों की नक़ल करतीं तो कभी भरद्वाज पक्षियों की और कुछ अफ़्रीकी पक्षियों की, जिनकी आवाजें उन्होंने जाड़े के दिनों में सुनी थीं जब वे विदेशों में थीं। वे बहुत ही कर्णकटु और भयानक आवाजों में चीखतीं, दूसरे पक्षियों का मज़ाक़ उड़ातीं। पारदर्शी भोजवृक्षों के बीच से उड़ती हुई कठफोड़वा चिड़िया भूरे रंग के धब्बे जैसी लग रही थी। वह एक तने पर जा बैठी, उसने अपने इर्दगिर्द नज़र दौड़ाई और अपनी लाल कलगी ऊंची की।

रविवार की एक धूप नहाई सुबह को तालाब किनारे के ओस भीगे वृक्षों पर बैठी हुई कोयल ने अपना अलाप शुरू किया। वह अपनी उदासीभरी, टीसती और कोमल आवाज़ में कीड़ों से लेकर बगीचे की हर जानदार चीज़ को अपनी शुभकामना देती हुई कह रही थी—

"जियो, प्यार करो, ख़ुश रहो, कू-कू! मगर मैं अकेली रहती हूं, किसी को परेशान नहीं करती, कू-कू!.."

सारा बगीचा दम साधकर कोयल का गान सुनता रहा। गुबरैले और पक्षी तथा सदा आश्चर्यचकित रहने और सड़क तथा छज्जे की पैड़ियों पर पेट के बल रेंगनेवाले मेढक अपने अपने भाग्य का अनुमान लगाने की कोशिश करते। कोयल का गीत ख़त्म होते ही बगीचे की आवाज़ों में रंगीनी आ गई और पत्ते सरसराने लगे।

एक दिन निकीता ऊपरी तालाब के किनारे पर बैठा था, हाथों के बीच ठुड्डी टिकाये हुए। वह हरे भरे समतल चरागाह में घोड़ों के एक झुण्ड को देख रहा था। बांके बधिया घोड़े अपनी पूंछों को लहराते और सिर नीचा किये हुए छोटी-छोटी घास चर रहे थे। घोड़ियां इस बात की तसल्ली करने के लिए कि उनके बछेरे पीछे-पीछे ही आ रहे हैं, मुड़मुड़ कर देखतीं। पिण्डाकार घुटनों और पतली-पतली टांगों वाले बछेरे मानो इस बात से डरते हुए कि कहीं अपनी माताओं से बिछुड़ न जाएं, उनके इर्दगिर्द ही फुदकते फिर रहे थे। जब-तब वे अपनी पूंछें ऊपर को उठाकर अपनी माताओं के स्तनों से दूध पीते। वसन्त के ऐसे सुहाने दिन दूध पीने में भी बड़ा मज़ा था!

तीन साल की घोड़ियां झुण्ड से अलग होकर हिनहिनातीं, उछलतीं-कूदतीं, चौपैरी छलांगें लगातीं और सिरों को झटकती हुई मैदान के गिर्द चक्कर लगातीं। इनमें से कोई घास पर

लोटने-पोटने लगती, कोई अपने दांत निपोरती, हिनहिनाती और किसी अन्य घोड़ी को काटने की कोशिश करती।

कनवास का कोट पहने हुए वासीली निकीत्येविच बांध के पास से जाने वाली सड़क पर दो पहिया बग्घी दौड़ाते हुए गुज़रे। उनकी दाढ़ी एक ओर को उड़ रही थी, वे ख़ुशी से आंखें सिकोड़े हुए थे और उनके गाल पर कीचड़ का एक धब्बा लगा हुआ था। निकीता को देखकर उन्होंने अपने घोड़े को रोका।

"इस झुण्ड में से कौनसा घोड़ा तुम्हें सबसे अधिक पसन्द है?"

"आप मुझसे यह क्यों पूछ रहे हैं?"

"सभी तरह के 'क्यों' के बिना जवाब दो।"

निकीता ने भी अपने पिता की तरह आंखें सिकोड़ीं और काले-कत्थई 'क्लोपिक' घोड़े की ओर संकेत किया। निकीता बहुत देर से इसी घोड़े पर नज़र टिकाये हुए था, क्योंकि वह बहुत भला था, विनम्र था और उसका मुंह असाधारण रूप से दयालु था।

"वह।"

"बहुत ख़ूब! करते रहो पसन्द!"

वासीली निकीत्येविच ने एक आंख सिकोड़ी, चटखारा भरा, लगामें हिलाईं और जानदार घोड़ा समतल सड़क पर दो पहिया बग्घी को आसानी से खींच ले चला। निकीता, दूर जाते हुए अपने पिता को देख रहा था। वह सोच रहा था कि पिता जी ने अगर यह सवाल पूछा है तो इसकी तह में ज़रूर कोई बात है।

झण्डा लहराया गया

गौरैयों के शोर से निकीता की आंख खुली। जागने पर उसे ओरिओल पक्षी की मधुर आवाज़ सुनाई दी जो पानी के नीचे बजाई जानेवाली सीटी के समान थी। खिड़की खुली थी, कमरे में घास और ताज़गी की गन्ध थी और भीगे हुए पत्ते सूरज की किरणों को गुज़रने से रोक रहे थे। प्यारी-प्यारी हवा चल रही थी और खिड़की के दासे पर ओस की बूंदें गिर रही थीं। निकीता को बगीचे से अर्कादी इवानोविच की आवाज़ सुनाई दी—

"एडमिरल साहब, कब उठेंगे आप?"

"उठ रहा हूं!" निकीता ने ऊंची आवाज़ में जवाब दिया, मगर फिर भी बिस्तर में कुछ क्षण और लेटा रहा। यह तो बहुत ही कमाल की चीज़ थी कि आंख खुलते ही ओरिओल पक्षी की मधुर आवाज सुनाई दी और खिड़की से बाहर भीगी हुई वनस्पति नज़र आई।

आज ११ मई थी, निकीता का जन्मदिन था। तालाब पर झण्डा लहराकर यह दिन मनाया जानेवाला था। निकीता ने बड़े इत्मीनान से (वह नहीं चाहता था कि समय जल्दी से बीते) नीली पृष्ठभूमि पर फूलों के छापे वाली नई क़मीज़ और नई बिरजस पहनी। यह बिरजस इतनी

मजबूत थी कि वह वृक्ष की किसी भी शाख़ पर लटक सकता था और उसके फटने का कोई डर नहीं था। अपने से ख़ुद ही ख़ुश होते हुए उसने दांत साफ़ किये।

खाने के कमरे में बर्फ़ जैसे सफ़ेद मेज़पोश से ढकी हुई मेज़ पर लिली फूलों का एक बड़ा-सा गुच्छा रखा हुआ था। सारा कमरा उनकी ख़ुशबू से महका हुआ था। मां ने निकीता को अपने निकट खींच लिया और उसकी एडमिरल की उपाधि की ओर ध्यान न देते हुए देर तक उसका मुंह थपथपाती और चूमती रही मानो एक बरस बाद उससे मिल रही हो। निकीता के पिता ने अपनी दाढ़ी थपथपाई, आंखें फाड़-फाड़कर निकीता की ओर देखा और अपनी रिपोर्ट पेश की –

"महामहिम, मुझे आपसे यह निवेदन करने का सम्मान प्राप्त है कि जार्जियाई कैलेंडर की सूचना और दुनिया के खगोलशास्त्रियों द्वारा लगाये गये हिसाब के अनुसार आज आप दस वर्ष के हो गये हैं। इस अवसर पर मैं आपको बारह फलोंवाला एक क़लमतराश चाक़ू भेंट करता हूं जो नाविकों के कार्यों के लिए या खो देने के लिए भी बहुत उपयुक्त है।"

नाश्ता करने के बाद वे तालाब पर गये। वासीली निकीत्येविच ने बड़ी शान से गाल फुलाते हुए सीटी द्वारा नौसेना की एक धुन बजाई।

मां, वासीली निकीत्येविच को देखकर ख़ूब ज़ोर से हंसी। उसने अपने लहंगे के छोर ऊपर उठा लिये ताकि वे घास पर पड़ी ओस से गीले न हो जायें। इनके पीछे-पीछे आ रहे थे अर्कादी इवानोविच कंधे पर चप्पू और कांटा लगा बांस रखे हुए।

विराट और चक्करदार तालाब के किनारे पर स्नानगृह की बग़ल में झण्डा लहराने के लिए एक बांस गाड़ा गया था जिसके सिरे पर एक गोला लगा हुआ था। नाव किनारे के पास खड़ी थी, उसकी लाल और हरी धारियां पानी में प्रतिबिम्बित हो रही थीं। नाव की छाया में तालाब के जीव-जन्तु – जल-गुबरैले, कीड़े-मकोड़े और मेढक के बच्चे – तैरते फिर रहे थे। गद्दीदार पैरोंवाली मकड़ियां पानी की सतह पर भागी फिर रही थीं। विल्लो वृक्षों में अपने घोंसलों में बैठे हुए रूक पक्षी इन्हें ध्यान से देख रहे थे।

वासीली निकीत्येविच ने रस्सी के निचले सिरे के साथ एडमिरल का व्यक्तिगत झण्डा बांधा। यह झण्डा था हरे मैदान में पिछली टांगों पर खड़ा हुआ लाल मेढक। वासीली निकीत्येविच ने अपने गाल फुलाकर रस्सी को ऊपर की ओर खींचना शुरू किया। यह झण्डा भी ऊपर को चढ़ता गया और सिरे पर बंधे गोले के पास जाकर खुल गया। विल्लो वृक्षों पर बैठे हुए रूक पक्षी डरकर और शोर मचाते हुए उड़ गये।

निकीता ने नाव में जाकर पतवार सम्भाली। अर्कादी इवानोविच ने चप्पू हाथ में लिये। नाव गहरे पानी में बढ़ी, ज़रा डोली और फिर तट से दूर हटती हुई तालाब की शीशे जैसी निर्मल सतह पर तैरने लगी। तालाब की इस सतह पर विल्लो वृक्ष, उनकी हरी परछाइयां, पक्षी और बादल प्रतिबिम्बित हो रहे थे। नाव धरती और आकाश के बीच तैर रही थी। दंशों

का एक बादल-सा निकीता के सिर पर मंडराने लगा। वे जमघट-सा बनाकर नाव के पीछे-पीछे उड़ने लगे।

"ज़ोर से, पूरे ज़ोर से!" वासीली निकीत्येविच तट से चिल्लाये।

मां हाथ हिलाती हुई हंस रही थी। अर्कादी इवानोविच ने चप्पुओं पर झुकते हुए पूरा ज़ोर लगाना शुरू किया। अचानक छोटे-छोटे हरे सरकंडों के बीच से टाँय-टाँय करती हुई दो बत्तख़ें सामने आईं – कुछ कुछ तैरती और डर से कुछ कुछ उड़ती हुई।

"मेढकों के एडमिरल, ये बचकर न जाने पायें! हुर्रा!" वासीली निकीत्येविच चिल्लाये।

जेल्तूख़िन* नामक मैना

जेल्तूख़िन ओसारे और घर की दीवार के बीचवाले एक कोने में थोड़ी-सी घास पर बैठी थी। वह धड़कते दिल से क़रीब आते हुए निकीता की ओर देख रही थी।

जेल्तूख़िन का सिर उसकी पीठ पर टिका हुआ था। पीले सिरेवाली उसकी चोंच गलगंड से चिपकी हुई थी। उसके पंख इधर-उधर बिखरे हुए थे और पंजे पेट के साथ सटे हुए थे। निकीता जब उस पर झुका तो उसे डराने के लिए जेल्तूख़िन ने अपनी चोंच खोली। निकीता ने उसे अपने दोनों हाथों के बीच बन्दी बना लिया। यह मैना का बच्चा था, अभी तक भूरा-भूरा-सा। स्पष्टतः उसने घोंसले से बाहर उड़ने की कोशिश की थी मगर उसके अनसधे पंखों ने उसका साथ नहीं दिया था। वह ज़मीन पर गिर पड़ा था और कोने में ज़मीन के साथ लगे हुए कुकरौंधे के पत्तों के बीच जा बैठा था।

हताश नन्ही मैना का दिल ज़ोर से धड़क रहा था। वह सोच रही थी – "मैं आह भी नहीं भर पाऊंगी कि यह मुझे हड़प जायेगा।" वह ख़ुद भी कीड़ों-मकोड़ों, मक्खियों और तितली के लार्वों को हड़पना ख़ूब जानती थी।

लड़के ने उसे अपने मुंह के पास किया। जेल्तूख़िन की आंखों के सामने अंधेरा छा गया, पंखों के नीचे उसका दिल ज़ोर से धक-धक करने लगा। मगर निकीता ने तो केवल फूंक मार कर उसका सिर सहलाया और घर ले गया। नन्ही मैना ने सोचा कि इस समय इसे भूख नहीं है और यह मुझे बाद को खायेगा।

अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना ने जब इस नन्ही मैना को देखा तो निकीता की तरह उसे अपने हाथ में लेकर फूंक से उसका सिर सहलाया।

"बेचारी, बहुत ही छोटी-सी है," मां ने कहा। "कैसी पीली चोंच है इस जेल्तूख़िन की!"

मां-बेटे ने नन्ही-सी मैना को बगीचे में खुलनेवाली उस खिड़की के दासे पर बिठा दिया जिसके आगे मलमल की जाली लगी हुई थी। खिड़की के अन्दर वाली ओर भी आधी ऊंचाई

* रूसी धातु 'जोल्ती' से, जिसका अर्थ 'पीला' होता है, जेल्तूख़िन शब्द बना है। – अनु०

तक मलमल से ढकी थी। जेल्तूख़िन फ़ौरन कोने में जा दुबकी। इस तरह उसने यह जाहिर किया कि वह आसानी से अपनी जान गंवाने को तैयार नहीं है।

बाहर सफ़ेद मलमल से परे पत्ते सरसरा रहे थे, झाड़ियों में चोर, बदमाश और घृणित गौरैयां आपस में लड़ रही थीं। दूसरी ओर से, मलमल के पीछे से ही निकीता नन्ही मैना को देख रहा था। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी थीं, हिलडुल रही थीं, अनबूझ और आकर्षक थीं। "मैं मारी गई, मैं मारी गई," जेल्तूख़िन सोच रही थी।

शाम होने तक निकीता ने उसे नहीं खाया। उसने तो बस मलमल के ऊपर से मक्खियां और कीड़े गिरा दिये। "खिला-पिलाकर मोटा कर रहा है," जेल्तूख़िन ने सोचा और अपने सामने सांप की तरह बल खाते नेत्रहीन लाल कीड़े को तिरछी नजर से देखा। "मैं इसे नहीं खाने की! यह असली कीड़ा नहीं है, कोई धोखा, कोई फ़रेब है।"

सूरज वृक्षों के पीछे डूब गया। जेल्तूख़िन की आंखों में धुंधला-धुंधला, ऊंघ लानेवाला अंधेरा घिर आया, मगर वह फिर भी दासे पर कसकर पंजे चिपकाये बैठी रही। कुछ देर बाद बिल्कुल अंधेरा हो गया। बगीचे में बैठे पक्षियों ने चुप्पी साध ली। सीलन और घास की प्यारी-प्यारी और नींद लानेवाली गंध फैली हुई थी। नन्ही मैना का सिर उसके पंखों के बीच अधिकाधिक नीचे होता जाता था। फिर उसने पंख फुलाकर अपनी सूरत भयानक बना ली ताकि अगर कोई उसपर झपटे तो आगा-पीछा सोचकर। तब उसने आगे और फिर पीछे की ओर झटके खाये और सो गई।

गौरैयों के शोर से जेल्तूख़िन की आंख खुली। वे लाइलैक वृक्ष पर लड़ रही थीं। धुंधले-धुंधले प्रकाश में ओस भीगे पत्ते नीचे को लटके हुए थे। दूरी पर बड़ी मीठी, ख़ुशीभरी आवाज में और चटख़ारा भरते हुए किसी मैना ने अपनी तान छेड़ दी।

"ओह, मेरा तो दम निकला जा रहा है, बड़ी भूख लगी है, मतली होती है," जेल्तूख़िन ने सोचा और उस कीड़े की ओर देखा जो खिड़की के दासे की दरार में आधा घुस चुका था। वह उस पर झपटी, दुम से पकड़कर उसने उसे बाहर खींच लिया और निगल गई। "कुछ बुरा नहीं, ख़ासा मजेदार कीड़ा है," उसने सोचा।

रोशनी में नीलिमा की झलक आ गई। पक्षी चहचहाने लगे। वृक्षों के पत्तों में से छनकर सूरज की चमकती हुई और प्यारी किरण जेल्तूख़िन को सहलाने लगी। "तो अभी मैं कुछ समय तक और जिन्दा रह सकती हूं," जेल्तूख़िन ने सोचा, इधर-उधर फुदकी, एक मक्खी को झपटा और निगल गई।

इसी समय पैरों की आहट सुनाई दी। निकीता खिड़की के क़रीब आया और उसने अपना बड़ा-सा हाथ मलमल की जाली के पार बढ़ाया। उसने मुट्ठी खोली और खिड़की के दासे पर मक्खियां और कीड़े-मकोड़े बिखरा दिये। जेल्तूख़िन डरकर कोने में दुबक गई, उसने अपने पंख फैलाये और हाथ की ओर देखा। मगर हाथ उसके सिर के ऊपर मंडराता रहा और फिर

मलमल के पीछे ग़ायब हो गया। जेल्तूख़िन को फिर से वे अजीब-अजीब, बरबस खींचती हुई सी और रंग-बिरंगी आंखें अपनी ओर देखती प्रतीत हुई।

निकीता के जाने के बाद जेल्तूख़िन ने अपने पंख संवारे और सोचने लगी – "बेशक वह मुझे खा सकता था, मगर उसने मुझे नहीं खाया। इसका मतलब यह है कि वह पक्षियों को नहीं खाता। तो अब डरने की कोई बात नहीं है।"

जेल्तूख़िन ने ख़ूब पेट भर कर खाया, अपने पंख संवारे, दासे पर इधर-उधर फुदकी और बाहर नज़र आनेवाली गौरैयों की ओर देखा। उसे एक बूढ़ा चिड़ा दिखाई दिया जिसके सिर के बाल ख़स्ता हालत में थे। जेल्तूख़िन उसे चिढ़ाने और अपना सिर आगे-पीछे करके सीटी बजाने लगी – "फ़ूऊट, चिल्लीक-चिल्लीक, फ़ूऊट।" चिड़ा ग़ुस्से से लाल-पीला हो उठा, उसने अपनी छाती फुलाई और चोंच खोले हुए जेल्तूख़िन पर झपटा। वह सीधा मलमल की जाली से जा टकराया। "मिल गया बच्चू को मज़ा!" जेल्तूख़िन ने सोचा और ख़ूब अकड़कर खिड़की के दासे पर इधर-उधर फुदकने लगी।

निकीता फिर से आया और उसने मलमल की जाली के पार अपना हाथ घुसेड़ा। मगर इस बार उसका हाथ ख़ाली था और वह उसे पक्षी के बहुत निकट ले गया। जेल्तूख़िन उछली और उसने अपनी पूरी ताक़त से निकीता की उंगली पर चोंच मारी, उछलकर पीछे को हटी और मोर्चे लेने के लिये तैयार हो गई। मगर निकीता ने तो मुंह खोला और ठठाकर हंस दिया – "हा-हा-हा।"

इस तरह दिन गुज़र गया। डरने की कोई बात नहीं थी, ख़ुराक बढ़िया थी, हां, कुछ ऊब ज़रूर महसूस हो रही थी। जेल्तूख़िन ने बड़ी मुश्किल से दिन ढलने का इन्तज़ार किया और उस रात ख़ूब मज़े से सोई।

अगले दिन नाश्ता करने के बाद वह मलमल की जाली के पीछे से निकल भागने की सोचने लगी। उसने खिड़की के दासे का पूरा चक्कर लगाया, मगर उसे कहीं भी कोई सेंध नज़र न आई। वह उछलकर रक़ाबी पर जा बैठी और पानी पीने लगी। उसने पानी से अपनी चोंच भर ली, अपने सिर को पीछे की ओर किया और पानी को निगला। एक छोटी-सी गोली उसके गले से नीचे लुढ़क गई।

दिन बहुत लम्बा था। निकीता कीड़े लाया और कलहंस के पंख से उसने दासे को साफ़ किया। इसके बाद गंजी चांदवाला चिड़ा किसी कौवे से भिड़ गया। कौवे ने ऐसा कसकर वार किया कि चिड़ा एक पत्थर की भांति पत्तों के बीच से नीचे गिरा और बिखरे-बिखराये बालों से उसने ऊपर को देखा।

न जाने क्यों, मगर एक मैंगपाई तो खिड़की के बिल्कुल क़रीब आ गया, चहका, इधर-उधर फुदका और उसने पूंछ ऊपर-नीचे हिलाई। उसकी सारी हरकतें बड़ी बेतुकी-सी ही थीं।

एक पपीहा देर तक गाता रहा, बहुत मधुर स्वरों में, सूरज की प्यारी-प्यारी धूप और
 तिपतिया घास के बारे में। पपीहे का यह गीत सुनकर जेल्तूख़िन बहुत उदास हो गई, उसके

गले में घरघराहट-सी हुई। वह भी गाना चाहती थी, मगर गाती तो कहां, खिड़की में, जाली के पीछे...

नन्ही मैना ने फिर से दासे का चक्कर लगाया। उसे एक बहुत ही ख़तरनाक जानवर नज़र आया। यह जानवर अपनी छोटी और गद्दीदार टांगों पर दबे पांव बढ़ा आ रहा था और उसका पेट फ़र्श को छू रहा था। उसका सिर गोल था, इक्की-दुक्की मूंछों के बाल तने हुए थे, आंखें हरी थीं और उसकी छोटी-छोटी पुतलियों में शैतान की झलक नज़र आ रही थी। जेल्तूख़िन जहां की तहां ही बैठ गई, टस से मस भी न हुई।

बिल्ले वासीली वासील्येविच ने धीरे से छलांग लगाई और खिड़की के दासे के सिरे पर अपने पंजे जमा दिये। उसने मलमल की जाली में से जेल्तूख़िन को घूरा और अपना मुंह खोला... हे भगवान! उसके मुंह में तो जेल्तूख़िन की चोंच से लम्बे-लम्बे दांत थे... बिल्ले ने पंजा मारकर जाली फाड़ डाली... जेल्तूख़िन का दिल बैठ गया, उसके पंख लटके-से गये... इसी समय, ऐन वक़्त पर निकीता यहां आ गया। उसने बिल्ले को गर्दन की ढीली-ढीली चमड़ी से पकड़कर दरवाज़े की ओर धकेल दिया। वासीली वासील्येविच ग़ुस्से से म्याऊं-म्याऊं करता और दुम झुकाये हुए बाहर भाग गया।

"निकीता से ताक़तवर और कोई जानवर नहीं है," इस घटना के बाद नन्ही मैना ने सोचा। इसीलिये जब निकीता फिर अन्दर आया तो उसने उसे अपना सिर थपथपाने दिया, यद्यपि वह डर के मारे अपनी पूंछ पर ही बैठ गई थी।

इस तरह यह दिन भी गुज़र गया। अगली सुबह को नन्ही मैना बहुत ख़ुश थी। उसने इधर-उधर घूम-घाम कर अपने इर्दगिर्द की जगह का निरीक्षण किया। पिछले दिन बिल्ले ने जाली में जो सूराख़ कर दिया था, उस पर फ़ौरन उसकी नज़र पड़ी। जेल्तूख़िन ने सूराख़ में से सिर बाहर निकाला, इधर-उधर देखा, बाहर निकली, हल्की-हल्की हवा की धारा में कूदी और ज़ोर-ज़ोर से अपने पंख फड़फड़ाती हुई फ़र्श से ज़रा ऊपर उड़ने लगी।

दरवाज़े के पास पहुंचकर वह उड़ती हुई दूसरे कमरे में जा पहुंची। वहां उसने एक गोल मेज़ के गिर्द चार लोगों को बैठे देखा। वे नाश्ता कर रहे थे, ख़ुराक के बड़े-बड़े टुकड़े अपने मुंह में डालते जा रहे थे। चारों व्यक्ति नन्ही मैना की ओर मुड़े और उसे निश्चल देखने लगे। जेल्तूख़िन समझ गई कि उसे अपनी उड़ान जारी न रखकर फ़ौरन मुड़ना चाहिये। मगर उड़ते हुए वह यह कठिन काम न कर सकी, एक पंख पर गिरी, सीधी हुई और मुरब्बे के छोटे-से मर्तबान और शकरदानी के बीच बैठ गई। तभी उसे निकीता अपने सामने बैठा दिखाई दिया। जेल्तूख़िन ने न कुछ सोचा, न विचारा, फुदककर मुरब्बे के मर्तबान और फिर निकीता के कंधे पर जा बैठी। उसके रोयें तन गये और आंखों पर सफ़ेद झिल्ली छा गई।

वह कुछ देर तक निकीता के कंधे पर बैठी रही, फिर उसने छत के क़रीब उड़ान भरी, एक मक्खी पकड़ी और कोने में रखे गमले पर जा बैठी और फिर फ़ानूस के गिर्द चक्कर लगाया।

उसे भूख महसूस होने लगी और वह उड़कर अपनी खिड़की में वापिस चली गई जहां उसके लिये और कीड़े तैयार थे।

शाम को निकीता लकड़ी का बना हुआ छोटा-सा घर ले आया। उसमें ओसारा भी था, दरवाज़ा भी और दो खिड़कियां भी। यह घर उसने दासे पर रख दिया। जेल्तूखिन को यह घर पसन्द आया – उसके अन्दर अन्धेरा था। वह फुदककर भीतर चली गई, उसने कई बार चक्कर लगाये और फिर सो गई।

इसी रात, बिल्ले वासीली वासील्येविच को जुर्म करने की कोशिश की सज़ा दी गई। उसे एक स्टोर में बन्द कर दिया गया। वहां वह रात भर गला फाड़ फाड़कर म्याऊं-म्याऊं करता रहा और उसका तो चूहे तक पकड़ने को मन नहीं हुआ। वह दरवाज़े के पास बैठकर ऐसे दर्द भरे अन्दाज़ में म्याऊं-म्याऊं करता रहा कि ख़ुद उसे भी परेशानी महसूस होने लगी।

इस तरह अब घर में साही और बिल्ले के अलावा एक और जानवर हो गया – जेल्तूखिन। बड़ी ही स्वच्छन्द, समझदार और सूझ-बूझ रखनेवाली थी यह मैना। उसे कान रस था, लोग जब मेज़ पर बैठते तो बड़े ध्यान से उनकी बातें सुनती, अपने सिर को एक ओर को झुकाती, मानो गाते हुए कहती – "साशा!" और सिर झुकाती। अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना यही मानती थी कि वह उसका अभिवादन करती है। वह जब जेल्तूखिन को देखती तो हमेशा कहती – "नमस्ते, नमस्ते, नन्ही भूरी मैना, उत्साह से उमड़ती और ज़िन्दादिल!" जेल्तूखिन फ़ौरन फुदककर उसके फ़ाक के छोर पर जा बैठती और इस सवारी का ख़ूब मज़ा लेती।

पतझड़ के शुरू होने के पहले मैना यहीं रही, बड़ी हो गई और उसके चमकते हुए बड़े बड़े काले पंख निकल आये। उसने बढ़िया रूसी बोलनी सीख ली। वह दिन भर बगीचे में रहती और झुटपुटा होते ही दासे पर रखे हुए अपने लकड़ी के छोटे-से घर में लौट आती।

अगस्त में जंगली मैनाओं का एक झुण्ड उसे बहकाकर अपने साथ ले उड़ा। उन्होंने उसे ढंग से उड़ना सिखाया और जब बगीचे में पत्ते झड़ने लगे तो एक सुबह को वह मौसमी पक्षियों के साथ सागर-पार अफ़्रीका की ओर उड़ गई।

क्लोपिक

खेतों में वसन्त के दिनों का काम ख़त्म हो चुका था। बगीचे में खोदाई-सिंचाई हो चुकी थी और अब सेंट पीटर के दिन तक अर्थात् चरागाह में घास की कटाई शुरू होने तक करने-धरने को कुछ नहीं था। जोताई के घोड़ों को झुंड के साथ तालाब के परे चरागाहों में भेज दिया गया था जहां हरी-हरी रसीली घास थी। सुबह को यहां खेतों के ऊपर नीली-नीली धुंध छाई रहती और एक-दूसरे से अलग-थलग खड़े चिनार के विराट काले-काले वृक्ष अपारदर्शी हवा में से नमूदार हुए और पृथ्वी के ऊपर लटके से लगते।

मीश्का कोर्याशोनोक घोड़ों की देखभाल करने के लिये पशुओं के झुण्ड के साथ रहता। वह अपने घोड़े पर ऊंचा कज़्ज़ाकी ज़ीन कसे रहता, उसके नंगे पैर रक़ाबों में होते, वह पीछे की ओर अपने को झटका देता और उसकी कुहनियां हिलती-डुलती रहतीं।

मीश्का हरेभरे चरागाह में किसी नौउम्र घोड़ी के पीछे, जो झुण्ड से अलग हो गई थी, सरपट घोड़ा दौड़ाता और पिस्तौल की तरह आवाज़ पैदा करता हुआ अपना कोड़ा सटकारता और उसे पुकारता। कभी वह बिना ज़ीनवाले घोड़े की पीठ से नीचे उतरता। घोड़ा लगाम की कड़ी को इधर-उधर हिलाता-डुलाता हुआ फ़ौरन घास चरने लगता। मीश्का कभी तो खड्ड के किनारेवाले टीले पर जा बैठता और सोटियों को काटता रहता या फिर पतलून ऊपर चढ़ाकर तालाब में घुस जाता और गर्म पानी में से सरकंडों के कन्द और जड़ें खींचकर निकालता रहता। जड़ें सांप की तरह लम्बी और काली होतीं। कन्द खट्टे-खट्टे और भुरभुरे होते, मगर जड़ें आटेवाली और मीठी होतीं, यद्यपि इन्हें अधिक मात्रा में खा लेने से पेट में सख़्त दर्द होने लगता।

निकीता दिन भर तालाब के निकट मीश्का के साथ ही रहता और घुड़सवारी करना सीखता।

ज़ीन पर सवार हो जाना तो कुछ मुश्किल काम नहीं था। खिचड़ी बालों वाला बूढ़ा भूरा घोड़ा बिल्कुल शान्त खड़ा रहता। केवल कभी-कभी ही वह गोमक्षिकाओं को दूर भगाने के लिये अपनी पिछली टांग पेट पर मारता। मगर निकीता जब उस पर सवार हो जाता, लगाम सम्भाल लेता और उसे दुलकी चाल से चला देता, तो कभी एक ओर को गिरने लगता और कभी दूसरी ओर को। कोई तीसेक क़दम चलने के बाद भूरा घोड़ा जब अचानक रुक जाता और सिर झुकाकर घास चरने लगता, तो निकीता पूरे ज़ोर से काठी का उभरा हुआ सिरा पकड़ लेता और कभी-कभी तो घोड़े की गर्दन पर से फिसलता हुआ उसके पैरों के पास नीचे जा गिरता। बूढ़ा घोड़ा ऐसा होने पर भी बिल्कुल शान्त रहता।

मीश्का ने कहा –

"डरने की कोई बात नहीं है। गिरने से चोट नहीं लगती। सिर्फ़ अपनी गर्दन को सम्भाले रहा करो और भगवान के लिये कभी भूलकर भी हाथों के बल गिरने की कोशिश मत किया करो। बस, गुड़ी-मुड़ी हो जाया करो, फिरकी की तरह। मैं तुम्हें बताता हूं कि काठी या लगाम के बिना कैसे यह काम किया जाये। बस, कूदकर सवार हो गये और यह जा और वह जा।"

मीश्का तीन वर्षीया घोड़ियों के एक झुण्ड की ओर भागा। इन पर कभी किसी ने सवारी नहीं की थी। उसने अपना हाथ बढ़ाकर उन्हें बुलाना शुरू किया –

"रोटी, रोटी, रोटी..."

पतली-पतली टांगोंवाली, बिगड़ी हुई तारिका नाम की भूरी-चितकबरी घोड़ी मीश्का की ओर आई। वह कनौतियां बदल रही थी और उसके मख़मली होंठ रोटी की तलाश में थे। मीश्का उसकी गर्दन खुजलाने लगा। तारिका ने अपना तना हुआ गर्वीला सिर झुकाया। मीश्का

का गर्दन सहलाना उसे बहुत भला लग रहा था। मीश्का को ख़ुश करने के लिये वह भी उसके कंधे को दांतों से छूने लगी।

मीश्का ने उसे थपथपाया और उसकी साटिन जैसी मुलायम पीठ पर हाथ फेरा। तारिका चौंककर पीछे को हटी। मीश्का ने उसे अयाल से पकड़ा और उछलकर उसकी पीठ पर सवार हो गया। आश्चर्यचकित और आग-बबूला होती हुई तारिका एक ओर को उछली, उसने अपना सिर झटका, चौपैरी छलांग लगाई, वह पिछली टांगों पर बैठी, खड़ी हुई और फिर सरपट दौड़ती हुई पशुओं के झुण्ड के पास से गुज़री।

मीश्का गोंद की तरह चिपककर उसकी पीठ पर बैठा रहा। सरपट भागती हुई तारिका अचानक रुकी और उसने दुलत्ती चलाई। मीश्का गेंद की तरह लुढ़कता-पुढ़कता घास में जा गिरा। निकीता के पास लौटता हुआ वह लंगड़ा रहा था और अपने गाल से ख़ून पोंछ रहा था जहां खरोंच आ गई थी।

"कम्बख़्त ने मुझे सीधे झाड़ियों के बीच ही जा फेंका," मीश्का ने कहा। "मगर तुम से यह काम नहीं हो सकेगा, तुम बहुत मोटे हो।"

"मुझे अपनी गर्दन तोड़ लेना मंज़ूर है, मगर मैं मीश्का से बेहतर घुड़सवारी करना सीखकर रहूंगा," निकीता सोच रहा था।

दोपहर का खाना खाते हुए निकीता ने मां से तारिका की चर्चा की। वह तो बेहद परेशान हो उठी।

"सुनो," मां ने कहा, "मैं तुम से मिन्नत करके कहती हूं कि तुम बिना सधे हुए घोड़ों के तो पास भी नहीं फटकना।" इतना कहकर मां ने अनुरोधभरी दृष्टि से वासीली निकीत्येविच की ओर देखा। "वास्या, आप कम से कम मेरी बात का अनुमोदन तो करें... वरना होगा यही कि यह हज़रत अपने हाथ-पैर तोड़ लेगा..."

"बहुत ख़ूब," वासीली निकीत्येविच ने उत्तर दिया, "इसे घुड़सवारी की मनाही कर दो, पैदल चलने से भी रोक दो – इसमें भी नाक टूटने का ख़तरा रहता है, – इसे मर्तबान में डालो, इर्द-गिर्द रूई लपेटो और किसी अजायबघर में भेज दो..."

"मुझे आप से ऐसी ही उम्मीद थी," मां ने कहा। "मैं जानती हूं कि इस गर्मी में मुझे बिल्कुल चैन नहीं मिलेगा..."

"साशा, तुम्हें यह न भूलना चाहिये कि लड़का दस साल का हो गया है।"

"तो क्या हुआ..."

"मुझे माफ़ करना, पर मैं हरगिज़ यह नहीं चाहता कि यह कोई जनखा या काठ का उल्लू बनकर रह जाये।"

"सही बात है, मगर इसका यह मतलब नहीं है कि फ़ौरन ही उसे क्लोपिक भेंट कर दिया जाये।"

"पहली बात तो यह है कि कोई दूध पीता बच्चा भी उसपर सवारी कर सकता है।"

"उसकी नालबन्दी हो चुकी है।"

"मैंने उसके नाल उतार देने का हुक्म दिया है।"

"ओह, अगर यह बात है तो जो मन माने, वही कीजिये। जंगली घोड़ों पर चढ़िये और अपने सिर फोड़िये।" मां की आंखें डबडबा आईं। वह झटपट खाने की मेज़ से उठी और सोने के कमरे में चली गई।

वासीली निकीत्येविच ने जल्दी से अपनी दाढ़ी को थपथपाकर दो हिस्सों में बांटा, नेप्किन को नीचे फेंका और मां के पीछे-पीछे सोने के कमरे में चले गये। अर्कादी इवानोविच अभी तक ऐसे बैठे रहे थे मानो इस बातचीत से उनका कोई सरोकार ही न हो। अब उन्होंने निकीता की ओर देखा, अपनी ऐनक ठीक की और फुसफुसाते हुए कहा –

"हां दोस्त, तुम्हारा मामला कुछ गड़बड़ा ही है।"

"अर्कादी इवानोविच, मां से कहिये कि मैं नहीं गिरूंगा... क़सम खाता हूं कि मैं..."

"सहनशीलता, स्थिरता और चरित्र की दृढ़ता," इतना कहकर उन्होंने बड़ी फुर्ती से उस मक्खी को पकड़ लिया जो लगातार उनकी नाक पर बैठने की कोशिश कर रही थी, "यही तीन गुण बढ़िया घुड़सवार बनने के लिये भी बहुत ज़रूरी हैं..."

इसी बीच सोने के कमरे में बहुत ज़ोरदार बातचीत हो रही थी। पिता कह रहे थे – "इस उम्र में लड़के आज़ाद होते हैं..."

"कहां, कहां वे आज़ाद होते हैं?" मां ने हताश होते हुए पूछा। "अमरीका में..." "यह झूठ है..." "मैं तुम से कह जो रहा हूं कि अमरीका में दस साल के लड़के उसी तरह आज़ाद होते हैं जैसे मिसाल के तौर पर मैं..." "हे भगवान, मगर हम तो अमरीका में नहीं हैं..." मां ने कहा।

पूरे एक हफ़्ते तक लड़कों की आज़ादी के बारे में बातचीत जारी रही। मां ने हथियार फेंक दिये थे और अब ऐसे उदासी से निकीता की ओर देखती थी मानो उसका हाथ-पैर तोड़ लेना तो लाज़िमी बात हो। उसे आशा थी तो केवल इतनी कि उसका सिर सलामत रहेगा।

इसी हफ़्ते में निकीता तालाब के पास बहुत यत्न से घुड़सवारी सीखता रहा। मीश्का उसकी हिम्मत बढ़ाता और उसे दिलेरी का एक करतब सिखाता रहा। उसने निकीता को बालकों के उस खेल की तरह जिसमें बालक पीठ पर से कूदते हैं, पीछे की ओर से भागते हुए घोड़े पर छलांग मारकर चढ़ना सिखाया।

"वह चौपैरी छलांग लगाकर तुम्हें नीचे नहीं गिरा पायेगा। वह जब तक चौपैरी छलांग लगायेगा, तुम उसकी गर्दन पर डटे होगे।"

आख़िर छज्जे में नाश्ता करने के बाद जहां रस्सी के सहारे ऊपर को चढ़ी हुई क्रेस बेलें मेज़पोश, तश्तरियों और चेहरों पर अपनी परछाइयां डाल रही थीं, मां ने निकीता को अपने पास बुलाया, उसे अपने सामने खड़ा किया और उदास आवाज़ में कहा –

"देखो न, तुम दस वर्ष के हो गये हो। अब तुम्हें आज़ाद होना चाहिये। तुम्हारी उम्र

में और लड़के पूरी तरह, पूरी तरह..." मां की आवाज़ कांप गई और उसने माथे पर बल डालकर पिता की ओर देखा – "मतलब यह कि तुम्हारे पिता सही कहते हैं, तुम अब बच्चे नहीं रहे।" वासीली निकीत्येविच ने आंखें झुका लीं और मेज़ के सिरे पर उंगलियों से ताल देने लगे। "कल हम चेम्बुलातोवा से मिलने जा रहे हैं। तुम अगर चाहो, तो क्लोपिक पर सवार होकर चल सकते हो... मैं तुमसे सिर्फ़ यह प्रार्थना करती हूं, यह अनुरोध करती हूं..."

"मां, मैं तुम से क़सम खाकर कहता हूं, क़सम खाकर, कि मैं बिल्कुल सही-सलामत रहूंगा।" इतना कहकर निकीता ने मां की आंखें, गाल, ठुड्डी और बेरियों की गंधवाले हाथ चूमे।

अगले दिन दोपहर का खाना जल्दी से ख़त्म करने के बाद वासीली निकीत्येविच ने निकीता से कहा कि वह अपनी काठी ले आये। यह सांभर की खाल की बनी हुई वही काठी थी जो क्रिसमस के अवसर पर उसे भेंट की गई थी। घास को लांघकर अस्तबल की ओर जाते हुए उन्होंने कहा –

"तुम्हें अवश्य ही घोड़े को साफ़ करना, उसपर काठी डालना और सवारी के बाद उसे सहलाना आना चाहिये... घोड़े के रोयों को अवश्य अच्छी तरह रगड़ना चाहिये, उसे साफ़-सुथरा होना चाहिये। अगर ऐसा है, तो तुम अच्छे घुड़सवार हो।"

बग्घीख़ाने के फाटक पूरी तरह खुले हुए थे और वहां तीन घोड़ों को बग्घी में जोता जा रहा था। कोचवान सेर्गेई इवानोविच बिना आस्तीनों की जाकेट और लाल क़मीज़ पहने था, मगर उसके सिर पर टोपी साधारण थी। उसने, पंखोंवाला टोप तभी पहना जब वह सीट पर चढ़ने को तैयार हो गया। वह पट्टे को ठीक-ठाक करता हुआ अर्त्योम को कोस रहा था जो उसकी सहायता कर रहा था –

"अरे बुद्धू, घोड़े की छाती के नीचे पट्टा क्यों डाल रहा है! यह बग्घी का साज़ है। गले के पट्टे को नहीं छेड़ो। तुम तो टोकरी में बिल्ली को भी नहीं जोत सकते।"

"मेरे पास तो कभी घोड़ा नहीं था।"

"तुम से कभी कोई लड़की शादी नहीं करेगी – तुम बुद्धू जो हो। नई लगामें मुझे दो।"

बग्घी की जोत का मुख्य घोड़ा था लार्ड बायरन। वह अब जोता जा चुका था और चौपट खुले दरवाज़ों के सामने खड़ा अपनी लगाम का दहाना चबा रहा था, लकड़ी के फ़र्श पर पांव पटक रहा था और प्यार से सेर्गेई इवानोविच के कंधे को, जो आंखों के पट्टे के नीचे से घोड़े की ज़ुल्फ़ को ठीक कर रहा था, दांतों के बीच दबा रहा था। बग्घीख़ाने में चमड़े, घोड़े के स्वस्थ पसीने और कबूतरों की गंध बसी हुई थी। जब घोड़े जोते जा चुके तो होंठों पर हल्की-सी मुस्कान लाते हुए सेर्गेई इवानोविच ने निकीता से कहा –

"ज़ीन ख़ुद ही डालना चाहते हैं?"

क्लोपिक को अस्तबल से लाया गया। निकीता ने धड़कते हुए दिल से उसकी ओर देखा।

क्लोपिक कत्थई रंग का घोड़ा था, ख़ूब बढ़िया ढंग से साफ़ किया हुआ, नाटा और मज़बूत। उसके टखने सफ़ेद थे, उसकी पूंछ और अयाल के बाल घने और काले थे। उसके

माथे पर एक बड़ी-सी ज़ुल्फ़ खेल रही थी और वह बालों के नीचे से ख़ुशी से इधर-उधर देखता हुआ अपना सिर झटक रहा था। उसकी पीठ पर लम्बी-सी काली धारी थी।

"बहुत बढ़िया घोड़ा है," पानी से भरी हुई बालटी घोड़े के सामने रखते हुए सेर्गेई इवानोविच ने कहा। क्लोपिक ने पानी पिया और फिर अपना सिर ऊपर किया। उसके भूरे होंठों से पानी की बूंदें नीचे गिर रही थीं।

निकीता ने घोड़े की लगाम हाथ में ली और जैसे कि उसे सिखाया गया था, एक ओर से मुंह में दहाना डाला और गले के पट्टे को बकसुए में फंसाया। क्लोपिक ने लोहे का टुकड़ा दांतों के बीच ले लिया। निकीता ने काठी के नीचेवाला कम्बल ठीक तरह से जमाया, उसके ऊपर सलेटी कपड़ा बिछाया जिसके सिरे पर निकीता के नाम के प्रारम्भिक अक्षर लिखे हुए थे और इसके ऊपर काठी रखकर पेट के नीचे से उसका पट्टा कसने लगा। यह काम उसके लिए टेढ़ी खीर सिद्ध हुआ।

"उसने अपना पेट फुला लिया है," सेर्गेई इवानोविच ने कहा। "बहुत चालाक है यह जानवर, ख़ूब पेट फुला रहा है।" इतना कहकर उसने क्लोपिक के पेट पर चपत जमाई। घोड़े ने अपने मुंह से हवा निकाल दी और निकीता ने पट्टा कस दिया।

वासीली निकीत्येविच आये और निकीता को हिदायतें देने लगे –

"लगाम बायें हाथ में पकड़ कर बायें कंधे की ओर से घोड़े की तरफ़ बढ़ो। सवार हो जाओ। उसे एड़ लगाओ। रकाबों में अपने पैरों को नहीं झुलाओ, पंजे आगे की ओर नहीं झुकाओ।"

निकीता सवार हुआ, कांपती हुई टांग से उसने दायीं रकाब खोजी, घोड़े को एड़ लगाई और क्लोपिक दुलकी चाल से अस्तबल की ओर भाग चला। वासीली निकीत्येविच चिल्लाये –

"रोको! रोको इसे! अरे बुद्धू, दायीं लगाम खींचो!"

क्लोपिक अस्तबल की छाया में पहुंचकर रुक गया। निकीता का शर्म से मुंह लाल हो गया। वह नीचे उतरा, घोड़े की लगाम पकड़ कर उसे बाहर ले चला और फुसफुसाकर इस धूर्त घोड़े से कहता रहा –

"तुम गधे हो, एकदम गधे हो, निरे उल्लू हो!.."

क्लोपिक ख़ुशी से अपनी ज़ुल्फ़ झटक रहा था। सेर्गेई इवानोविच इनके पास आया और बोला –

"आप सवार हो जाइये। मैं इसे बाहर ले जाता हूं। बहुत चालाक है यह घोड़ा। काम से जी चुराता है, छाया में खड़े रहना चाहता है।"

आख़िर क्लोपिक वश में आ गया और निकीता उसे सरपट दौड़ाता हुआ पशुओं के बाड़े से आगे निकल गया।

सेर्गेई इवानोविच ने अपना पंखोंवाला टोप और दस्ताने पहने जिन पर सूखा आटा लगाया गया था, सीट पर बैठा और कड़ाई से चिल्लाया –

"छोड़ दो लगाम!"

अर्त्योम, जो लार्ड बायरन की लगाम थामे था, उछल कर एक ओर को हो गया और बग्घी तख़्तों पर खड़खड़ाती हुई तेज़ी से बाहर निकल गई। उसके पहियों के तांबे के तार और पालिश लौ देने लगी, तीनों घोड़ों के सुमों के नीचे से ताजा मिट्टी उड़ रही थी और घंटियां टनटना रही थीं। बग्घी ने अहाते में अर्ध चक्र लगाया और घर के सामने जाकर खड़ी हो गई।

अलेक्सान्द्रा लेग्रोन्त्येव्ना सफ़ेद फ़ाक पहने हुए ओसारे से बाहर आई और उसने सफ़ेद छतरी खोली। उसने घबराहट से निकीता की ओर देखा जो दूरी पर घोड़े को कुदाता जा रहा था। पिता ने निकीता की मां को बग्घी में बिठाया और फिर ख़ुद सवार हुए।

"बढ़ाओ गाड़ी!"

सेर्गेई इवानोविच ने रासें ऊपर को उठाईं। शानदार मुश्की घोड़ों ने कसे हुए बन्दों पर ज़ोर मारा और बग्घी को आसानी से खींच ले चले। पुल पर उनके सुम बज उठे और वे सरपट दौड़ने लगे, बहुत तेज़ी से और गर्दन अकड़ाये हुए। लार्ड बायरन को तो यह काम मज़ाक़ सा प्रतीत हो रहा था और उसने अपनी कनौतियां तान लीं। मां लगातार निकीता की ओर देख रही थी। निकीता ने घोड़े की रासें ढीली छोड़ दी थीं, वह घोड़े की गर्दन पर झुक गया था और उसे तावड़तोड़ दौड़ाता हुआ बग्घी के बराबर होने की कोशिश कर रहा था।

निकीता क्लोपिक को अंधाधुंध दौड़ाता हुआ बग्घी के पास से निकल जाना चाहता था। मगर क्लोपिक के दिमाग़ में दूसरी ही बात थी। वह इसे बेकार समझता था। जब वह बग्घी के बराबर पहुंचा तो सड़क पर हो गया और बग्घी के पहियों के पीछे-पीछे धूल के बादल में दुलकी चाल से दौड़ने लगा। किसी तरह भी उसे रोकना या सड़क से हटाना मुमकिन नहीं था: वह इसे बेतुकी बात मानता था। अगर घुड़सवारी करनी ही है, तो सड़क पर की जाये और इस सिलसिले में सभी तरह की बहस बेमानी है।

मां ने मुड़कर देखा। निकीता धचके खा रहा था। वह होंठ भींचे था और टकटकी बांध कर घोड़े के कानों के बीच से देख रहा था। धूल से उसकी तबीयत परेशान हुई जा रही थी और दुलकी से उसका मेदा गड़बड़ हो रहा था।

"बग्घी में आना चाहते हो?"

निकीता ने दृढ़ता से सिर हिला दिया। पिता ने मुस्कराते हुए सेर्गेई इवानोविच से कहा –

"इन्हें पूरी रफ़्तार से जाने दो।"

बायरन ने कनौतियां बदलीं, उसकी मजबूत लौह टांगें मशीन की तरह काम करने लगीं और बग़लवाले दोनों घोड़े घास की पट्टी पर हवा से बातें करने लगे। क्लोपिक भी दुलकी छोड़ सरपट दौड़ने लगा मगर बग्घी दूर होती गई। वह भी भड़क उठा और अपनी पूरी ताक़त से, बहुत ज़ोर लगाता हुआ सरपट उड़ चला।

घोड़े की दुलकी से निकीता को जो उबकाई-सी आ रही थी, वह दूर हो गई। वह अब काठी पर इत्मीनान से और जम कर बैठा था। हवा उसके कानों में सीटियां बजा रही थी।



सड़क की बग़ल में हरेभरे खेत लहलहा रहे थे और रोशनी में दिखाई न देते हुए भरद्वाज पक्षियों की मीठी तानें गूंज रही थीं... फ़ेनीमोर कूपर की किताब जैसा ही प्यारा वातावरण था।

बग्घी के घोड़े धीरे-धीरे चलने लगे। निकीता बग्घी के बराबर पहुंच गया। उसने हांफते हुए ख़ुशी से अपने पिता की ओर देखा।

"मज़ा आया, निकीता?"

"बेहद... बहुत ग़ज़ब का घोड़ा है यह क्लोपिक..."

तालाब में स्नान

एक दिन बहुत सवेरे ही वासीली निकीत्येविच, अर्कादी इवानोविच और निकीता एक-दूसरे के आगे-पीछे घास में से गुज़रती हुई एक पगडंडी पर चले जा रहे थे। घास ओसकण के कारण नीलगूं लग रही थी। वे नहाने के लिये तालाब की ओर जा रहे थे।

बगीचे के घने झुरमुटों में सुबह की धुंध अभी तक छाई हुई थी। तितलियां शहद भरे पीले फूलों और वनपथ में लगे तिपतिया घास के सफ़ेद फूलों पर, जहां एक परेशान-सी मधुमक्खी भनभना रही थी, छोटे-छोटे पत्तों की भांति मंडरा रही थीं। झुरमुट में एक जंगली कबूतर गुटर-गूं, गुटर-गूं का राग अलाप रहा था। उदासी भरी और प्यारी आवाज़ में गुटर-गूं का गाना गाता हुआ वह अपनी छाती फुलाता। मानो कहता कि यह सिलसिला हमेशा इसी तरह चलता जायेगा, यह ख़त्म होगा और फिर नये सिरे से शुरू हो जायेगा।

वासीली निकीत्येविच ने लकड़ी का पुल पार किया जिसके लम्बे तख़्ते पानी पर छपछपा रहे थे। वे स्नानागार में गये जहां उन्होंने छाया में रखी हुई एक बेंच पर कपड़े उतारे, बालों से ढकी हुई अपनी गोरी छाती को थपथपाया, मुलायम बग़लों पर हाथ फेरा, आंखें सिकोड़कर चकाचौंध करते हुए पानी की ओर देखा और कहा—

"वाह, कमाल है!"

उनका संवलाया हुआ चेहरा और चमकती दाढ़ी उनके गोरे बदन पर पराये-से लग रहे थे। पिता के शरीर से तो विशेषतः स्वास्थ्य की प्यारी गंध आती थी। जब कोई मक्खी उनकी टांग या कंधे पर बैठती तो वे अपना फैला हुआ चौड़ा हाथ उसपर ज़ोर से मारते और उनकी त्वचा पर एक लाल धब्बा बाक़ी रह जाता। ज़रा देर सुस्ताने के बाद पिता ने नहाने का साबून हाथ में लिया, ख़ुशबूदार और बहुत ही हल्का जो पानी के ऊपर तैरता रहता है। फिर वे बहुत सावधानी से तालाब की फिसलनी और काईदार पैड़ियों से तालाब में उतरे। पानी उनकी छाती तक पहुंच रहा था। वे बहुत ज़ोर से सिर और दाढ़ी पर साबून मलते और मुंह से फू-फू करते हुए कहते जा रहे थे—

"वाह, वाह, बहुत ख़ूब!"

तालाब के ऊपर सूरज की नीली-सी रोशनी में छोटी-छोटी मक्खियों का झुण्ड मंडरा रहा था। एक ड्रैगनफ़्लाई इधर से गुज़री। उसने अपनी हरी-हरी और फूली-फूली आंखों से वासीली निकीत्येविच का फेन से ढका हुआ सिर देखा तो डरकर दूसरी ओर को भाग गई। इसी समय अर्कादी इवानोविच जल्दी-जल्दी और लजाते-शर्माते हुए अपने कपड़े उतार रहे थे। उन्होंने अपने कुछ कुछ टेढ़े-मेढ़े पैरों की लम्बी-लम्बी उंगलियां सिमटा लीं, स्नानागार का बाहरी दरवाज़ा खोलकर इस बात का यक़ीन करने के लिये बाहर झांका कि तालाब के किनारे से उनपर किसी की नज़र तो नहीं पड़ रही, फिर भारी-भरकम आवाज़ में कहा – "ओह, बहुत ख़ूब!" और पेट के बल पानी में कूद गये। छपाक की आवाज़ पैदा करता हुआ पानी सभी दिशाओं में उछला और रूक पक्षी डरकर विल्लो वृक्षों से उड़ गये। वे बड़े-बड़े और लम्बे-लम्बे हाथ मारते हुए तैरने लगे और लाल बालों से ढका हुआ उनका दुबला-पतला शरीर नीले पानी के नीचे बल खाने लगा।

तालाब के बीचोंबीच पहुंचकर अर्कादी इवानोविच कलाबाज़ियां खाने लगे। वे गोता लगाकर ग़ायब हो जाते और फिर पानी की सतह पर आते और जल-दैत्य की तरह – "गर्र गर्र-फर्र फर्र" करते।

निकीता राल लगी बेंच पर सिमटा-सिमटाया बैठा था और पिता के शरीर साफ़ कर लेने की प्रतीक्षा कर रहा था। वासीली निकीत्येविच ने तालाब की पैड़ियों पर साबून रखा, कानों में उंगलियां डालीं और तीन डुबकियां लगाईं। गीले बाल उनके सिर के साथ चिपक गये, उनकी दाढ़ी बकरा दाढ़ी की तरह लटक गई और कुल मिलाकर उनकी सूरत अजीब-सी हो गई। वास्तव में ऐसी सूरत हो जाने पर उन्हें "बेचारा वास्या" की संज्ञा दी जाती थी।

"आओ, अब तैरें," उन्होंने कहा। वे दरवाज़े से बाहर गये और ज़ोर की आवाज़ पैदा करते हुए पानी में कूद गये। साफ़ पानी में अपने हाथ-पैर धीरे-धीरे हिलाते हुए वे मेढक की तरह तैरने लगे।

निकीता सिर के बल पानी में कूदा और पिता के बराबर पहुंचकर उनके साथ-साथ तैरने लगा। उसे आशा थी कि पिता उसकी प्रशंसा करेंगे। इस गर्मी में निकीता ने चागरा नदी में नहानेवाले लड़कों के साथ जाकर अच्छी तरह तैरना सीख लिया था। वह पहलू और पीठ के बल तैर सकता था, पानी में खड़ा रह सकता था और कलाबाज़ियां लगा सकता था।

पिता ने फुसफुसाकर कहा –

"चलो, अर्कादी को ग़ोते दें।"

वे एक-दूसरे से अलग हो गये और दो दिशाओं से अर्कादी इवानोविच की ओर बढ़े। उनकी नज़र इतनी कमज़ोर थी कि वे बहुत पास की चीज़ भी नहीं देख पाते थे। निकीता और उसके पिता बड़े-बड़े हाथ मारते हुए अर्कादी के निकट पहुंचे और उनपर झपटे। अर्कादी इवानोविच बौखला उठे, इधर-उधर होने लगे, कमर तक पानी से बाहर आये और उन्होंने ग़ोता लगाया। निकीता और उसके पिता ने अर्कादी इवानोविच को पांव से पकड़ने की कोशिश

की, क्योंकि वे गुदगुदी से बहुत घबराते थे। मगर उन्हें आसानी से पकड़ पाना सम्भव नहीं था – वे उनकी पकड़ से निकल जाते थे। निकीता और वासीली निकीत्येविच जब स्नानागार में आये तो उन्होंने अर्कादी इवानोविच को अंडरवीयर और ऐनक पहने हुए बेंच पर बैठे पाया। उन्होंने ज़रा चिढ़ाते हुए, मगर हंसकर कहा –

"श्रीमान, आप लोग तैरना सीखें, तैरना सीखें।"

ये लोग जब तालाब से लौटते, तो अकसर अलेक्सान्द्रा लेग्रोन्त्येव्ना को सफ़ेद टोपी और फूला-फूला-सा चोग़ा पहने देखते। मां ने धूप के कारण आंखें सिकोड़ते और मुस्कराते हुए कहा –

"बगीचे में लाइम वृक्ष के नीचे नाश्ता लगा हुआ है। आप लोग जाकर नाश्ता शुरू करें, मेरा इन्तज़ार करने की ज़रूरत नहीं। पावरोटियां ठण्डी हो जायेंगी।"

बैरोमीटर की सूई

वासीली निकीत्येविच कई दिनों से बैरोमीटर को नाखूनों से टकटकाते और बुदबुदाते हुए भला-बुरा कहते। बैरोमीटर की सूई बताती – "ख़ुश्क, बहुत ख़ुश्क मौसम"। दो हफ़्ते से पानी की एक भी बूंद नहीं बरसी थी और फ़सल के पकने का वक़्त आ गया था। ज़मीन जहां-तहां फट गई थी, गर्मी से आकाश का रंग फीका पड़ गया था और दूर क्षितिज पर पशुओं के लौटने के समय उड़नेवाली धूल के समान काली-काली धुंध छाई हुई थी। चरागाह झुलस गये थे और वृक्षों के पत्ते मुरझा-कुम्हला गये थे। वासीली निकीत्येविच चाहे कितनी ही बार बैरोमीटर को टकटकाते, उसकी सूई यही ज़ाहिर करती – "ख़ुश्क, बहुत ख़ुश्क मौसम"।

परिवार के लोग जब खाने की मेज़ पर जमा हुए तो आज सदा की भांति हंसी-मज़ाक़ का रंग नहीं जमा। माता-पिता के चेहरों पर चिन्ता की छाप अंकित थी। अर्कादी इवानोविच भी गुमसुम थे। वे अपनी प्लेट को एकटक देखते हुए जब-तब ऐनक ठीक करते और इस तरह अपनी दबी-घुटी ठण्डी आह को छिपाने की कोशिश करते। उनकी इस परेशानी के अपने अलग ही कारण थे – स्कूली अध्यापिका वास्सा नीलोव्ना ने सोस्नोव्का आने का वादा किया था। मगर अब उसने लिखा था कि "मैं अपनी बीमार मां के पलंग से बंधी हुई हूं", और उसे पतझर से पहले समारा में अर्कादी इवानोविच से मिलने की आशा नहीं थी।

निकीता ने वास्सा नीलोव्ना की इस तरह से कल्पना की – सलेटी रंग का ब्लाउज़ पहने, जिसके साथ घड़ी की रेशमी डोरी लटक रही है, एक लम्बी और उदास औरत बैठी है। उसकी एक टांग ज़ंजीर के सहारे पलंग के पाये के साथ बंधी हुई है। इन तपते और उमस भरे दिनों में बिना काग़ज़ मढ़ी दीवार के पास लोहे के पलंग के निकट बैठी औरत की कल्पना बहुत उदासी भरी प्रतीत हुई।

दोपहर के खाने के समय वासीली निकीत्येविच ने प्लेट के सिरे पर ताल देते हुए कहा –

"अगर कल भी बरसात न हुई तो फ़सल बिल्कुल तबाह हो जायेगी।"

मां ने इतना सुनते ही फ़ौरन सिर झुका लिया। बड़ी खिड़की के ऊपरी भाग में दोहरे अर्ध गोलाकार शीशे, ये जो कभी साफ़ नहीं किये जाते थे, और जहां मकड़ियों के जाले थे, वहां किसी मक्खी के बहुत ज़ोर से भनभनाने की आवाज सुनाई दे रही थी। छज्जे में खुलनेवाले शीशे के दरवाज़े बन्द थे ताकि बगीचे की ओर से गर्मी न आये।

"क्या इस साल फिर अकाल पड़ेगा," मां ने कहा, "हे भगवान, यह तो बहुत भयानक बात होगी!"

"हां, मामला तो कुछ ऐसा ही है – हाथ पर हाथ धरकर बैठो और मुसीबत का इन्तज़ार करो।" पिता रेशमी पतलून की जेबों में हाथ डाले हुए खिड़की के पास गये और उन्होंने आकाश पर नज़र डालकर कहा – "एक और दिन ऐसी गर्मी पड़ी तो जाड़े में भुखमरी का मुंह देखना पड़ेगा, टाइफ़स बुखार फैलेगा, ढोर मरेंगे, बच्चे दम तोड़ेंगे... बड़ी ोतुकी बात है।"

उन्होंने चुपचाप खाना खाया। पिता जाकर लेट रहे। मां रसोईघर में चली गई लिनन की जांच करने। अर्कादी इवानोविच अपने बिगड़े हुए मूड को और भी अधिक ख़राब करने के लिये दहकती हुई स्तेपी में घूमने चले गये।

दोपहर को कमरों में मनहूस ख़ामोशी छा गई। इस सन्नाटे में मक्खियों की भनभनाहट के सिवा कुछ भी सुनाई नहीं देता था। हर चीज़ पर मानो धूल की तह चढ़ गई थी। निकीता की समझ में नहीं आ रहा था कि वह करे तो क्या! वह ओसारे में चला गया। धुंधली, मगर आंखों को बुरी तरह चकाचौंध करती सूरज की सफ़ेद रोशनी में नहाया हुआ अहाता एकदम सुनसान था, वहां गहरी ख़ामोशी थी, हर चीज़ सो रही थी, बेजान थी। ख़ामोशी और गर्मी से उसका सिर भनभना रहा था।

निकीता बगीचे में गया, मगर वहां पर भी ज़िन्दगी का नाम-निशान नहीं था। एक ऊंघती-सी मक्खी भनभना रही थी। धूलभरे पत्ते ऐसे निश्चल लटके हुए थे मानो टीन के बने हों। पंकिल तालाब में नाव निश्चल खड़ी थी और रूक पक्षियों ने इसके अगल-बग़ल सफ़ेद धब्बे डाल दिये थे।

निकीता वापिस घर जाकर एक छोटे-से सोफ़े पर लेट रहा जिसमें से चूहों की गंध आ रही थी। कमरे के बीचोंबीच खाने की मेज़ रखी थी जिस पर मेज़पोश नहीं था। इसकी बहुत-सी भद्दी और पतली-पतली टांगें थीं। इस मेज़ से ज़्यादा ऊब पैदा करनेवाली दुनिया में दूसरी कोई चीज नहीं थी। दूर, रसोईघर में बावर्चिन धीरे-धीरे गा रही थी। वह सम्भवतः ईंटों के चूरे से छुरियां साफ़ कर रही थी और भयानक ऊब के कारण धीमी आवाज़ में विलाप कर रही थी।

अचानक अधखुली खिड़की के दासे पर जेल्तूखिन दिखाई दी। गर्मी के कारण उसकी चोंच थोड़ी खुली हुई थी। थोड़ा दम लेने के बाद वह उड़कर निकीता के कंधे पर जा बैठी। उसने सिर घुमाकर निकीता की आंखों में झांका, फिर उसकी कनपटी पर चोंच मारी जहां उसका काला-सा और बाजरे जैसा नज़र आनेवाला जन्म-चिह्न था, उसे छुआ और फिर निकीता की आंखों में झांका।

"जाम्रो, मुझे परेशान नहीं करो," निकीता ने कहा। वह धीरे-से उठा ग्रौर उसने मैना की प्याली में पानी भर दिया।

जेल्तूख़िन ने जी भरकर पानी पिया, फिर वह प्याली में कूद गई ग्रौर पानी में डुबकी लगाई, प्याली के सारे पानी को उछाल-उछाल कर बाहर गिरा दिया ग्रौर फिर ऐसी जगह की तलाश करने लगी जहां बैठकर वह ग्रपने पंख संवार सकती। वह लकड़ी के बैरोमीटर की कार्निंस पर जा बैठी।

"वी विट," जेल्तूख़िन ने धीरे से कहा। "वी विट, ग्रां . . . धी!"

"क्या कहा तुमने?" बैरोमीटर के क़रीब जाकर निकीता ने पूछा।

कार्निस पर बैठी हुई जेल्तूख़िन ने सिर झुकाया, ग्रपने पंख नीचे किये, पक्षियों की भाषा में ग्रौर फिर रूसी में कुछ बुदबुदाई। तभी निकीता ने देखा कि बैरोमीटर की नीली सूई सुनहरी सूई से बहुत दूर हो गई है ग्रौर "मौसम की तब्दीली" तथा "ग्रांधी" के बीच हिलडुल रही है।

निकीता उंगलियों से शीशे पर ताल देने लगा। सूई "ग्रांधी" की ग्रोर कुछ ग्रौर खिसक गई। निकीता पुस्तकोंवाले कमरे की ग्रोर दौड़ गया जहां उसके पिता सो रहे थे। उसने दरवाज़े पर दस्तक दी। पिता ने उनींदी ग्रौर खरखरी सी ग्रावाज़ में पूछा –

"क्या है? क्या बात है?"

"पिता जी, चलकर बैरोमीटर को देखिये . . ."

"मुझे परेशान नहीं करो, निकीता, मुझे नींद ग्रा रही है।"

"मगर चलकर देखिये तो सही कि बैरोमीटर क्या ज़ाहिर कर रहा है . . ."

पुस्तकोंवाले कमरे में ख़ामोशी छाई रही। ज़ाहिर था कि पिता जी की नींद नहीं टूट पा रही थी। ग्राख़िर फ़र्श पर उनके नंगे पैरों की ग्राहट सुनाई दी, ताले की चाबी घूमी ग्रौर थोड़े से खुले हुए दरवाज़े में से पिता की ग्रस्त-व्यस्त दाढ़ी दिखाई दी।

"क्यों जगा है दिया तुमने मुझे? क्या बात है?"

"बैरोमीटर 'ग्रांधी' की ग्रोर संकेत कर रहा है।"

"ऐसे ही बना रहे हो," पिता घबराकर बुदबुदाये ग्रौर बैठक की ग्रोर भागे। वे फ़ौरन घर भर को सुनाते हुए चिल्लाये – "साशा, साशा! ग्रांधी! हुर्रा! हम मुसीबत से बच गये!"

उमस ग्रौर गर्मी ग्रौर बढ़ गई। पक्षियों ने चुप्पी साध ली, घबराई हुई बेजान सी मक्खियां खिड़कियों पर बैठने लगीं। सन्ध्या को नीचे जाता हुग्रा सूरज जलती धुंध में ग़ायब हो गया। बहुत तेज़ी से झुटपुटा छा गया। ग्रंधेरा ऐसा था कि हाथ को हाथ सुझाई न दे। एक भी सितारा नहीं झिलमिला रहा था। बैरोमीटर की सूई "ग्रांधी" पर पूरी तरह टिक गई। परिवार के सभी लोग चालीस पायोंवाली गोल मेज़ के गिर्द जमा हो गये। वे इस समय ग्रदृश्य बगीचे में खुलनेवाले छज्जे के खुले दरवाज़ों की ग्रोर देखते हुए खुसुर-फुसुर कर रहे थे।

तालाब किनारे के विल्लो वृक्षों की सरसराहट से यह मौत का सा सन्नाटा टूटा। इसके साथ ही रूक पक्षी डरकर शोर मचाते हुए उड़े। पिता ग्रंधकार की चादर में लिपटे हुए छज्जे

में बाहर चले गये। शोर अधिक ऊंचा और व्यापक हो गया। आख़िर हवा का एक तेज़ झोंका आया और छज्जे के क़रीब खड़े बबूल की शाखाएं ज़मीन चाटने लगीं। इसके साथ ही खेतों की गंध घर में फैल गई और मुरझाये हुए पत्ते अन्दर आ गिरे। धुंधले लैम्प की बत्ती फड़फड़ाई और चिमनियों तथा घर के कोनों में ग़ुस्से से पागल होती हुई तेज हवा हू-हू, शूं-शूं करने लगी। कहीं किसी खिड़की का दरवाज़ा भड़भड़ाया और शीशा टूटकर गिरा। अब सारा बगीचा शोर मचा रहा था। वृक्षों की अदृश्य चोटियां तेज़ हवा में झूल रही थीं और उनके तने चरचरा रहे थे। अस्त-व्यस्त बालों के साथ वासीली निकीत्येविच छज्जे से लौटे, उनका मुंह खुला हुआ था और आंखें फैली-फैली-सी थीं। आंखों को चौंधियाती हुई बिजली की नीली-सफ़ेद कौंध ने रात के अंधेरे को चीर डाला और घड़ी भर के लिये नीचे-नीचे और हवा के कारण झुके हुए वृक्ष काली परछाइयों से दिखाई दिये। फिर से अन्धेरा छा गया। सारा आकाश ही गरजता हुआ फट पड़ा। शोर के कारण किसी को भी यह नहीं सुनाई दिया कि कब शीशे पर बरसाती बूंदें गिरीं और नीचे को बह चलीं। मूसलाधार बारिश थी, धार बांधकर पानी बरसने लगा था। मां छज्जे के दरवाज़े पर खड़ी थी, उसकी आंखें छलछलाई हुई थीं। बैठक में सीलन, सड़े पत्तों, बरसात और घास की गंध भर गई।

पत्र आया

ऊतेव्का गांव के बाज़ार-चौक के डाकख़ाने के सामने निकीता काठी से नीचे उतरा। बाहर काले-सफ़ेद खम्भे के साथ उसने अपना घोड़ा बांधा।

खुले काउंटर के पीछे अस्त-व्यस्त बालों और फूले-फूले गालोंवाला पोस्टमास्टर बैठा हुआ मोमबत्ती पर मुहर लगानेवाली लाख पिघला रहा था। उसकी मेज़ पर लाख और स्याही के धब्बे लगे थे और तम्बाकू की राख बिखरी हुई थी। जब लिफ़ाफ़े पर पिघली हुई काफ़ी लाख इकट्ठी हो गई, तो उसने बालोंवाले हाथ में मुहर ली और इतने ज़ोर से उस पर दे मारी मानो पत्र भेजनेवाले की खोपड़ी कुचल देना चाहता हो। फिर उसने मेज़ की दराज़ में हाथ डाला, डाक-टिकट निकाला, अपनी लम्बी-सी ज़बान बाहर निकालकर उसे गीला किया, लिफ़ाफ़े पर चिपकाया, मुंह बनाकर थूका और इसके बाद चर्बी से ढकी हुई आंखें निकीता की ओर उठाईं।

पोस्टमास्टर का नाम था इवान इवानोविच लांदिशेव। उसे सभी अख़बार और सभी पत्रिकाएं पढ़ने की आदत थी। जब तक वह उन्हें शुरू से अन्त तक न पढ़ लेता उन्हें ग्राहकों को न भेजता। उसके ख़िलाफ़ कई बार समारा में शिकायत की गई, मगर उसने अपनी आदत न छोड़ी। हां, पहले से ज़्यादा बदमिज़ाज हो गया। साल में छः बार वह शराब के नशे में धुत्त होता और उस समय तो लोग डाकख़ाने में क़दम रखते हुए भी डरते। इन दिनों में पोस्टमास्टर खिड़की से अपना सिर बाहर निकालकर सारे चौक को सुनाकर चिल्लाता—

"तुम घुन बनकर मेरी आत्मा को खा गये हो, बेड़ा ग़र्क़ हो तुम्हारा!"

"पिता जी ने मुझे डाक लाने के लिये भेजा है," निकीता ने कहा।

पोस्टमास्टर ने उसे कोई जवाब नहीं दिया और फिर से लाख पिघलाने लगा। लाख की एक बूंद उसके हाथ पर गिर गई, वह चिल्लाकर उछला और फिर से बैठ गया।

"कौन है तुम्हारा बाप, मुझे क्या मालूम," पोस्टमास्टर ने झुंझलाकर कहा, "हर कोई यहां बाप है, सब बाप ही बाप हैं।"

"क्या कहा आपने?"

"यही कि तुम्हारे हज़ार बाप हैं।" पोस्टमास्टर ने तो मेज़ के नीचे थूका भी। "नाम बताओ, नाम। क्या नाम है तुम्हारे बाप का?" उसने लाख नीचे फेंक दी और जब निकीता ने उसके प्रश्न का उत्तर दिया तो दराज़ में से पत्रों का एक पुलिन्दा निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिया।

निकीता ने पत्र अपने थैले में रख लिये और डरते-सहमते हुए पूछा—

"पत्र-पत्रिकाएं नहीं हैं क्या?"

पोस्टमास्टर ने मुंह फुलाना शुरू किया। निकीता जवाब का इन्तज़ार न कर बाहर भाग गया।

डाकख़ाने के बाहर खम्भे से बंधा हुआ क्लोपिक पांव पटक रहा था और अपने ऊपर धावा बोलनेवाली मक्खियों से निजात पाने के लिये पूंछ हिला रहा था। सनीले बालोंवाले छोटे-छोटे दो लड़के, जिनके मुंह पर कोई लाल चीज़ लगी हुई थी, घोड़े को देख रहे थे।

"अपना रास्ता लो!" घोड़े पर सवार होते हुए निकीता ने चिल्लाकर कहा।

एक लड़का तो धूल पर बैठ गया, दूसरा मुड़ा और भाग गया। खिड़की के पीछे निकीता को पोस्टमास्टर की झलक मिली। वह फिर से लाख पिघलाने के काम में जुट गया था।

निकीता जब गांव से निकलकर पकी हुई फ़सलों के कारण गर्मायी और सुनहरी-पीली हुई स्तेपी में पहुंचा, तो उसने क्लोपिक को मनमानी चाल से चलने की छूट दे दी, अपना थैला खोला और पत्रों पर नज़र डाली।

हल्के जामुनी रंग के लिफ़ाफ़े में एक छोटा-सा पत्र था। उसपर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—"निकीता के लिये।" पत्र बेलबूटोंवाले कागज़ पर लिखा हुआ था। उत्तेजना से अपनी आंखें मिचमिचाते हुए निकीता ने पढ़ा—

"प्यारे निकीता,

मैं तुम्हें ज़रा भी नहीं भूली हूं। मैं तुमको बहुत प्यार करती हूं। आजकल हम देहाती बंगले में रह रहे हैं। बड़ा प्यारा-सा है यह बंगला। यह सच है कि वीक्तोर ने मेरा नाक में दम कर रखा है, मुझे चैन से नहीं जीने देता। वह मां के हाथों से बिल्कुल निकल गया है। तीन बार मशीन से सिर मुंडवा चुका है और उसका सारा बदन ख़राशों-ख़रोंचों से भरा रहता है। बगीचे में मैं अकेली ही सैर किया करती हूं। हमारे यहां झूला भी है और सेब भी, जो अभी तक पके नहीं। तुम्हें 'जादुई जंगल' कविता का ध्यान है? पतझर में हमारे पास समारा में आओ। तुम्हारी दी हुई अंगूठी मैंने अभी तक तो गुम नहीं की। अच्छा, नमस्ते।

लील्या।"

निकीता ने इस अद्भुत पत्र को कई बार पढ़ा। अचानक क्रिसमस की छुट्टियों के शानदार दिनों की याद ताज़ा हो उठी। मोमबत्तियां जल रही थीं। दीवारों पर परछाइयां नाच रही थीं, एक लड़की की दिल में उतरती नीली आंखों के ऊपर बड़ी-सी 'बो' नज़र आई, काग़ज़ी मालाएं सरसरा उठीं और पाले से जमी हुई खिड़कियां चांदनी में चमकने लगीं। बर्फ़ ढकी छतें, सफ़ेद वृक्ष और बर्फ़ीले मैदान पारदर्शी प्रकाश में नहाये हुए थे... लील्या फिर से लैम्प के नीचे गोल मेज़ पर बैठी थी, मुट्ठी पर सिर टिकाये... जादू, हां जादू था यह!..

निकीता रकाबों में खड़ा हुआ और उसने चाबुक सटकारा। कुछ ऐसे अचानक ही उसने यह किया कि क्लोपिक एक ओर को उछला और सरपट भाग चला। हवा उसके कानों में सीटियां बजाने लगी। चौड़ी स्तेपी के ऊपर, पकी हुई फ़सलों के ऊपर जो कहीं-कहीं से काटी जा चुकी थीं और नदी किनारे की खड़ी कच्ची चट्टानों के ऊपर बहुत ऊंचाई पर एक उक़ाब उड़ रहा था। घाटी की खारी झील के आसपास कुमष्टि पक्षी दर्दभरी तान अलाप रहे थे। "सरपट! सरपट! सरपट!" निकीता ने सोचा। उसका दिल ख़ुशी से बल्लियों उछल रहा था, ज़ोर से धड़क रहा था।

"शूं, शूं करो, हवा!.. उड़ो, उड़ो, उक़ाब!.. चीख़ो, चीख़ो, कुमष्टियो – मैं तुम से ज़्यादा ख़ुशक़िस्मत हूं। हवा और मैं, हवा और मैं..."

पेस्त्राव्का का मेला

वासीली निकीत्येविच और मां के बीच पिछले तीन दिनों से झगड़ा हो रहा था। पिता पेस्त्राव्का के मेले में जाना चाहते थे, मगर मां इसके एकदम ख़िलाफ़ थी।

"पेस्त्राव्का में आपके बिना भी काम चल जायेगा," मां ने कहा।

"अटपटी बात है," पिता ने दाढ़ी के बालों को मुट्ठी में लिया, उन्हें काटा और कंधे झटककर कहा, "बड़ी अटपटी बात है!"

"आप इसे अटपटी बात भी समझ सकते हैं, मेरे दोस्त।"

"मगर यह तो वास्तव में अजीब, बहुत ही अजीब बात है!"

"मैं फिर दोहराती हूं," मां ने कहा, "कि हमें और घोड़ों की ज़रूरत नहीं है। भगवान की दया से अस्तबल घुड़सवारी के घोड़ों से भरा पड़ा है!"

"आख़िर तुम यह बात समझती क्यों नहीं कि मैं उस निकम्मी ज़ारेम्का घोड़ी को बेचने के लिये वहां जा रहा हूं।"

"इसकी बिल्कुल ज़रूरत नहीं है। ज़ारेम्का बढ़िया घोड़ी है।"

"यह तुम मुझे समझा रही हो!" पिता ने टांगें फैला लीं और आंखें फाड़ फाड़ कर मां की ओर देखने लगे। "ज़ारेम्का काटती है और दुलत्ती चलाती है।"

"नहीं," मां ने दृढ़तापूर्वक कहा। "ज़ारेम्का न तो काटती है और न दुलत्ती चलाती है।"

"अगर यही बात है," पिता ने नम्रता से ज़रा सिर झुकाया, "तो मैं साफ़-साफ़ कह देना चाहता हूं कि या तो यह निकम्मी घोड़ी यहां रहेगी या मैं।"

आख़िर मां झुक गई। निकीता पहले से ही ऐसा जानता था। दोनों पक्षों ने थोड़ी-थोड़ी एक-दूसरे की बात मान ली और इस तरह झगड़े का अन्त और समझौता हो गया। यह तय हुआ कि घोड़ी बेच दी जाये और पिता ने वचन दिया कि वे मेले में "पानी की तरह पैसा नहीं बहायेंगे"।

इसलिये कि जेब का पैसा खर्च न हो, पिता जी ने एक जुगत निकाली। उन्होंने हवा में झड़ गये सेबों के दो छकड़े फुटकर बिक्री के लिये मेले में भेजने का फ़ैसला किया। निकीता ने मीश्का कोर्याशोनोक के साथ छकड़े पर मेले में जाने की अनुमति मांगी। उसे अनुमति मिल गई।

सुबह से ही तरह तरह की अड़चनें सामने आने लगीं। पता चला कि घोड़े तैयार नहीं किये गये थे और इसलिये मीश्का कोर्याशोनोक बग्घी के घोड़े पर सवार होकर घोड़ों के झुण्ड की ओर उड़ चला। घोड़ों का झुण्ड तालाब के परे ढालू ज़मीन पर चर रहा था और सुबह की धुंध में मुश्किल से ही नज़र आ रहा था। इसके बाद जब सफ़ेद टख़नोंवाली मुश्की घोड़ी ज़ारेम्का को अस्तबल से लाया गया और साईस उसे साफ़ करने और संवारने लगे तो उसने सेर्गेई इवानोविच को कंधे से पकड़ लिया और उसके कंधे में लगभग अपने दांत गड़ा दिये। पिता ने खिड़की से यह दृश्य देखा तो नाइट सूट पहने हुए ही अस्तबल की ओर भागे।

"तो यह सचमुच काटती है! क्या कहा था मैंने तुम लोगों से! बेड़ा ग़र्क़ हो तुम्हारा!"

ज़ारेम्का पीछे हटने और पिछली टांगों के बल बैठने लगी। वह सेर्गेई इवानोविच को जो उसे लगाम पहनाने की कोशिश कर रहा था, अपने साथ घसीट ले गई, हिनहिनाई, उसने लगाम तुड़ा ली, अपना सिर झटकते और ऐसे दुलत्ती चलाते हुए कि मिट्टी उड़ उड़कर दूर गिरने लगी, बग्घीख़ाने से भाग निकली और सरपट दौड़ती हुई झुण्ड में जा मिली। फिर एक और अड़चन सामने आई। पता चला कि अर्त्योम जिसे छकड़े लेकर जाना था, कहीं ग़ायब हो गया है। उसकी खोज की गई। पता चला कि पूरे कर न चुकाने के लिये उसे जेल में डाल दिया गया है। अर्त्योम पांच साल से पूरे कर नहीं चुका रहा था। इसलिये यह हुक्म जारी किया गया कि वह जहां भी मिले, उसे गिरफ़्तार कर जेल में बन्द कर दिया जाये। किसी के ज़मानत देने पर ही उसे रिहा किया जाये।

वासीली निकीत्येविच ने गांव के मुखिया के पास एक घुड़सवार सन्देशवाहक भेजा और इस तरह अर्त्योम की ज़मानत पर रिहाई हुई। वह बहुत ख़ुश-ख़ुश ठेले जोतने लगा। आख़िर ठेले तैयार हो गये और ज़ारेम्का को पिछले ठेले के साथ बांध दिया गया। निकीता और मीश्का कोर्याशोनोक सबसे आगे वाले ठेले पर बैठ गये। अर्त्योम ने लगाम झटकी और ठेले चल दिये... सेर्गेई इवानोविच ने अर्त्योम से मज़ाक़ किया। वह पहिये की ओर संकेत करते हुए चिल्लाया –

"धुरे की कील को तो देखो!" अर्त्योम फिर से नीचे उतरा, उसने पहिये पर नज़र
 डाली तो कील को ठीक-ठाक पाया। उसने सिर खुजलाया और झटका... आख़िर रवाना हुए।

सफ़र बहुत बढ़िया रहा। हल्की-हल्की हवा चल रही थी जिसमें नागदौने ग्रौर भूसे की गन्ध बसी हुई थी। वह खेतों के बीच खड़े बरडोक के पौधे के पत्तों से खिलवाड़ कर रही थी। समतल स्तेपी में जहां भी नज़र जाती थी भूसे की टालें दिखाई देती थीं। इन्हीं टालों के बीच से एक बाज़ उड़ा ग्रौर धीरे-धीरे ग्राकाश में ऊंचे चढ़ता गया। दूरी पर हलवाहों के खेत-कैम्प में खाना पकाया जा रहा था। वहां से नीला धुग्रां ऊपर उठ रहा था।

ये लोग खेत-कैम्प यानी पहियेदार घर के पास पहुंचे। ग्रर्त्योम ने घोड़े रोके। ग्रर्त्योम ग्रौर लड़के पीपे में से तालाब का पानी पीने के लिये गये जिसमें से पीपे की गंध ग्रा रही थी ग्रौर जो इन्फ़ुसोरिया (कीटाणुग्रों) से भरपूर था। हलवाहों के लिये खाना पका रहे बूढ़े ने ठेले की बग़ल में हाथ रखा ग्रौर ग्रपना नंगा सिर हिलाते हुए कहा –

"बिक्री के लिये सेब लिये जा रहे हैं?" निकीता ने उसकी ग्रोर एक सेब बढ़ाया। "नहीं, मेहरबानी है, दांत ही नहीं हैं।"

वे कैम्प से रवाना हुए तो उन्हें बैलों को हांकनेवाले चार हांकिये मिले। जुए में जुते ग्रौर हिलते-डुलते बैलों के पीछे ऊपर को उठे हुए फालों वाले हल थे जो गढ़ों में ग्रटक-ग्रटक जाते थे। हलों के पीछे ये हलवाहे जो पसीने से ग्रकड़ी गाढ़े की क़मीज़ें पहने थे। ये सभी लोग दलिया खाने जा रहे थे। ग्रर्त्योम फिर रुक गया ग्रौर देर तक खड़ा रहकर यह पूछताछ करता रहा कि पेस्त्राव्का गांव की ग्रोर जाने के लिये किस ग्रोर को मुड़े।

दोपहर होते-होते हवा ने ग्रपने पंख समेट लिये ग्रौर बहुत दूर, स्तेपियों के छोरों पर गर्मी की लहरें उठने लगीं। इस हिलती-डुलती नीली धुंध में से निकीता को कभी तो तैरता हुग्रा कोई घर नज़र ग्राता, कभी पृथ्वी पर लटका-सा वृक्ष दिखाई देता ग्रौर कभी मस्तूलों के बिना किसी जहाज़ की झलक मिलती। ठेले चलते जा रहे थे। टिड्डे ग्रपना राग ग्रलाप रहे थे। फिर घंटियों की लय-ताल में बंधी ग्रावाज़ स्तेपी में गूंज उठी। ज़ारेम्का विदक कर एक ग्रोर को हट गई ग्रौर फिर ज़ोर से हिनहिनाई। ग्रर्त्योम ने मुड़कर देखा ग्रौर ग्रांख झपकाकर बोला –

"मालिक ग्रा रहे हैं!"

कुछ ही क्षण बाद तीन घोड़ोंवाली बग्घी ठेलों के पास से गुज़री। ग्रागे-ग्रागे लार्ड बायरन था, सिर ऊपर को उठाये ग्रौर दुलकी चाल से दौड़ता हुग्रा। उसके पीछे ऊंचे पुट्ठोंवाले ग्रन्य दो घोड़े थे जो गुस्से से ज़मीन पर मुंह मारते हुए दौड़ रहे थे। बग्घी में पिता जी बैठे थे कूल्हों पर हाथ रखे ग्रौर कुहनियों को बाहर निकाले हुए। वे टसर की जाकेट पहने थे ग्रौर उनकी दाढ़ी हवा के साथ-साथ इधर-उधर उड़ रही थी। ख़ुशी से चमकती ग्रांखों से देखते हुए उन्होंने चिल्लाकर निकीता से पूछा –

"मेरे पास ग्राना चाहते हो?" ग्रौर तीन घोड़ों की बग्घी तेज़ी से ग्रागे निकल गई।

ग्राख़िर सफ़ेद गिरजे के दो गुम्बज, कुग्रों के ऊपर बांस, इक्के-दुक्के विल्लो वृक्षों की चोटियां, मकानों की छतें ग्रौर धुएं के टेढ़े-मेढ़े सांप धीरे-धीरे उभरने लगे। धूप में चमकते हुए पीले

पंकिल तटवाली नदी के आगे पेस्त्राव्का का सारा गांव दिखाई दिया। गांव से हटकर मैदानों में मेले के ख़ेमे थे और पशुओं के झुण्ड काले धब्बों से प्रतीत हो रहे थे।

घोड़ों ने दुलकी चाल से पानी की सतह को छूते हुए डांवांडोल पुल को पार किया, गिरजाघर के चौक में से गुज़रे जहां एक गुलाबी मकान की कोनेवाली खिड़की में एक मोटा-सा पादरी वायलिन बजा रहा था और फिर मैदान की ओर मुड़ गये जहां मेले के ख़ेमे खड़े थे। ठेला कुम्हारों के ख़ेमे के पास जाकर रुक गया।

निकीता ठेले में खड़ा हो गया और उसे यह दृश्य दिखाई दिया – छाती पर खुले हुए रुपहले बटनोंवाला नीला ख़फ़्तान पहने हुए एक जिप्सी, जिसकी काली दाढ़ी आंखों तक पहुंची हुई थी, एक बीमार घोड़े के दांतों को देख रहा था। घोड़े का मालिक, एक दुबला-पतला और नाटा देहाती आश्चर्य से जिप्सी को ताक रहा था। इसके बाद निकीता को दिखाई दिया एक चालाक बूढ़ा जो एक डरी-सहमी औरत को घास की पत्तियों के डिज़ाइन वाला मिट्टी का बर्तन ख़रीदने के लिये राज़ी कर रहा था। बूढ़ा बर्तन को नाख़ून से बजा रहा था। "मगर मुझे तो इस तरह के बर्तन की ज़रूरत ही नहीं है," औरत ने कहा। "तुम सारी दुनिया खोज आओ, प्यारी, तुम्हें ऐसा बर्तन नहीं मिलेगा।" नशे में धुत्त एक किसान अंडों से भरी हुई टोकरी के पास खड़ा हुआ गुस्से से चिल्ला रहा था – "तुम इन्हें अंडे कहते हो? ये अंडे हैं – बिल्कुल ज़रा-ज़रा से! हमारे कोल्दिबान गांव के अंडे, अंडे होते हैं। हमारे कोल्दिबान गांव की मुर्ग़ियां गले-गले तक अनाज में रहती हैं।" गुलाबी और पीले ब्लाउज़ पहने और शोख़ रंगों के रूमाल बांधे हुए लड़कियां मंडपों की ओर जा रही थीं जहां चीख़ते-चिल्लाते हुए विक्रेता अपने काउंटरों पर झुककर राहगीरों को कंधों से थामकर कहते थे – "इधर आइये, इधर आइये, सभी हम से माल ख़रीदते हैं!" मेले के वातावरण में गर्द-गुबार, चीख़-पुकार और घोड़ों की हिनहिनाहट बसी हुई थी। मिट्टी की सीटियां गूंज रही थीं। ठेलों के बम हर जगह ऊपर को उठे हुए दिखाई देते थे। नीली क़मीज़ पहने जो कंधे पर से फटी हुई थी, एक नौजवान लड़खड़ाता, दूसरों से टकराता और पूरा ज़ोर लगाकर अकार्डियन् बजाता हुआ गा रहा था – "हे दून्या, दून्या, दून्या..."

अर्त्योम ने घोड़े खोले और ठेले पर लदे हुए सेबों की रस्सियां अलग करनी शुरू कीं। इसी समय फ़ौजी क़मीज़ पहने और कंधे पर लगी पेटी के साथ तलवार लटकाये हुए एक व्यक्ति अर्त्योम के पास आया। इस व्यक्ति ने अर्त्योम की ओर देखा और अपना सिर हिलाया। अर्त्योम ने भी उसकी ओर देखा और अपनी टोपी उतार ली।

"आख़िर तुम मेरे हत्थे चढ़ ही गये, आवारा," इस मूंछोंवाले व्यक्ति ने कहा। "इस बार मैं तुम्हारा क़िस्सा निपटाकर ही रहूंगा।"

"जैसी आपकी मर्ज़ी," अर्त्योम ने जवाब दिया।

इस मूंछोंवाले व्यक्ति ने अर्त्योम का हाथ अपनी बग़ल में दवाया और उसे खींच ले चला। मिट्टी के बर्तन बेचनेवाले धूर्त्त बुड्ढे ने इन्हें जाते देखा तो मुस्करा दिया। मीश्का कोर्याशोनोक ने चिन्तित होते हुए फुसफुसाकर निकीता से कहा –

"भागकर जाओ, अपने पिता को ढूंढ़ो और उन्हें बताओ कि सिपाही अर्त्योम को पकड़ ले गया है। मैं ठेलों की देखभाल करूंगा।"

निकीता भीड़ को चीरता और कुचली हुई दूब के मैदान में से भागता हुआ घोड़ों के बाड़ों की ओर गया। वहां उसे दूर से ही पिता की बग्घी खड़ी नजर आई। पिता बहुत ही रंग में एक बाड़े के पास अपनी जाकेट की जेबों में हाथ डाले खड़े थे। निकीता ने उन्हें अर्त्योम के बारे में बताना शुरू किया, मगर पिता बीच में ही टोकते हुए बोले –

"उस नौउम्र कुम्मैत घोड़े को तो देखो। क्या ग़जब का घोड़ा है! वाह, वाह..."

बाड़े में तीन बश्कीरी, जो बदरंग रूईदार चोग़े और कनटोपे पहने थे, हाथों में फंदे लिये हुए एक चितकबरे घोड़े को पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। मगर घोड़ा कनौतियां बदलता, दांत दिखाता और चमकता-चौंकता हुआ फंदों से बच निकला। पहले तो वह घोड़ों के झुण्ड में जा घुसा और फिर खुले में आ गया। अचानक वह घुटनों के बल बैठा और रेंगकर बाड़े के बांसों के नीचे चला गया, उसने अपनी गर्दन से बांस ऊपर को किया, बाहर निकल गया और छलांगें लगाता घास वाले खुले मैदान में भाग चला। उसकी पूंछ और अयाल हवा में लहराने लगे। पिता आनन्द-विभोर होकर अपने पैर पटकने लगे।

टेढ़ी-मेढ़ी टांगोंवाले बश्कीरी लड़खड़ाते हुए अपने सवारी के घोड़ों की ओर भागे। ये घोड़े छोटे-छोटे और झबरीले थे। बश्कीरी फुर्ती से घोड़ों पर सवार हुए, दो तो विद्रोही का पीछा करने लगे और एक फंदा लिये हुए सामने की ओर से उसकी ओर बढ़ा। खुले मैदान में भागता हुआ सरकश घोड़ा दायें-बायें होने और इधर-उधर मुड़ने लगा। मगर हर बार ही उसने जानवरों की तरह चीख़ते-चिल्लाते हुए किसी न किसी बश्कीरी को अपने सामने पाया। घोड़ा झिझक कर रुका और उसी क्षण उसके गले में फंदा डाल दिया गया। उसने फंदे में से निकल जाने की कोशिश की, मगर बश्कीरियों ने उसके अगल-बग़ल तड़ातड़ चाबुक बरसाये और फंदे से उसका गला लगभग घोंट डाला। घोड़ा लड़खड़ा कर गिर गया। फेन उगलते और कांपते हुए घोड़े को बाड़े में वापिस लाया गया। झुर्रियोंदार चेहरेवाला एक बूढ़ा बश्कीरी एक बोरी की तरह धम से काठी से नीचे गिरा और वासीली निकीत्येविच के पास आकर बोला –

"हुज़ूर, यह घोड़ा ख़रीद लीजिये।"

पिता हंसकर दूसरे बाड़े की ओर चल दिये। निकीता ने फिर से अर्त्योम की चर्चा चलाई।

"बड़े दुख की बात है," पिता ने कहा, "मगर वैसे देखा जाये तो मैं इस उल्लू का करूं भी तो क्या? अच्छा सुनो, यह लो बीस कोपेक, जाकर एक नान और कुछ मछली ख़रीद लो। लौटकर ठेलों के पास मेरा इन्तज़ार करो... मैंने ज़ारेम्का मेदवेदेव को बेच दी है, सस्ते दामों, मगर बिना किसी परेशानी के। भाग जाओ। मैं जल्दी आ जाऊंगा।"

मगर यह "जल्दी" बहुत देर साबित हुई। स्तेपी के छोर पर बड़ा और पीला-नारंगी रंग का सूरज लटका हुआ था। मेले के मैदान के ऊपर सुनहरी धुंध छाई हुई थी। गिरजे में

संध्या की प्रार्थना की घंटियां बज रही थीं। इस वक़्त पिता की सूरत नज़र आई। उनके चेहरे पर परेशानी झलक रही थी।

"ऐसे संयोगवश ही मैंने कुछ ऊंट ख़रीद लिये हैं, बहुत ही सस्ते दामों," निकीता से आंखें न मिलाते हुए उन्होंने कहा... "उन्होंने घोड़ी ले जाने के लिये अभी तक आदमी नहीं भेजा? बड़ी अजीब बात है। सेब काफ़ी बेच दिये हैं क्या? सिर्फ़ पैंसठ कोपेक के? बड़ी अजीब बात है। पर ख़ैर, भाड़ में जायें ये सेब। मैंने मेदवेदेव से कह दिया था कि मैं घोड़ी के साथ उसे सेब भी दे दूंगा... चलो, चलकर अर्त्योम को छुड़ा लायें।"

वासीली निकीत्येविच ने निकीता के कंधे पर हाथ रखा और वे शान्त हो चले मेले के मैदान को ठेलों के बीच से गुज़रते हुए लांघने लगे। ठेलों से सूखी घास, राल और अनाज की गंध आ रही थी। जहां-तहां उन्हें ऊंची आवाज़ों में गीत गूंजते सुनाई दिये जो हवा में तैरते हुए स्तेपियों में जाकर खो जाते थे। कहीं एक घोड़ा हिनहिनाया।

"जानते हो," पिता रुके और उनकी आंखों में शरारत की चमक झलक उठी। "घर पहुंचने पर मेरी शामत आयेगी। पर ख़ैर, कोई बात नहीं। कल हम चितकबरे घोड़ों की तिकड़ी देखने चलेंगे... जहां सत्यानास, वहां सवा सत्यानास..."

ठेले पर

उस शाम को निकीता सोंधी-सोंधी महकवाले भूसे से लदे ठेले पर खलियान से लौटा। जैसा कि पतझर में हमेशा होता है, उदासी भरे और नारंगी रंग के डूबते हुए सूरज की तंग-सी पट्टी स्तेपी के ऊपर, सदियों पहले इधर से गुज़रे ख़ानाबदोश क़बीलों द्वारा छोड़े गये स्मारकों यानी प्राचीन क़ब्रों के टीलों के ऊपर ग़ायब होती जा रही थी।

झुटपुटे में फ़सलें कटने के बाद सूने हुए खेतों में हल-रेखाएं नज़र आ रही थीं। जहां-तहां अंधेरे में हलवाहों के खेत-कैम्प की आग और कैम्प के ऊपर बल खाता हुआ कड़वा धुआं लहराता दिखाई दे रहा था। ठेला चूं-चर्र कर रहा था, हिचकोले खा रहा था। निकीता आंखें मूंदे हुए चित लेटा था। उसे अपने सारे शरीर में सुखद-सी थकान अनुभव हो रही थी। ऊंघते-ऊंघते उसे दिन भर की घटनाएं याद हो आईं।

...गाहनी के सिरे पर जुती हुई जानदार घोड़ियों की चार जोड़ियां लगातार चक्कर लगाती जाती थीं। मध्य में लट्ठे पर बनी हुई छोटी-सी सीट पर मीश्का कोर्याशोनोक बैठा था जो लगातार चिल्लाता और चाबुक सटकारता जाता था।

एक अन्तहीन पट्टा मकान जितनी बड़ी और लाल रंग की गाहनेवाली मशीन के पहिये को लगातार घुमा रहा था। इस मशीन के दोनों ओर भूसा और दाने अलग करनेवाले भाग ज़ोर से हिल रहे थे। इस गाहनी का ड्रम कभी ऊंची और कभी नीची आवाज़ निकाल रहा था जो सारी स्तेपी में गूंज रही थी। वह मशीन में डाली जानेवाली फ़सलों की पूलियों को हड़पता

जाता था, मशीन के गर्द-गुबार भरे पेट में भूसा और अनाज धकेलता जाता था। वासीली निकोत्येविच ख़ुद ही मशीन में पूलियां डाल रहे थे। वे आंखों पर टिका रहनेवाला काला चश्मा लगाये थे और कुहनियों तक पहुंचनेवाले चमड़े के दस्ताने पहने थे। उनकी क़मीज़ पसीने के कारण पीठ से चिपकी हुई थी, वे धूल से अटे पड़े थे, उनकी दाढ़ी भूसे से ढकी हुई थी और चेहरा स्याह हुआ पड़ा था। चूं-चर्र करते हुए ठेले और पूलियां लाते जा रहे थे। एक छोकरा टांगें चौड़ी करके उस तख़्ते के पीछे भागता जो मशीन से भूसा बाहर ला रहा था। वह भूसे को बाहों में भर लेता, भागकर तख़्ते पर चढ़ता और भूसे को टाल पर डाल देता। बुज़ुर्ग किसान लकड़ी के लम्बे-लम्बे कांटों से टाल पर भूसे को ढंग से जमाते। वर्षभर की चिन्ताओं, श्रम और परेशानियों का अन्त हो गया था। दिन भर गानों और हंसी-मज़ाक़ का बाज़ार गर्म रहा था। अर्त्योम गाहनी में डालने के लिये लायी जा रही पूलियों को ठेलों से नीचे उतार रहा था। लड़कियों ने उसे ठेलों के बीच ही पकड़ लिया और उसे गुदगुदाया जिससे वह बहुत घबराता था। उन्होंने उसे भूसे में इधर-उधर लोटाया-पोटाया और उसके कपड़ों के अन्दर भूसा भर दिया था। बहुत मज़ा आया था इसमें!..

...निकीता ने आंखें खोलीं। ठेला दायें-बायें धचके खाता हुआ चर्र-मर्र कर रहा था। स्तेपी में घुप अंधेरा छा चुका था। सारे आकाश में अगस्त महीने के सितारे झिलमिला रहे थे। आकाश का तलहीन खड्ड ऐसे धड़क रहा था मानो सितारों की धूल के ऊपर से हवा का झोंका गुज़र गया हो। अन्धकारपूर्ण आकाश में नभ-गंगा चमक रही थी। निकीता के लिये ठेला एक झूले के समान था जिसमें वह शान्ति से दूर के संसारों को ताकता हुआ मिनारों की छाया में तैर-सा रहा था।

"यह सब कुछ मेरा है," उसने सोचा। "किसी दिन मैं पंखोंवाले जहाज़ में बैठकर बहुत दूर की दुनिया में उड़ जाऊंगा..." वह चमगादड़ के समान पंखों वाले जहाज़, आकाश के अन्धकारमय शून्य और निकट आते हुए नक्षत्र के नीले तटों, रजत पर्वतों, जादुई झीलों, क़िलों और बादलों की काली परछाइयों की कल्पना करने लगा, जो सूर्यास्त के समय पानी की सतह पर तैरा करती हैं।

ठेला पहाड़ी से नीचे उतरने लगा। दूरी पर कुत्ते भूंक रहे थे। तालाबों की ओर से सीली-सीली सांस की अनुभूति हुई। वे अहाते में पहुंचे। घर की खिड़कियों में से, खाने के कमरे में से प्यारी-प्यारी तन सहलानेवाली रोशनी छन रही थी।

समारा में

पतझर आ गई और धरती आराम की तैयारी करने लगी। सूरज देर से निकला, गर्मी के बिना और बूढ़ा-सा जिसे अब धरती से कोई सरोकार नहीं था। पक्षी दूर उड़ गये। बगीचा सूना-सूना हो गया, पत्ते झड़ गये। नाव को तालाब से बाहर निकाल लिया गया और उलटाकर छानी में रख दिया गया।

जिन जगहों पर छतों की छाया पड़ती थी, वहां अब सुबह के समय पाले के कारण घास सफ़ेद नज़र आती। पाले से ढकी पतझर की हरी घास के बीच से गुज़रते हुए हंस तालाब की ओर जाते। हंस मोटे थे और बर्फ़ के गोलों की भांति लुढ़कते हुए से प्रतीत होते। गांव की बारह लड़कियां नौकरों के क्वार्टरों के पास एक बहुत बड़ी देग में पत्तागोभी काट रही थीं। अहाते भर में उनके गीतों और उनकी छुरियों की आवाज़ गूंज रही थी। दुन्याशा पत्तागोभी के डंठल चबाने के लिए उस तहखाने से भागती हुई आई जहां मक्खन बनाया जा रहा था। पतझर के दौरान उसका रूप और भी निखर आया था, उसके गाल गुलाब जैसे लाल हो गये थे। किसी को भी यह समझने में देर न लगी कि वह क्यों नौकरों के क्वार्टरों की ओर भागी जा रही थी। वह वहां पत्तागोभी के डंठल चबाने या लड़कियों से हंसी-मज़ाक़ करने नहीं, बल्कि इसलिये जा रही थी कि जवान मज़दूर वासीली उसे खिड़की से देख सके। वह भी दुन्याशा के समान ही था, गोरा-गोरा, लाल-लाल। अर्त्योम का तो बिल्कुल ही दिल टूट गया था – वह क्वार्टर में बैठा हुआ घोड़े के अंसबंध की मरम्मत कर रहा था।

मां मकान के जाड़ेवाले भाग में आ चुकी थी। अंगीठियां गर्मायी जाने लगी थीं। साही अख़ील्का अलमारी के नीचे काग़ज़ और चिथड़े घसीट-घसीट कर ले जाती थी और जाड़े भर सोये रहने के लिये अपना घर बनाने के उद्देश्य से दौड़-धूप करती रहती थी। अर्कादी इवानोविच अपने कमरे में सीटी बजा रहे थे। निकीता ने थोड़े से खुले हुए दरवाज़े में से झांककर देखा – अर्कादी इवानोविच शीशे के सामने खड़े थे, अपनी दाढ़ी का सिरा हाथ में थामे हुए। वे गहरी सोच में डूबे हुए सीटी बजा रहे थे। ज़ाहिर था कि वे अपनी शादी के बारे में सोच रहे थे।

वासीली निकीत्येविच ने अनाज से भरे हुए ठेले समारा भेज दिये थे और अगले दिन ख़ुद भी वहां चले गये थे। जाने के पहले मां के साथ उनकी काफ़ी लम्बी-चौड़ी बातचीत हुई थी। मां उनके पत्र की प्रतीक्षा में थी।

एक सप्ताह बाद वासीली निकीत्येविच का यह पत्र मिला –

"मैंने अनाज बेच दिया है और ज़रा कल्पना करो, सो भी अच्छे दामों पर, मेदवेदेव की तुलना में महंगा। जैसी कि हमें आशा करनी चाहिये थी, उत्तराधिकार का मुक़दमा जहां का तहां ही है। इसलिये हमारे दूसरे निर्णय को, जिसका तुमने कड़ा विरोध किया था, अमली शक्ल देना लाज़िमी हो गया है। हमें एक और जाड़े भर फिर एक-दूसरे से अलग नहीं रहना चाहिये। मैं तो यही सलाह देता हूं कि जितनी भी ज़ल्दी हो सके वहां से रवाना हो जाओ, क्योंकि हाई स्कूल की पढ़ाई तो शुरू भी हो चुकी है। यह तो अपवाद ही समझो कि निकीता को दूसरी कक्षा की प्रवेश-परीक्षा देने की अनुमति मिल जायेगी। हां, संयोगवश मैं यह भी बता देना चाहता हूं कि कोई व्यक्ति बहुत ही बढ़िया चीनी फूलदानों की एक जोड़ी मुझे बेचना चाहता है। हमारे शहरी घर के लिये वे बहुत ठीक रहेंगे। कहीं तुम न बिगड़ उठो, सिर्फ़ इसी ख़्याल से मैंने इन्हें फ़िलहाल नहीं ख़रीदा है।"

मां ने सोच-विचार में बहुत समय नहीं गंवाया। दो बातों ने मां को तीन ही दिनों में तैयारी करने को मजबूर कर दिया। एक तो इस बात ने कि वासीली निकोल्येविच के हाथ में बहुत-सा पैसा था और दूसरे, विशेषतः इस डर ने कि वे चीनी फूलदान ख़रीद लेंगे, जो एकदम बेकार की चीज होंगे। उसने नगर में काम आ सकनेवाला फ़र्नीचर, बड़े-बड़े ट्रंक, अचारों के पीपे और मुर्ग़ियां आदि ठेलों पर लदवाकर भेज दीं। वह ख़ुद भी निकीता, अर्कादी इवानोविच और बावर्चिन वसिलीसा के साथ तीन घोड़ोंवाली दो बग्घियों में रवाना हो गई। दिन बड़ा उदासीभरा था, तेज हवा चल रही थी। सड़क के दोनों ओर के खेतों में से फ़सलें काटी जा चुकी थीं, हल चला दिये गये थे और अब वे ख़ाली-ख़ाली-से पड़े थे। मां को घोड़ों पर दया आ गई थी और इसलिये उन्हें हल्की दुल्की चाल से चलाया जा रहा था। कोल्दिबान की सराय में रात बिताई गई। अगले दिन दोपहर के खाने के समय समतल स्तेपी के छोर पर गिरजाघरों के गुम्बज, और भाप की आटा चक्कियों की चिमनियां नजर आईं। मां गुमसुम थी – उसे न तो नगर अच्छे लगते थे और न ही नगर का जीवन। अर्कादी इवानोविच बेचैनी के कारण अपनी दाढ़ी चबा रहे थे। काफ़ी देर तक वे साबुन बनाने के बदबूदार कारख़ानों के पास से गुजरते रहे, लकड़ी की टालों के पास से गुजरे और फिर एक गन्दी बस्ती में से होकर निकले जहां बहुत-से शराबख़ाने और परचूनी की दूकानें थीं। फिर बग्घियों ने वह चौड़ा-सा पुल पार किया जहां रात के समय इर्दगिर्द की बस्तियों के लफ़ंगे-बदमाश लड़के राहगीरों को लूट लेते थे। इसके बाद समारका नदी के खड़े तट पर भट्टी-सी खत्तियों की क़तार नजर आई। थके-हारे घोड़े जोर लगाकर पहाड़ी पर चढ़े और खड़ंजोंवाली सड़क पर बग्घी के पहिये खड़खड़ा उठे। लक़-दक़ राहगीरों ने कीचड़ से लथपथ बग्घियों को आश्चर्य से देखा। निकीता को अनुभव हुआ कि दोनों बग्घियां बड़ी अटपटी और ऐसी हैं कि देखकर हंसी आये, कि घोड़े किसी देहाती के टट्टुओं जैसे हैं। काश कि वे मुख्य सड़क से बग्घियां हटा लें! एक चमकती-दमकती बग्घी पास से गुज़री जिस में बढ़िया दुलकी चालवाला मुश्की घोड़ा जुता हुआ था।

"सेर्गेई इवानोविच, आप घोड़ों को ऐसे धीरे-धीरे क्यों हांक रहे हैं? जरा तेज चलाइये न?" निकीता ने कहा।

"ऐसे भी पहुंच ही जायेंगे।"

सेर्गेई इवानोविच धीर-गम्भीर-सा अपनी सीट पर बैठा था, अपने तीनों घोड़ों को दुलकी चाल से दौड़ाता जा रहा था। आख़िर वे बग़लवाली एक गली में मुड़े, आग-बुझाऊ स्टेशन के पास से गुजरे जिसके फाटक पर यूनानी टोप पहने एक गलफुल्ला नौजवान खड़ा था। एकमंजिला सफ़ेद मकान के सामने जाकर बग्घियां रुक गईं। इस मकान की सारी ड्योढ़ी के सामने लोहे का जंगला लगा हुआ था। खिड़की में से वासीली निकोल्येविच का खिला हुआ चेहरा दिखाई दिया। उन्होंने हाथ हिलाकर स्वागत किया, खिड़की से पीछे हटे और घड़ीभर बाद ख़ुद आकर सामने का दरवाजा खोला।

निकीता ही भागकर सब से पहले घर में गया। सफ़ेद दीवारी काग़ज़वाली छोटी-सी बैठक बहुत रोशन थी। पालिश करके चमकाये गये फ़र्श पर दीवार के पास दो चीनी फूलदान रखे थे जो पानी रखने की सुराहियों जैसे लगते थे। बैठक के सिरे पर सफ़ेद स्तम्भोंवाली एक मेहराब थी। फ़र्श पर स्तम्भों की छाया पड़ रही थी। इसी मेहराब के नीचे बादामी पोशाक में एक लड़की दिखाई दी। वह सफ़ेद पेशबन्द के नीचे अपने हाथ बांधे थी और पालिश किये फ़र्श पर उसके बादामी जूते भी प्रतिबिम्बित हो रहे थे। वह बालों की एक चोटी गूंथे थी और उसके कानों के पीछे, गुद्दी के पास एक सफ़ेद 'बो' बंधी थी। उसकी नीली आंखों में गुस्से की झलक थी, वह तो लगभग त्योरी चढ़ाये हुए थी। यह लील्या थी। निकीता कमरे के बीचोंबीच ऐसे खड़ा था मानो उसके पैर फ़र्श पर चिपककर रह गये हों। लील्या उसी भांति निकीता की ओर देख रही थी जैसे मुख्य सड़क पर राहगीर सोस्नोव्का गांव से आनेवाली बग्घियों को देखते थे।

"तुम्हें मेरा ख़त मिला था?" लील्या ने पूछा। निकीता ने हामी भरी। "कहां है वह? इसी क्षण मुझे लौटा दो।"

यद्यपि ख़त निकीता की जेब में नहीं था, तथापि उसने अपनी जेबें टटोलनी शुरू कर दीं। लील्या बहुत ध्यान से और गुस्से के साथ निकीता की आंखों में आंखें डालकर देखती रही।

"मैं जवाब देना चाहता था, मगर..." निकीता बुदबुदाया।

"कहां है ख़त?"

"मेरे सूटकेस में।"

"अगर आज ही नहीं लौटा दोगे, तो हमारे बीच सब कुछ ख़त्म समझना... मुझे बहुत अफ़सोस है कि मैंने तुम्हें ख़त लिखा... मैं अब हाई स्कूल की पहली कक्षा में पढ़ती हूं।"

लील्या ने होंठ भींच लिये और पंजों के बल खड़ी हो गई। केवल इसी समय निकीता को याद आया कि उसने लील्या के ख़त का जवाब नहीं दिया था। उसने गले की फांस निगली, शीशे की तरह चमकते हुए फ़र्श पर रगड़ के साथ पांव बढ़ाया... लील्या ने झटपट पेशबन्द के नीचे फिर से अपने हाथ छिपा लिये। उसकी नाक का सिरा ऊपर को उठ गया। लम्बी-लम्बी बरौनियों से आंखों को पूरी तरह ढककर उसने अपनी घृणा व्यक्त की।

"मुझे माफ़ कर दो," निकीता ने कहा। "मुझे बेहद, बेहद... मैं घोड़ों, फ़सलों, कण्डनी, मीश्का कोर्याशोनोक में ही उलझा रहा..." शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया और उसने सिर झुका लिया।

लील्या ने कोई जवाब नहीं दिया। निकीता को अपने से ऐसी ही घिन्न हुई जैसी उसे गोबर से होती थी। मगर इसी समय ड्योढ़ी में आन्ना अपोल्लोसोव्ना की आवाज़ गूंज उठी। अभिवादन किया गया और सामान लाते हुए कोचवानों के भारी क़दमों की आवाज़ सुनाई दी। लील्या जल्दी-जल्दी और गुस्से से फुसफुसाई –

"हम पर नज़र पड़ सकती है... तुम तो बस हद ही हो... ज़रा अपने चेहरे पर मुस्कान लाओ... शायद इस बार तो मैं तुम्हें माफ़ कर दूंगी..."


МѢЛОЧНАЯ ТОРГОВЛЯ

वह ड्योढ़ी की ओर भाग गई। ख़ाली कमरों में उसकी पतली-सी आवाज़ गूंज उठी –

"नमस्ते, मौसी साशा। आप समारा में आ गईं, स्वागत आपका!"

नई ज़िन्दगी का पहला दिन इस तरह से शुरू हुआ। गांव का वह शान्त, सुख-चैन का और खुला-खुला वातावरण यहां नहीं था। यहां तो छोटे-छोटे और उदास-उदास सात कमरे थे। खिड़की के बाहर खड़ंजों पर भारी-भारी ठेलों की खड़खड़ाहट सुनाई देती थी और पेस्त्राव्का के हल्क़े के डाक्टर वेरिनोसोव की भांति कपड़े पहने हुए परेशान से लोग इधर-उधर भागते-से नज़र आ रहे थे। वे कोट के कालरों की ओट करके काग़ज़ और धूल-मिट्टी उड़ाकर लानेवाली हवा से अपने चेहरों को बचा रहे थे। सभी जगह रेल-पेल थी, शोर-शरावा था और परेशान करनेवाली बातचीत सुनाई दे रही थी। यहां तो वक़्त भी दूसरे ही ढंग से गुज़रता था, पंख लगाकर उड़ता था। निकीता और अर्कादी इवानोविच ने मिलकर निकीता का कमरा ठीक-ठाक किया – उसमें फ़र्नीचर जमाया, किताबें लगाईं और परदे टांगे। दिन ढले वीक्तोर सीधे हाई स्कूल से घर आया और उसने निकीता को बताया कि पांचवीं कक्षा के बालक पाख़ानों में छिप कर सिगरेटें पीते हैं और यह कि उनके हिसाब के अध्यापक की कुर्सी पर गोंद लगाकर उसे वहीं चिपका दिया गया था। वीक्तोर आज़ाद था और बेध्यान रहता था। उसने निकीता से बारह फलों वाला चाक़ू मांग लिया और निकीता को यह कहकर "तुम उसे नहीं जानते", अपने एक दोस्त के पास खेलने चला गया।

झुटपुटा हो चुका था और निकीता खिड़की में बैठा था। सूर्यास्त का दृश्य नगर में भी गांव जैसा ही था। मगर जाली के पीछे बैठी हुई जेल्तूख़िन मैना की भांति, बिल्कुल जेल्तूख़िन की तरह ही निकीता अपने को बन्दी और बिल्कुल अजनबी अनुभव कर रहा था। अर्कादी इवानोविच टोप और कोट पहने हुए कमरे में आये। वह अपने हाथ में साफ़-सुथरा रूमाल लिये थे जिस में से यूडीक्लोन की ख़ुशबू आ रही थी।

"मैं बाहर जा रहा हूं, कोई नौ बजे तक लौटूंगा।"

"आप कहां जा रहे हैं?"

"वहां, जहां मैं इस समय नहीं हूं।" वे ठठाकर हंस दिये। "कहो भाई, लील्या तुम्हारे साथ कैसे पेश आई? कुछ गर्मी से न? ख़ैर, कोई बात नहीं, कुछ ग़म न करो! कभी-कभी यह अच्छा ही होता है कि कुछ देहाती चर्बी कम हो जाये..."

अर्कादी इवानोविच एड़ियों पर घूमे और बाहर चले गये। एक ही दिन में इस व्यक्ति का कायाकल्प हो गया था।

इसी रात निकीता ने सपने में देखा कि वह चांदी के बटनोंवाली नीली वर्दी पहने लील्या के सामने खड़ा है और कड़ाई से कह रहा है –

"लो, यह रहा तुम्हारा ख़त।"

इन शब्दों के साथ उसकी आंख लगभग खुल गई, मगर फिर उसने अपने आपको शीशे जैसे फ़र्श पर चलते और यह कहते देखा –

"लो, यह रहा तुम्हारा ख़त।"

लील्या की लम्बी-लम्बी बरौनियां उठीं और गिरीं, उसकी स्वाभिमानी नाक से गर्व और परायेपन की झलक मिली। पर क्षण भर में उसकी नाक और पूरे चेहरे से ऐसा भाव ग़ायब हो जायेगा और वह हंसने लगेगी...

निकीता की आंख खुल गई और उसने कमरे में नज़र घुमाई। दीवार पर सड़क के लैम्प की अजीब-सी रोशनी पड़ रही थी... निकीता ने फिर से वही सपना देखा। जागते हुए उसने इस अनबूझ लड़की को कभी इतना प्यार नहीं किया था...

अगली सुबह को मां, निकीता और अर्कादी इवानोविच हाई स्कूल में गये और उन्होंने हेड मास्टर से बातचीत की। दुबला-पतला, पके बाल और रोबीला चेहरा, ऐसे थे यह हेड मास्टर। एक सप्ताह बाद निकीता ने परीक्षाएं पास कर लीं और दूसरी कक्षा में पढ़ने लगा।